Barcode : 99999990170246
Title -
Author -
Language - hindi
Pages - 218
Publication Year - 1911
Barcode EAN.UCC-13
9 999999 017024

भारत कष्टनिवारक महौषधि।

जिस को देशहितार्थ

पं० रामरत्नपाल शर्म्मा नजफगढ़ ज़िला देहली निवासी ने

स्वरचित उर्दू पुस्तक

नुसख़ये दाफ़ै मसायबे हिन्द को

सम्वर्द्धित व अनुवादित कर प्रकाशित किया।

कुंवर हनुमन्त सिंह रघुवंशी ने ग्रन्थकार के निमित्त

अपने राजपूत एंग्लो-ओरियण्टल प्रेस आगरा में

मुद्रित किया।

सम्वत् १९६८ वि०

* भूमिका *

परमात्मा के कोटिशः धन्यवाद के पश्चात निवेदन है कि सम्वत् १९४६ से गोधर्म्म प्रकाश पत्र फर्रुखाबाद और गो-सेवक पत्र श्री काशी जी और गोरक्षा पत्र नागपुर के अवलोकन से मेरे हृदय में गोप्रेम ने दृढ़ स्थान बना मुझे उद्यत किया कि इस तुच्छ शरीर को जहां तक हो सके गोसेवा में लगा कृतार्थ होना चाहिये। उस समय मैं नहरगंग डिवीजन नरौरा स्थान रामघाट में सब-ओवरसियर था। वहां लोगों को उत्साह दिला मुक़ाम रामघाट ज़िला बुलंदशहर तथा सिकन्दरपुर ज़िला अलीगढ़ में गोशालाएं स्थापित कर एक उपदेशक नियत किया जिस ने ज़िला अलीगढ़ व बुलंदशहर व बदायूं में भ्रमण कर लगभग सौ से ऊपर ग्रामों के निवासियों के हृदय में गोप्रेम उत्पन्न करा गौओं का कसाइयों के हाथ विक्रय करना बंद करा दिया। पश्चात् जब मैं सम्वत १९४७ में अपने जन्मस्थान क़सबा नजफ़गढ़ ज़िला देहली में आया तो यहां के निवासियों के हृदय में भी गोसेवा की आवश्यकता उत्पन्न कर यहां एक गोशाला स्थापित की, जिस से यहां के निवासियों के हृदय में ऐसा प्रेम उत्पन्न हुआ कि बहुत शीघ्र तीन चार सहस्त्र रुपये लगा गोशाला का स्थान पक्का बनवा दिया। उस समय से मेरे चित्त में गोप्रेम का अंकुर प्रति दिन बढ़ता ही रहा। जिस के प्रभाव से इच्छा हुई कि एक ऐसी पुस्तक गोरक्षा विषय की निर्मित की जावे कि जिस को हिन्दुओं के अतिरिक्त अन्य मतावलम्बी भी स्वीकार करें, किन्तु पराधीनता के कारण इतना अवकाश

नहीं मिला कि जो अपनी इच्छा को पूर्ण करता। अन्त को जब मैं ने सम्वत् १९६३ में पैन्शन प्राप्त की और अपनी जन्म-भूमि नजफ़गढ़ में आया तो यहां गोशाला का प्रबन्ध ख़राब देख इस को अपने हाथ में लिया और साथ ही अपने पूर्वोक्त प्रण को स्मरण कर निश्चय किया कि पंजाब प्रदेश से देव-नागरी भाषा तो विदा हो चुकी है यहां अधिकतर उर्दू का ही रिवाज है अतएव यहां के निवासियों के हितार्थ उर्दू में गोरक्षा की एक पुस्तक बनाई। जिस का नाम समयानुसार (नुसख़े दाफ़े मसाइबे हिन्द) अर्थात् भारत-कष्ट-निवारक-महौषधि रक्खा। इस पुस्तक के विषय की गम्भीरता ने ध-र्मात्मा भारतप्रेमियों के हृदय में इतना स्थान दिया कि एक हज़ार प्रति हाथों हाथ उठ गईं। पांच सौ पुस्तकें तो केवल परम गोभक्त बाबा भगवान दास जी महाराज उदासीन साधु बिधौची कलां रियासत पटियाला ने गोरक्षा-प्रचारार्थ मंग-वाईं। इसी प्रकार अनेक स्थानों से नागरी भाषा की भी पुस्तकों की मांग आनी प्रारम्भ हुई। इस कारण हिन्दी भाषा में भी इस का अनुवाद कर के प्रकाशित किया जाता है। किन्तु खेद के साथ लिखा जाता है कि इस धाम्मिक पुस्तक के परमोपयोगी होते हुए भी बहुधा मनुष्यों को इस के विषय रोचक मालूम नहीं होते। सामर्थ्य होते हुए बहुत थोड़ा मूल्य रखने पर भी लेने की श्रद्धा नहीं होती। श्रद्धा क्यों हो कलि-महाराज का प्रभाव है। यदि नौविल या क़िस्से कहानी ग़ज़ल आदि की पुस्तकें हों तो वे हाथों हाथ उठ जाती हैं परन्तु धाम्मिक विषय में यह मालूम करके कि इस में गौ के उपयोगी होने का विषय है हाथ में ले कर लौटा देते हैं कि हां ठीक है। यह तो हम खूब जानते हैं। यदि अधिक

किया तो एक बार पढ़ कर लौटा देते हैं या रद्दियों में डाल देते हैं। यदि विचार पूर्वक देखा जावे तो यह पुस्तक पूजा करने के स्थान पर रख नित्यप्रति मनन करने योग्य है। बुद्धिमानों के निकट इस का पाठ गीता आदि के पाठ से किसी अंश में कम नहीं वरन अधिक है क्योंकि इस में सांसारिक और पारलौकिक दोनों लाभ हैं। परोपकार तो इस से अधिक किसी भी कर्त्तव्य कर्म में नहीं हो सकता। गोसेवा स्वयं श्रीकृष्ण जी महाराज ने कर इस को सर्व धर्मोपरि सिद्ध कर दिया है। श्री वेदव्यास जी महाराज ने भी अपने रचे हुए गवाष्टक में यह श्लोक लिख इस को समस्त देवों का पूज्य कर दिया है—यथा:—

श्लोक—या ब्रह्म विष्णु गिरिजापति लोकपालै-र्द्विवेन्द्र पावक यमानिलवित्तपालैः। मन्वादिभिर्नरवरैरपि पूज्यपादा-सा गौर्द्विजैर्नरवरैः परिपालनीया।

अर्थात् जिस गौ के चरणारविंद ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेशादि पंच लोकपाल, इंद्र, अग्नि, यमराज, वायु, कुवेर आदिक देवताओं से और मनु आदि राजाओं और महर्षियों से पूजित हैं उस की ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य और अन्य सत्पुरुषों को रक्षा एवम् सेवा करनी उचित है। अब आप ही कहिये कि इस से अधिक क्या महात्म होगा?

इस से हे प्रियवर बान्धवो! इस पुस्तक की एक २ प्रति अवश्यमेव ख़रीद अपने प्रिय पुत्रों अथवा पुत्रियों को अक्षराभ्यास हो जाने पर देवनागरी अथवा उर्दू अक्षरों की निज के तौर पर अवश्य पढ़ानी चाहिये ताकि बचपन से ही धर्म का अंकुर उन के हृदय में स्थान पा सदैव हरा भरा रहे। अब मैं संक्षेप से इस उर्दू की पुस्तक की प्रशंसा में जो समा-

लोचना प्राप्त हुई हैं दर्ज करता हूं। नागरी के हस्या में और बहुत विषय बढ़ा इस को सर्वाङ्ग सुन्दर बना दिया गया है।

मुंशी चंपतराय साहब डिप्टी मजिस्ट्रेट नहर गंग कानपुर

मुकर्रम् बंदह पंडित जी तस्लीम! आप की तसनीफ कर्दह नुसखे दाफ़ै मसाइबे हिन्द वसूल हुई। इस की इबारत ऐसी बामहावरे और बेमिस्ल है कि मिस्ल नौवेल के इस के पढ़ने को जी चाहता है। मैं यह नतीजा निकाल सकता हूं कि आप ने पबलिक के मफ़ाद पर खूब ही ग़ौर किया है।

मुंशी पं० लालाराम जी ज़िलेदार नहर जमन शामली

गुज़ारिश है कि इस नुसखे के कुछ जुज़ दो चार अहलकारान को सुनाये, सब ने बहुत ज़ियादा सबूत दलायल की तारीफ़ की। यह नुसखा हरएक शख़्स को ख़्वाह किसी ख़्याल का हो अज़ीज़ होगा।

मुंशी नत्थूलाल साहब मंत्री आर्यसमाज जसौला ज़िला मुज़फ्फ़रनगर।

श्रीमान् मान्यवर महाशय जी नमस्ते! नुसखे मसायबे हिन्द को मैं ने बग़ौर पढ़ा। वाक़ई हिन्द के लिये यह किताब चश्मये आबेहयात है।

(हिन्दुस्तान पत्र लाहौर २० फर्वरी सन् १९०८ ई०)

किताब नुसखै दाफ़ै मसायबे हिन्द में हिन्दुस्तान के मसाइब की बदलायल तशरीह करते हुए मुसन्निफ़ ने उमदा सबूत व नीज़ उस के दफ़ीये की तदाबीर बतलाई हैं। यह किताब उमदा हरेक के पास रहने लायक़ है।

बाबू अनन्तराम साहब औनरेरी मजिस्ट्रेट लायलपुर—पंजाब।

आप के इनायत कर्दह नुसखे दाफ़ै मसायबे हिन्द के मुताले से जो आनन्द हुआ है उस का शुक्रिया अदा नहीं

कर सकता। इस का रिवाज आम होना निहायत ज़रूरी है। आपने मुल्क पर कमाल अहसान किया है।

बाबू सालिगराम सुपरिन्टेन्डेन्ट चुंगी नक्शा निवार हज़ारा।

आप की किताब मेरे मुताले से गुज़री। वाक़ई एक आला दर्जे की किताब है और मुल्क को ऐसी किताब की इशाअ़त की सख़्त ज़रूरत थी।

महात्मा मुंशीराम जी सद्धर्म प्रचारक—कांगड़ी।

किताब मसायबे हिंद में पं० रामरक्षपाल ने हिन्द की मसायब को ३ हिस्सों में क़ायम कर के इन को दलायल से बहुत उमदा तौर से साबित किया है और तदाबीर दफ़ीयः मसाइब की बतलाई है। अलावः और मज़ामीन के अपील गवर्नमेंट तो इस क़ाबिल तहरीर की है कि इस का तर्जुमा हर अंगरेज़ी अख़बार शायः कर अपने मुल्क पर अहसान करें।

मौलवी हकीम फ़ीरोज़ुद्दीन साहब हेडमास्टर मदर्सह इसलामिया देहली

आप के नुसख़े दाफ़े मसायब हिन्द का मुताले किया। मैं बहैसियत एक तबीब और मौलवी होने के अर्ज़ करता हूं कि ये दलायल क़ातः मुल्क की बेहबूदी की ग़रज़ से ग़ैब से आप को अता हुये हैं। इस के अहसान का शुक्रिया अहले मुल्क से अदा होना नामुमकिन है।

हाजी फ़क़ीर मुंशी नूर मुहम्मद साहब जबलपुरी

किताब नुसख़े दाफ़े मसाइबेहिन्द का मुताले कर निहायत खुशी हुई कि जिस की तारीफ़ करना मेरे इमकान से बाहर है। आप ने वह काम अख़तियार किया है जैसा कि

हमारे यहां पैगम्बरों ने किया था। तमाम हिंद के बाशिंदगान को आप का अहसानमंद होना चाहिये क्योंकि आप ने तमाम मुल्क के बाशिंदगान की तकलीफ़ दूर करने की कोशिश की है। खुदावन्द करीम आप को इस का अजर अज़ीम देवेगा।

विस्तार भय से इतने ही प्रशंसा-पत्र छपाने काफी समझे।

गो भक्तों का शुभचिन्तक

रामरत्नपाल शर्मा

औनरेरी मैनेजर गोशाला नजफगढ़ जिला देहली

तथा सेक्रेटरी भारत पशुवर्द्धिनी व भारत गोकष्टनिवारिणी सभा

पुस्तक के विषयों का सूचीपत्र।

विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
भूमिका व सूचीपत्र	१	८
साधारण निवेदन	१	४
प्रथम अध्याय	४	१४
अन्न की मँहगी का उदाहरण	६	७
संक्रामक रोगों की वृद्धि की व्याख्या	७	९
अकाल मृत्यु अथवा बालविधवाओं की अधिकता का दृश्य	९	१४
द्वितीय अध्याय	१४	४६
गोवध से अन्न के मँहगा होने के प्रमाण	१४	२६
गोवध से संक्रामक रोगों की वृद्धि के प्रमाण	२६	४२
गोवध से अकाल मृत्यु के होने की सिद्धि	४२	४६

विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
तृतीय अध्याय	४७	६५
गोरक्षा के उपाय व गोरक्षा सम्बन्धी शिक्षा	४७	६५
चतुर्थ अध्याय	६५	१५९
मुसलमानी धर्म्म पुस्तकों से गोवध के महापाप होने की सिद्धि और मुसलमानों से निवेदन	६५	८३
ईसाई धर्म्मावलम्बियों से निवेदन	८३	८५
जैनधर्म्मावलम्बियों से गौ के महत्त्व में प्रार्थना	८५	९०
साधु महात्माओं व महन्तों की सेवा में निवेदन	९०	९२
श्रीमान् स्वाधीन नरपति गणों की सेवा में अपील	९३	९७
गोशालाओं के संचालकों से निवेदन	९७	१०२
तीर्थपुरोहितों की सेवा में प्रार्थना	१०२	१०३
हिन्दू धर्म्म शास्त्रों से गोरक्षा का महत्त्व	१०३	१३१
आर्यसमाज की सेवा में निवेदन	१३२	१३५
उपदेशक महाशयों से प्रार्थना	१३५	१४२
गवर्नमैण्ट की सेवा में सविनय अपील	१४२	१५९
पंचम अध्याय	१५९	२०४
इस में दूषियों के आक्षेपों के उत्तर हैं		
(१) वृद्धा अथवा बहला गौ कुछ लाभ नहीं दे सकती अतः इस की रक्षा व्यर्थ है	१५९	१६१
(२) गौएं न रहेंगीं तो भैंस दूध व घी का व भैंसे खेती आदि का भली प्रकार काम दे सकते हैं इस से गोरक्षा व्यर्थ है—	१६१	१६३
(३) गौओं के स्थान में ऊंट अच्छा काम दे सकता है	१६३	१६६
(४) यदि गाय बैल न होंगे तो घोड़ों से यूरोप की भांति खेती का काम लिया जा सकता है	१६६	१७४

विषय	पृष्ठ से	पृष्ठ तक
(५) गोवध के कारण यदि बैल न रहेंगे तो बैलों का काम कलों से लेलिया जायगा	१७४	१७५
(६) दया के विषय में गौ और गधा आदि सब जीव समान हैं अतः गोरक्षा को ही मुख्य कहना न्याय विरुद्ध है—	१७५	१७६
(७) सैकड़ों गोशालायें स्थापित हो चुकीं किंतु घी दूध तो सस्ता नहीं हुआ	१७६	१७८
(८) दो चार मनुष्यों के प्रयत्न से कुछ नहीं हो सकता इस के अतिरिक्त शासनकर्त्ता लोग गोभक्षक जाति से हैं इस कारण गोवध देश से दूर होना असम्भव है	१७८	१८२
(९) लूली लंगड़ी अथवा वृद्धा गौओं को तो जो बड़े कष्ट से जीवन व्यतीत कर रही हैं एक दम मार कर कष्ट से छुड़ा देना ही धर्म है	१८२	१८४
(१०) इंगलैंड-निवासी गो-मांस-भक्षी होते हुए न तो भारत-वासियों की भांति निर्धन हैं न दुर्बल न इन की भांति रोगों में ग्रसित हो अकाल मृत्यु को प्राप्त होते हैं इस का क्या उत्तर है	१८४	१८७
(११) गोरक्षा तथा गोशालाओं के गवर्नमेंट विरुद्ध है और दिल में उस के सहायक अथवा मेम्बर राज्य-विद्रोही मालूम होते हैं अतः हम सरकार की इच्छा के विरुद्ध गोरक्षा में शामिल होना नहीं चाहते	१८७	१९१
(१२) गोरक्षकों को गौ का दुग्ध भी नहीं पीना चाहिये क्योंकि दुग्ध रक्त का रूपान्तर है फिर दुग्ध बच्चों का भाग है	१९१	१९४
वैकुंठ का बीमा	१९४	२०४

॥ श्री गोपालायनमः ॥

भारत कष्ट निवारक महौषधि ।

उस परमदयालु जगत्पिता परमात्मा का अनेकानेक धन्यवाद है कि जिस ने अपनी असाधारण दयालुता से सम्पूर्ण जीवों में केवल मनुष्यों को ही अपने अद्वितीय व अनन्त कोष से बुद्धिदान दे कर कृतार्थ किया कि जिस के द्वारा वह अपने शुभाशुभ का निर्णय कर अधोगति से उन्नतावस्था पर पहुँच सकता है।

शोक का विषय है कि इस समय हमारा भारतवर्ष ऐसी अधोगति व दुरवस्था को पहुँच गया है कि जिस के पहले प्रताप को स्मरण कर विदेशी विद्वान् तक आंसू बहा रहे हैं। जोकि सदैव समय एकसा नहीं रहता इस से हर्ष का विषय है कि कुछ दिनों से इस देश के विद्वानों व नेताओं का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है। रात्रि दिवस वे इसी चिन्ता में मग्न हैं कि वह क्या कारण है कि जिस से यह देश सर्व-शिरोमणि होते हुये इस हीनावस्था को पहुँच गया है या वह कौन उपाय है कि जिस के अवलंबन से एतद्देशवासी फिर अपनी पूर्वावस्था पर पहुँच इन संकटों व दुःखों से निवृत्त हो सच्चे सुख का अनुभव कर सकें। कोई २ महाशय कहते हैं कि जब तक यहां के मनुष्य पश्चिमी उच्च शिक्षा से विभूषित हो नौकरी की धुन छोड़ व्यापार की ओर ध्यान न देवेंगे वा जब तक कला कौशल का व्यवहार इस देश में न होवेगा कदापि यह देश उन्नति को प्राप्त न होवेगा। अनेक विद्वान्

निर्णय करते हैं कि जब तक बाल्यविवाह की रोक या स्त्री शिक्षा की ओर ध्यान या परदा प्रणाली के दूर करने का प्रयत्न न किया जावेगा या जाति भेद व समुद्र यात्रा का निषेध इस देश से दूर न होगा कभी यह देश पूर्वावस्था पर नहीं पहुँचेगा। ख़ैर जो २ उपाय व सिद्धान्त नेतागण बतला रहे हैं यदि उन को सूक्ष्म दृष्टि से देखा जावे तो उन का कथन स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है, परन्तु जैसे बलकारक भोजन या रसादिक महौषधियें जीर्ण ज्वर के रोगी को अपना पूर्ण प्रभाव रखते हुए भी बिना निदान जाने या मुख्य रोग को ध्वंस किये कुछ सफलता प्राप्त नहीं कर सकतीं। इसी प्रकार वे उन के अमूल्य वचन भी बिना मुख्य कारण को दूर किये किसी प्रकार से भी इस देश की हीनावस्था व दरिद्रता को दूर करने में समर्थ नहीं हो सक्ते हैं। अतएव इस देश में वह महा पाप जो हमारी दरिद्रता व अनन्त दुःखों का कारण हो रहा है मुझ अल्पज्ञ की बुद्धि में गोवध व गोहत्या व गौओं की वृद्धि की ओर से हमारे चित्तों का हट जाना है। जिस समय गोवध देश से दूर हो जावेगा और गौओं के उपकार व वृद्धि की आवश्यकता पर देश का ध्यान होवेगा, उस समय उन नेताओं व विद्वानों के पूर्व कथित वचन भी अपना प्रभाव जमा देश को उन्नतावस्था पर पहुँचा सकेंगे। परन्तु महान् शोक है कि इस रोग के निदान व पहचानने में नेता लोग जाति भेद व मतों की विरुद्धता से सहमत नहीं होते हैं। जिन्हों ने इस की अवनति का कारण बता इस की रक्षा को मुख्य बतलाया वे पक्षपाती कहलाये। इसी कारण ईसाई व मुसल्मान तो अलग रहे आर्य्य हिन्दू भी इन की रक्षा की ओर ध्यान नहीं देते। हिन्दू लोग तो गोरक्षा को साधारण

धर्म समझ इस की असली रक्षा से बिलकुल बे ख़बर हैं, समझते हैं कि गो-रक्षा का तात्पर्य्य गोदान कर बैतरणी पार उतर जाना या अपने देशभाई मुसल्मानों से ईद के रोज़ गाय की कुर्बानी पर उपद्रव मचाना है, रहे ईसाई मतावलम्बी या मुसल्मान लोग वे इस के लाभों व इस की आवश्यकता सोचने से पहले ही पक्षपाती बन निरर्थक दलीलें करने लगते हैं। हमारी बृटिश गवर्नमेंट भी जिस को अपनी प्रजा वा आधीन देश की भलाई का बहुत बड़ा ख्याल है, जो हर घड़ी इसी सोच में रहती है कि वह कौन उपाय है कि जिस से भारत की दरिद्रता जो दिनों दिन ज्वार भाटे की तरह से बढ़ती चली जा रही है रुके वह भी जब गोरक्षा या गोबध के शब्द को सुनती है तो बिना सोचे व बिना अनुसंधान किये इस के लाभों से आंखें बंद कर, इस में सहायता करनी तो दूर रही उलटा इस के सहायकों को उपद्रवी समझ बुरी दृष्टि से देखने लगती है। अतएव बृटिश अफसरों और अन्य मतावलम्बियों से सविनय निवेदन है कि यदि वे पक्षपात व हठ को छोड़ कर इस पुस्तक के गूढ़ मर्म्म पर दृष्टि देवेंगे तो इस का लक्ष्य किसी मत मतान्तर से न पाकर अवश्यमेव इस को भारतोन्नति का कारण व भारत दुर्दशा के दूर करने की महौषधि पावेंगे, क्योंकि यह गोरक्षा नहीं है कि जिस का सम्बन्ध केवल हिन्दुओं से ही माना जावे बल्कि यदि इस की शिक्षा व उपायों पर ध्यान दिया जावेगा तो इस का सम्बन्ध देशहित और मनुष्य मात्र की रक्षा से पाया जावेगा और स्पष्ट विदित हो जायगा कि यदि मुख्य देशहित है तो गोरक्षा ही है और महान् कष्टों व विपदों व दरिद्रता का हेतु केवल वर्त्तमान असंख्य गोबध ही है कि जिस को हरएक

मतवाले को चाहे वह कैसा ही इस का कट्टर विरोधी हो सिर नीचा कर मान लेना पड़ेगा।

प्रगट हो कि इस पुस्तक को पांच अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में भारतवर्ष के उपस्थित दुःखों की तफसील है। द्वितीय अध्याय में उन दुःखों के कारणों को प्रमाण सहित सिद्ध किया है। तृतीय अध्याय में उन वर्णित दुःखों के दूर करने के उपाय और उन के लिये समयोचित शिक्षा लिखी गई हैं।

चतुर्थ अध्याय में हरएक मतवालों से पृथक् २ निवेदन है और उन के धर्म-ग्रन्थों से गोरक्षा को सर्वोत्तम सिद्ध किया है और राजा महाराजाओं रईस व मतवालों साधु संतों व अपनी गवर्नमेण्ट से सप्रमाण अपील की गई है।

पंचम अध्याय में उन आक्षेपों का उत्तर है कि जो बहुधा अन्य मत वाले अथवा द्वेषी लोग गोरक्षा पर करते रहते हैं।

प्रथम अध्याय

इस में भारतखंड के वर्तमान दुःखों का सविस्तर वर्णन है।

हे प्रियवर भ्रातृगणों व माननीय सज्जनों! प्रत्येक देश में जहां धन दौलत व सभ्यता की वृद्धि होती है वहां उन के शुभचिन्तक नेतागण जब कभी देश में किसी प्रकार का उत्पात या प्रजा को किसी कष्ट में उपस्थित पाते थे तो तुरन्त सभा आदिक कर उस के निवृत्त करने का उपाय सोचा करते थे। जैसे कि पहले समयों में तीर्थों पर ऋषिगण और राजदरबारों में पण्डितगण सदैव सांसारिक व पारलौकिक उन्नति का ध्यान रखते थे—और दुःखों से निवृत्त होने का उपाय सांसारिक जनों को बतलाते रहते थे। आजकल भी

देख लीजिये कि यूरोपियन लोग जब किसी मामले में कोई बाधा देखते हैं तो फौरन उस के कारण के जानने को एक कमीशन नियत कर देते हैं, और जब तक उस बाधा को दूर नहीं कर लेते चैन से नहीं बैठते। यही कारण आजकल यूरोप देश के सर्वशिरोमणि अथवा लक्ष्मीपात्र होने का है। यदि हमारे देशवासी भी पहले की भांति अपने कर्त्तव्य में दक्ष रहते तो कभी भी इन संकटों के दर्शन नहीं करते परन्तु अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है यदि प्रातःकाल का भूला संध्या समय अपने घर पहुँच जावे तो उस को हम भूला हुआ नहीं कहते। हर्ष व धन्यवाद का स्थल है कि आजकल हम एक ऐसी न्यायशीला व पक्षपातरहित गवर्नमैण्ट के आज्ञाधीन हैं कि जिस के राज्य में हरएक जाति और संप्रदाय को अपने २ मत सम्बन्धी या सांसारिक उन्नति में पूर्ण प्रकार से स्वतन्त्रता प्राप्त है, प्रत्येक मत स्वतन्त्रता से अपने मत व जाति की प्रधानता जतलाने व उन्नति करने में तत्पर है। यदि ऐसी न्यायपरायण व पक्षपातरहित बृटिश गवर्नमैण्ट के राज्य में भी हम वैसे ही चुपचाप अधोगति के गर्त्त में गिरते ही चले जावें और अपने देश और जाति के हानि लाभ का कुछ भी चिन्तन न करें तो फिर हम से अधिक हतभाग्य इस पृथ्वी पर कोई न होगा।

महाशयो! मेरी राय में इस समय भरतखण्ड में तीन प्रकार के संकट पड़े हुये हैं:—

प्रथम—अन्न की मँहगी।

द्वितीय—नाना प्रकार के प्राचीन व नवीन रोगों की वृद्धि।

तृतीय—असमय शरीरान्त व अकालमृत्यु का होना।

प्रथम अन्न की मंहगी।

यदि पुराने समय को जब कि फी रुपया चार पांच मन अन्न का भाव था और बीस सेर तक घी का भाव था छोड़ दिया जावे और केवल ग़दर सन् १८५७ ई० के ही समय से वर्त्तमान समय का मिलान किया जावे तो देखिये कि जितनी खेती उस समय होती थी उस से चार गुणी पृथ्वी पर इस समय खेती होती है प्रत्येक स्थान के बन व जंगल काट खेत कर लिये या पहले जहां लाखों बीघे धरती बारानी पड़ी रहती थी नाम को भी पानी न था वहां अब सर्कार की ओर से नहरें जारी होकर उस जगह को हरा भरा कर रही हैं और वहां १ फसल की जगह तीन २ फसलें काट रहे हैं। खेती की उन्नति के लिये महकमा ऐग्रीकलचर यानी कृषि-विभाग खेती और व्यापार की उन्नति के लिये सरकार ने नियत कर दिया है और बहुत सी पुस्तकें और शालायें इस विषय की उन्नति को जारी होगई हैं कि जिन का ग़दर के समय में पता भी न था। परन्तु इन सब सुभीतों और अधिकता के होते हुए भी अन्न दिन प्रति दिन सस्ते के स्थान में मंहगा ही होता चला जा रहा है। अकाल अपनी डरावनी मूर्त्ति बना दूसरे तीसरे वर्ष सामने खड़ा ही रहता है। देख लीजिये कि चौदहवीं शताब्दी में केवल १ अकाल और पन्द्रहवीं में भी १ ही अकाल पड़ा था, फिर सोलहवीं शताब्दी में तीन और सत्रहवीं में दो और अठारहवीं शताब्दी में आठ और उन्नीसवीं सदी में बत्तीस अकाल इस देश में पड़ चुके हैं, और प्रतिदिन अकाल की भयंकर मूर्त्ति सामने खड़ी रहती है। ऐसा कोई समय नहीं दिखलाई देता कि जिस को हम सुकाल कह सकें। प्रियवर सज्जनो!

क्या इस का कारण वर्त्तमान समय के शुभचिन्तक नेताओं के कथनानुसार शिक्षा की कमी या कलाकौशल का न होना या बाल्यविवाह या परदाप्रणाली व जाति पांति का होना है या इस संकट को ग्रेजुएट साहिब कांग्रेस द्वारा रोक सकते हैं या आर्य्यों का गुरुकुल या सनातन धर्म्मावलम्बियों का ऋषिकुल इस को निवारण कर सकता है नहीं कदापि नहीं। बल्कि इसका कोई गूढ़ कारण और भारी त्रुटि है कि जिस की ओर आज तक न तो हमारे शुभचिन्तक नेताओं ने दृष्टि की न सर्कार ने उन के ठीक कारण मालूम करने की ओर ध्यान दिया। बस इस की व्याख्या इतनी ही काफ़ी है।

नाना प्रकार की बीमारियों और संक्रामक रोगों की वृद्धि की व्याख्या।

प्रियवरो! इस का भी हम ग़दर सन् १८५७ ई० के समय से मिलान करते हैं। देखिये कि जिस क़दर सफ़ाई देहात व नगरों का ध्यान गवर्नमेंट को आजकल है या जिस क़दर सरकारी या निज के शफ़ाख़ाने आजकल जारी हो रहे हैं, दवाइयें बिना मूल्य मिल रही हैं या जैसे आजकल डाक्टर, वैद्य, हकीम लोग अपने २ अनुभव की औषधियों का समाचारपत्रों द्वारा विज्ञापन दे डाक विभाग की कृपा से घर बैठे दवा पहुँचा रहे हैं और जल वायु की शुद्धि के निमित्त इंजीनियर लोग झीलों से गंदे नाले निकाल कर या शहरों में वाटरवर्क्स जारी कर आरोग्य जल का प्रबन्ध कर संक्रामक रोगों के दूर करने का उपाय कर रहे हैं या जिस क़दर वैद्यक ग्रंथों का हरएक भाषा में छपा हो कर

गली २ में पुस्तकें सस्ते मूल्य में बिक रही हैं, यहां तक कि हमारी स्वास्थ्य रक्षा के निमित्त एक सेनेटरी कमिश्नर अर्थात् स्वास्थ्य-रक्षक हाकिम नियत कर रक्खा है इसके मुकाबले में न तो इस क़दर सफ़ाई देहात की ओर ग़दर से पहले सर्कार का ध्यान था न इतने शफ़ाख़ाने सर्कार या देशवासियों ने खोल रक्खे थे न डाकखानों और समाचारपत्रों का ऐसा सुगम प्रबन्ध था कि सहस्रों कोसों की औषधियें घर बैठे मिल जातीं, न सिवाय संस्कृत या अ़रबी, फ़ारसी के वैद्यक सम्बन्धी कोई पुस्तक छापाख़ानों की बदौलत कौड़ियों के मोल मिलती थीं कि जिस से वैद्य या डाक्टर के अभाव में हम उसे देख अपनी आवश्यकता को मेट सक्के। न कहीं गंदे नाले निकाले जाते थे। न वाटरवर्क्स जारी था, न सर्कार की ओर से आज कल की भांति कोई हम को पूछने वाला था कि तुम मरते हो या जीते। अब कि ग़दर के समय की अपेक्षा आज कल हमारे लिये सब बातों का इतना सुभीता है तो उस समय की अपेक्षा अब दसवां भाग भी बीमारियों का न होना चाहिये था। कभी ही किसी रोगी की आर्त्तनाद सुनाई पड़नी चाहिये थी। हर तरह से हम दैवी कोपों अर्थात् रोगादिकों से बचे रहते, परन्तु शोक का विषय है कि यहां उलटा हाल है अर्थात् रोगों के कम होने के स्थान में अब दस गुणे अधिक रोग फैले हुए हैं। जिन रोगों का नाम बहुत कम सुनने में आता था बल्कि किसी २ का तो नाम भी न सुना था वे आजकल भारतवासियों के देह में घर बनाये हुए हैं देख लीजिये। कोई निमोनिया व संग्रहणी, तिजारी में फँसा है, कोई मृगी, सिरदर्द व श्वास से दुःखी है, कहीं ताप तिल्ली व बवासीर व बहुमूत्र रोग अपना ज़ोर

दिखला रहे हैं। कहीं प्रमेह व मलेरिया व सन्निपात ज्वर या सब के गुरुघंटाल प्लेग महाराज इस देश में सात समुद्र पार से पदार्पण कर असह्य कष्ट दे रहे हैं। हैज़े साहब जो १२ वर्ष पश्चात् कुंभ स्नान पर दर्शन देते थे वे अब हरसाल बड़े ठाठबाठ से प्लेगराज सहित दौरा कर जाते हैं। वरन् देश के किसी न किसी भाग में डेरा लगाये ही रहते हैं। जहां बवासीर व चौथैया राजरोग कहला कर पिछले जन्म का पाप ख़्याल किया जाता था, वहां अब प्रत्येक नगर व ग्रामों में फ़ीसदी ७५ मनुष्य इस रोग में ग्रसित हैं। ग़दर से पहले के वृद्धों को देख लीजिये कि चश्मे से कुछ प्रयोजन नहीं रखते वैसे ही आंखों की ज्योति स्थिर है, अब जहां बीस बाईस साल की अवस्था हुई स्कूल से निकलने भी नहीं पाये कि चश्मे की ज़रूरत पड़ी। समाचारपत्रों में औषधियों के विज्ञापनों को उलट पुलट देखने लगे। कहां तक लिखूं मुझ अल्पज्ञ में इतनी शक्ति कहां कि जो रोगों की वृद्धि को सविस्तर वर्णन कर सकूं। क्या आप नित्यःप्रति अपनी आंखों से नहीं देख रहे हैं। अब रहा तीसरा संकट—अर्थात्

अकाल मृत्यु से विधवाओं का सर्वनाश होना।

स्मरण रहे कि श्री रघुवंशभूषण रामचन्द्र जी महाराज के समय तक तो यही कहा जाता था कि पिता के सामने पुत्र की मृत्यु नहीं होती थी। ख़ैर इस को तो जाने दीजिये क्योंकि आज कल के नई रोशनी वालों को पहली सब बातें मिथ्या व असम्भव मालूम होती हैं। ख़ैर साहिब ग़दर के समय से ही मुक़ाबला कीजिये कि जितनी विधवायें उस समय थीं उन से कई गुणी अधिक आज कल मौजूद हैं। क्षण प्रति क्षण बालक व जवान मृत्युओं की आर्त्तनाद कानों

में गूंजती रहती हैं। हर गली व कूचे में—कुहराम मचा हुआ है। वह कौन गली व मुहल्ला है कि जिस में दस बीस अभागे माता पिता अपने २ पुत्रों व जामात्रों के दुःख से अथवा बालविधवायें अपने २ प्राणाधार पतियों के कुसमय वियोग से दुःखित हो मृत्यु को इस महान् दुःख से मुक्त होने की महौषधि न समझते हों। वृद्ध माता पिता चिता की चिन्ता ही कर रहे हैं कि उन से पहले उन के देखते हुए उन की आंखों के तारे महा दुलारे इस लोक से प्रस्थान कर जाते हैं। वे अभागे शेषायु रो पीट कर व्यतीत करते हैं। उन को न तो हैज़ा व प्लेग आकर लेता है न निमोनिया व चौथैया सताता है। ग़रज़ जिधर देखो उधर संसार दुःखी हो रहा। जिस घर में खाने को मौजूद है, ईश्वर ने धन प्रताप ऐश्वर्य व राज्य सब कुछ दिया है, लक्षाधीश या अपने समय के कुवेर हैं वे हर घड़ी इसी सोच में डूबे हुए हैं कि कोई वैद्य या महात्मा औषधि या तपोबल से एक आंखों का तारा या इस ऐश्वर्यसम्पन्न अन्धेरे घर का उजियारा अर्थात् एक पुत्र दिखला उस के बराबर जवाहरात लेले, परन्तु यह आशा सफल नहीं होती। जिस के यहां ईश्वर ने दस पांच सन्तान दी हैं उस के पास खाने को अन्न नहीं, वह बेचारा मुसीबत का मारा हर घड़ी यही कहता रहता है कि यह सन्तान कहां से चली आई, यहां अपना तो पेट भरता ही नहीं इन अभागों का पालन पोषण कहां से करें। यदि किसी भाग्य-शाली के संतान व द्रव्य दोनों ईश्वर ने दिये हैं तो वह स्वयं किसी ऐसे रोग से पीड़ित है कि वह इस ऐश्वर्य से लाभ नहीं उठा सकता। यदि किसी भाग्यवान् को परमात्मा ने धन, सन्तान व तन्दुरुस्ती तीनों दे प्रतापशाली बनाया है

तो उस घर में पुत्र या जामात् शोक से दो एक पुत्री अथवा पुत्रवधू विधवा बैठी हुईं उन के सब सुखों व ऐश्वर्य्य को मिट्टी में मिला रही हैं। वह रात्रि दिन चिन्ता में निमग्न रह इन सब सुखों को दुःख रूप मानता है। सर्व्वसुखिया इस समय बिरला ही होगा। पहले का यह वचन कि राम राज्य प्रजा सुखी, इस का कहीं पता नहीं चलता। ऐसे ही आमदनी का ख़याल कर लीजिये कि जहां हर पेशे वाला अपने पेशे में मस्त था। बनिया आटा दाल बेचता था तो रसादिक बेचना उस के लिये महान् पाप था। ब्राह्मणों को नौकरी वा कृषि वाणिज्य और क्षत्रियों के लिये वैश्य या शूद्र कर्म्म करना महा निषेध था। सब की आवश्यकतायें अपने अपने वर्णानुसार कर्म्म करने से पूर्ण होती रहतीं थीं, कोई देश छोड़ परदेश का नाम भी न लेता था। वहां अब प्रत्येक मनुष्य बीसियों कार्य्य करता है। वैश्य लोग साबुन व सरेस इत्यादि घृणित वस्तुयें बल्कि अपने हाथ से घी में चरबी तक मिला बेचते हैं। ब्राह्मण लोग पेट की ख़ातिर अपना कर्म्म धर्म्म छोड़ नौकरी और पुरोहिताई की आड़ से नीच सेवा करने लग गये हैं, क्षत्रिय लोग राज्यहीन हो शूद्र कर्म्म कर रहे हैं कहां तक इस समय का रोना रोया जावे, देश छोड़ धर्म्म खो विलायत यात्रा कर ट्रांसवाल और मोरीशस आदिक कालोनियों में जाते हैं परन्तु ये अभागे वहां भी धक्के खा कुली कहाते हैं। तिस पर भी चैन नहीं पाते हैं। विद्या बुद्धि में जहां हमारा देश सर्वशिरोमणि हो सभ्यता की उच्च कोटि पर था और जिस समय दूसरे देशवासी निरे असभ्य और जंगलियों के तुल्य थे। हमारे ही पुरुखाओं अर्थात् ऋषि महर्षियों ने अनेक

शास्त्रों का आविष्कार कर जगद्गुरु की पदवी प्राप्त की थी, वहां हम उन्हीं के वंशज उन्हीं पुरातन असभ्य जातियों के मुख से जो अब अपने तईं सभ्यता के शिखर पर पहुँचा समझ रहे हैं महा मूर्ख और असभ्य कहलाते हैं यहां तक कि वे हमारा और पशुओं का मरना एक सा ही ख़्याल फ़रमाते हैं। वीरता व शूरता के कारण जहां हमारे पुरुखा देश देशान्तरों को जीत चक्रवर्त्ती राज्य करते थे, वहां अब हम उन की कुसन्तान कमहिम्मत और डरपोक कहलाते हैं, पराधीनता में दिन बिताते हैं, कहां तक कहूं मुझ अल्पज्ञ में इतनी शक्ति नहीं कि जो इन संकटों का शतांश भी वर्णन कर सकूं, परन्तु अब दिन फिरते मालूम होते हैं कि जो शुभचिन्तक नेताओं की कोशिश से स्थान २ पर कानफरेन्स वा सभायें होनी प्रारम्भ होगई हैं। अतएव अब हम को सोचना चाहिये कि वह क्या कारण है कि जिस से हम नित्य प्रति के अकाल व अनावृष्टि से उदरपूर्त्ति के हेतु किसी उपाय से भी सफलमनोरथ नहीं हो सकते। कौन हेतु है कि जिस की बदौलत रोगों की अधिकता और देह की दुर्बलता हो हम कभी तनदुरुस्ती का दर्शन नहीं कर पाते? क्या सबब है कि संक्रामक रोगों की बदौलत नित्यप्रति की मृत्युओं के कारण हम इष्ट मित्र वा सम्बन्धियों की मौजदगी का सुख नहीं उठा सक्ते? वह कौन पाप हमने किया है कि जिस का प्रतिफल हम भोग रहे हैं, कौन अवज्ञा उस जगत्पिता की की है कि जिस का दण्ड वह हम को दे रहा है। या कौन अधर्म्म हमारे हाथों से हो रहा है कि जिस से हम इस दुर्दशा को प्राप्त हो रहे हैं। पहले समय में वे कौन धर्म्माज्ञायें थीं कि जिन का पालन करने से हम स्वर्ग-सुख भोगते थे। कौन

सीधा सन्मार्ग था कि जिस में चल हम ठोकर न खाते थे, बरन् सुरदुर्लभ मनोरथों को पाते थे। पहले ऐसी यहां क्या वस्तु या कर्त्तव्य कर्म्म था कि जिस के कारण अष्टसिद्धि नवनिद्धि हाथ जोड़े खड़ी रह कर यह देश हिरण्यगर्भ अर्थात् सोने की खानि कहलाता था। दूर विलायत के मनुष्यों का इस को सत्य ही स्वर्णभूमि जान मन ललचाता था।

सोचिये, ध्यान दीजिये, फ़रमाइये—बड़ी छान बीन और खोज के पश्चात् मुझ को तो (दूसरे छोटे २ कारणों के अतिरिक्त कि जो वे भी इन संकटों के सहायक हो रहे हैं।) बड़ा भारी मूल कारण गोवध व गोहत्या से गौओं की न्यूनता और इन की रक्षा की ओर से हमारे दिलों का हट जाना है। प्रियवरो! जो कि आज कल अधर्म्म में रुचि है, अधर्म्म की बातें ही संसार को प्रिय लगती हैं, अतएव मेरे इस निराले—समय विरुद्ध—अरोचक विचार या मत को सुन चौंक न पड़िये, शान्त हूजिये, पक्षपात व हठधर्म्मी छोड़ ध्यान दीजिये, यह न ख़याल कीजिये कि इतना समय हमारा व्यर्थ खोया।

परमात्मा करे कि जैसे गोरक्षा या गोवध व गावकुशी को सुन साधारण मनुष्य तो अलग रहे, हमारी न्यायशीला विचारपूर्ण बृटिश गवर्नमेंट तक भी चौंक उठती है ऐसे ही मेरे इस पुस्तक लिखित सप्रमाण और स्वयंसिद्ध निवेदनों को (जो आर्य्य हिन्दू, मुसल्मान व ईसाई सब को ग्राह्य करने पड़ेंगे) ध्यान पूर्वक सुन महाघोर निद्रा से भारतवासी जन व हमारी न्यायशीला, कर्त्तव्यपरायण गवर्नमेंट जाग उठे और इन संकटों व महान् दुःखों से अपने देश भाइयों व दीन प्रजा को बचाने में कटिबद्ध हो इस

जगत्‌हितैषी लाभकारी सर्व्वशिरोमणि जीव की रक्षा में दत्तचित्त हो इस की वृद्धि की ओर ध्यान देवें। अभी अनेक सज्जनों को शंका उठ रही होगी कि गौ तो एक साधारण पशु है, कैसे यह अन्न की मँहगी का कारण हुई। कैसे इस की कमी ने रोगों को देश में फैला दिया था, गायों की न्यूनता किस प्रकार हमारे देश के युवाओं व बालकों की अकाल मृत्यु अथवा विधवाओं की वृद्धि का हेतु हो गई, किस प्रकार से इन की रक्षा अथवा वृद्धि अन्न की मँहगी अथवा रोगों की वृद्धि वा अकालमृत्यु को रोक सकती है। लीजिये—कृपा करके ध्यान पूर्वक सुनिये, उपरोक्त सर्व आपदाओं का मूल हेतु गोवध है अथवा गौओं की न्यूनता से सप्रमाण सिद्ध किया जाता है।

दूसरा अध्याय।

इस में गोवध होने से उपरोक्त तीनों संकटों का होना सिद्ध किया गया है।

(१) प्रथम अन्न का मँहगा रहना—यह तो स्वयंसिद्ध अथवा स्पष्ट विदित है कि खेतों की जितनी अधिक जोताई की जावेगी उस में उतना ही अधिक अन्न उत्पन्न होवेगा। किन्तु इस भरतखण्ड में खेतों की जोताई बैलों के द्वारा होती है खेती का सम्पूर्ण भार अर्थात् जोतना व सींचना और फिर अन्न का भूसे से अलग करना सब बैलों ही के ऊपर है, परन्तु बैलों की उत्पत्ति गायों से होती है। अतएव जब असंख्य गोवध से गौओं की संख्या कम हुई तो स्पष्ट ही है कि बैलों की उत्पत्ति भी कम होगी कि जिस से ग़दर के समय जो बैल २०) रुपये में मिलता था वह अब पचास

रुपये में भी नहीं मिल सकता। भरतखंड के किसानों में दरिद्रता के कारण इतनी शक्ति कहां कि जो बलवान एवं मूल्यवान बैल मोल ले खेतों को खूब जोतें। लाचार थोड़े मोल के बैल ले खेतों को एक दो दफ़े जोत बीज डाल दिया कि जिस में कम जोताई होने के कारण आधे से भी कम अन्न उत्पन्न होगा। इस कारण कमी जोत जो कमी उपज का कारण हुई और जिस का मूल कारण गौओं की न्यूनता अथवा गोवध का होना है पहला सबब अन्न की मँहगी का हुआ। (२) दूसरे इस में भी कोई सन्देह नहीं है कि अन्न की उपज की अधिकता खाद अथवा पाँस या घूरे पर है। खेतों में जैसा ही अधिक खाद डाला जावेगा वैसा ही अधिक अन्न पैदा होगा; परन्तु अच्छी और आरोग्यवर्द्धक खाद गाय बैलों से मिलती है—पस जब गोवध के कारण गाय व बैलों की कमी हो गई तो खाद कहां से आवे—चुनांचे वर्त्तमान समय में देख लीजिये कि थोड़े से गौहानी खेतों के सिवाय कि जिन में भी ज्यादा भाग विष्टा का होगा और खेतों में बिलकुल खाद नहीं होती है। प्राचीन समय के कृषकों का नियम था कि अपनी आधी भूमि जोतते बोते थे और शेष आधी को गाय बैलों के चरने को छोड़ देते थे वरन वे पशु दिन रात उसी जगह रहते थे कि जिस में उन के हरवक़्त के रहने सहने से बिना दाम लगे और बिदून कष्ट सहे खूब खाद पड़ जाती थी, फिर दूसरी फसल में उस पड़ती भूमि को जोतते बोते थे। और उन बोये हुओं को पड़ती छोड़ उन में उसी प्रकार से पशुओं को छोड़ देते थे यह एक सहज ढंग खेतों में खाद के डालने का निकाल लिया था कि जिस के कारण वर्त्तमान समय से उन में त्रिगुण अन्न

उपजता था । फिर जो कि वर्त्तमान काल में अनुसंधान से दस लक्ष गाय व बैलों का प्रति मास बध होना विदित हुआ है और मिस्टर सी. आई. ओजेन साहिब डाईरेक्टर कृषि विभाग बंबई ने निर्णय किया है कि एक गाय या बैल से १०८० पौंड गोबर माहवारी पैदा होता है तो इन १० लाख पशुओं के नष्ट होने से एक करोड़ पैंतीस लाख मन माहवार अथवा सोलह करोड़ बीस लाख मन सालाना गोबर की खाद का नुक़सान हुआ । जो यदि खेतों के अन्दर डाला जाता तो कम से कम पचास करोड़ मन अन्न उस से अधिक उत्पन्न होता । यदि विलायत वाले इस खाद की उपज पचास करोड़ मन अन्न को हरसाल लिये भी चले जाते तो बाक़ी अन्न हमारे पेट भरने को काफ़ी होता और मँहगाई न होती ।

इस के अतिरिक्त खाद की कमी से एक यह भी बड़ा भारी नुक़सान हुआ है कि लाखों साल से खेती होते रहने से खेतों की मिट्टी में से जो रासायनिक पदार्थ निकलते रहते थे कि जिन की पूर्त्ति भारतवर्ष में गोबर की खाद (जिस में वे ही रासायनिक परमाणु अंदाज से ठीक मौजूद हैं) करती रहती थी परन्तु अब खाद न मिलने से उस के परमाणु नष्ट हो कर ज़मीनें कमज़ोर हो गईं । विशेष कर इस समय में जब कि नहरों की आबपाशी से ज़मीनें ठंढी हो गईं गोबर के खाद की बड़ी भारी आवश्यकता थी क्योंकि गोबर के रासायनिक परमाणु (जिन का वर्णन इस पुस्तक के पांचवें भाग में किया जावेगा) उस ख़राबी को दूर कर सक्ते थे । अतएव खाद की कमीसे ये कई प्रकार की हानियें कि जिन का मूल कारण गोबध से गायों की न्यूनता है दूसरा

कारण अन्न की मँहगी का हुआ (३) तीसरे यह भी सब को मानना पड़ेगा कि जो मनुष्य घी दूध खाते रहते हैं उन की भूख उन मनुष्यों से कि जिन को घी दूध बिलकुल नहीं मिलता बहुत कम होती है। अब ज़रा इतिहास तिमिर-नाशक को देखिये कि उस में लिखा हुआ है कि अलाउद्दीन खिलजी के समय में जो सन् १२९५ ई० में हिंद का बादशाह हुआ है एक रुपये का साढ़े बाईस सेर घी और छः मन दूध ८० तोले के सेर से बिकता था। पस ऐसे सस्ते समय में अमीरों का तो कहना ही क्या है ग़रीब प्रजा तक भी घी दूध छक कर खाते होंगे। इस के पश्चात् कर्नल टाड ने जो शुरू अमलदारी कम्पनी में इस देश में आया था अपनी यात्रा-पुस्तक में लिखा है कि बम्बई प्रान्त में सड़कों के ऊपर हम ने स्थान २ पर दूध के पौसाले अर्थात् प्याऊर्वे देखीं थीं कि जिन के पलटे आज कल लोगों को पानी की भी पिठलानी कठिन मालूम देती हैं। इस पर ध्यान देने से पाया जाता है कि उस समय में मनुष्यों के खाने में जिन को घी दूध इच्छा पूर्वक मिलता था वर्त्तमान समय के मनुष्यों से कि जिन को घी दूध के दर्शन भी कठिन हो रहे हैं अन्न कम खर्च होता था। इस से सिद्ध हुआ कि वर्त्तमान काल में घी दूध के कम मिलने से पहले समय की अपेक्षा अन्न का खर्च अधिक है जिस का मूल कारण गोवध या गायों की न्यूनता है कि जो तीसरा कारण अन्न के मँहगे होने का हुआ।

(४) जो विचार पूर्वक ध्यान दिया जावे तो एक गाय की १ पीढ़ी से कम से कम हिसाब लगाने पर १ लाख १९ हज़ार ६ सौ ११९६०० मनुष्यों का पेट १ दिन भर सकता है।

अभी इस पर यदि कोई शंका करे कि किस प्रकार से एक गाय इतने मनुष्यों को भोजन दे सकती है तो लीजिये ध्यान पूर्वक सुनिये। मैं अधिक दूध देने वाली गायों को (जो दस पंद्रह सेर तक नित्य दूध देती हैं और जिन की संख्या कोसी अथवा हिसार हरियाने और दक्षिण देश में बहुत है) छोड़े देता हूं बहुत ही कम हिसाब लगाता हूं अर्थात् यदि एक गाय का अधिक से अधिक पांचसेर और कम से कम १ सेर दूध मान लिया जावे और एक गाय का ब्याना केवल दस ही बार रक्खा जावे कि जिन में भी पांच बछड़े और पांच बछिया समझली जावें तो कुछ अनुचित न होगा। बस जब एक गाय पांच सेर और एक सेर का मध्यभाग तीन सेर दूध देवेगी तो एक मास में उस से सवा दो मन दूध मिलेगा और छः मास में साढ़े तेरह मन इस प्रकार दस ब्यांत में १३५ मन दूध हम को मिलेगा। इसी प्रकार उस की पांचों बछियायें भी दूध देवेंगी। अर्थात् मां बच्चों का कुल दूध ८१० मन होगा। अब यदि एक सेर दूध में आधपाव चावल डाल कर खीर बनाई जावे तो यह १ सेर भोजन खीर का १ मनुष्य के लिये अलम होगा। अतएव आठ सौ दस मन दूध में ३२४०० मनुष्यों की भली भांति तृप्ति हो जावेगी। अब शेष रहा पांच बछड़े या बैलों का पुरुषार्थ। सो यदि एक जोड़ी बैल से कम से कम २० बीघा कच्चे एक फसल में जोतना मान लिया जावे तो उन अढ़ाई जोड़ी बैलों से दोनों फसलों में १०० बीघे खेती बोई गई। पस यदि हम तीन मन ही प्रति बीघा पैदावार मान लेवें तो तीन सौ मन फी साल अन्न उन्होंने पैदा किया जो कि कम से कम बैलों के काम देने का समय १० वर्ष ही रख लिया

जावे तो तीन सहस्र ३०००~ मन अन्न उन्होंने अपनी आयु में कम से कम पैदा कर के दिया। अब रही उनकी खुराक सो भूसा तो जो अन्न से निकलेगा काफ़ी होगा। बाक़ी रहा ख़र्च दाने का, सो यदि दूध देनेवाली गायों को १ सेर नित्य अन्न दिया जावे तो एक गाय १ महीने में ६ धड़ी वा छः मास में साढ़े चार मन खावेगी जिस का दस ब्यांत में ४५~ मन अन्न होगा। इसी भांति इतना ही उस के पांच बच्चे अर्थात् बछिया खावेंगीं अर्थात् कुल खर्च २७०~ मन अन्न का गायों पर हुआ। बैलों की खुराक भी १ सेर प्रति बैल रख ली जावे तो अढ़ाई जोड़ी बैलों में ५ सेर नित्य का ख़र्च हुआ अर्थात् बैलों के ख़र्च में १० वर्ष में ४५०~ मन अन्न आया। पहले मनुष्यों के लिये जो खीर में आधपाव फी मनुष्य चांवल डाले गये हैं उन को भी जोड़ा जावे तो ३२४०० मनुष्यों के खाने में लगभग १००~ मन के चावल लगेंगे अर्थात् गाय, बैल और मनुष्यों का सब खर्च आठसौ बीस मन का हुआ। इस को उन के पैदा किये हुये ३०००~ तीन सहस्र मन से घटा दिया तो २१८०~ मन अन्न शेष रहा। अब यदि अधिक से अधिक एक मनुष्य के खाने में १ सेर अन्न मान लिया जावे तो इस अन्न में ८७२०० मनुष्यों की तृप्ति हुई। इस से पहले हमने केवल दूध से ३२४०० मनुष्यों का तृप्त होना सिद्ध किया है, बस इन दोनों को मिला लिया तो १ गाय की १ पीढ़ी से एक लाख उन्नीस हज़ार छः सौ मनुष्यों का भोजन हुआ। अतएव १ गाय का मारना मानो १,१९,६०० मनुष्यों के भोजन का नष्ट कर देना है, जिस में केवल डेढ़ दोसौ मनुष्य नामधारी सिंहों का मुंह काला होता होगा। यदि १ गाय के बच्चों के बच्चों का हिसाब लगाया जावे तो

उस का गणित करना ही कठिन हो जायगा। अतएव १ गाय के मरने से १,१९,६०० मनुष्यों की रोज़ी का कम हो जाना चौथा कारण अन्न के मँहगे होने का हुआ।

विदित हो कि हमारा यह हिसाब बहुत ही थोड़ा है। इसी को श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने अपनी पुस्तक गोकरुणानिधि में चार लाख दस हज़ार चार सौ चालीस मनुष्यों के भोजन का १ गौ के मरने से नष्ट होना लिखा है और फ़क़ीर दीनमुहम्मद साहब ने अपने ३ मार्च सन् १९०५ ई० के बंबई के व्याख्यान में गोहत्या से अठारह किरोड़ रुपये सालाना के नुक़सान का हिसाब देश का दिखलाया है। और मौलाना मौलवी फर्रुख़ी साहब ने जो श्रीमान् नव्वाब साहब रामपुर के उस्ताद हैं अपनी पुस्तक (बरकत बग़ैर हरकत) में लिखा है कि केवल रियासत रामपुर का वहां की गोहत्या के कारण ५६,२९०,८,५०० रुपये का सालाना नुक़सान होता है। अब आप ही सोच लीजिये कि जहां दस लाख गौओं का प्रति मास बध होता है वहां देश की कितनी हानि होगी। हा! भगवन् लिखते हुए हाथ कांपता है आंखों से अश्रुधारा जारी है स्मरण-शक्ति नष्ट हुई जाती है अतएव मेरी सामर्थ इस समय नहीं कि जो इस गोबध से हुई हानि का शतांश हिसाब भी आप के सामने पेश कर सकूं।

(शंका) मान लिया कि ये चार कारण अन्न की मँहगाई के हैं किन्तु पहले समय में जितनी खेती बोई जाती थी उस से कई गुणी अधिक आज कल बोई जाती है जहां सघन बन खड़े थे वहां अब खेती लहलहा रही है तो क्या यह कृषि योग्य खेतों की अधिकता इन उपरोक्त हानियों की जिन को आप बतला रहे हैं पूर्त्ति नहीं कर सकती?

१७०

(शंका समाधान) निःसंदेह यदि स्थूल दृष्टि से देखा जावे तो यह कथन आप का ठीक प्रतीत होता है। परन्तु यदि विचार पूर्वक सूक्ष्म दृष्टि से ध्यान दोगे तो यह बनों का कट जाना और बंजर भूमि टूट कर वहां खेतों का होना पांचवां कारण अन्न की मँहगाई का हो जायगा। क्योंकि पदार्थ विद्या द्वारा युरोपियन विद्वानों ने सिद्ध कर दिया है कि वृक्षों की पत्तियां हवा में से कारबुन को जो एक प्रकार का विष वर्षा के रोकने वाला है खेंचती रहती हैं कि जिस से वायु शुद्ध हो कर भाफ और बादल बनते रहते हैं जिस से वर्षा की अधिकता होती है। लेकिन जो कि वर्त्तमान काल में बन व जंगल कटने आरम्भ हो गये, वायु-शुद्धि का यंत्र न रहा, जो अनावृष्टि का कारण हो गया। इस के अतिरिक्त वृक्ष एक प्रकार से दैवीपम्प अर्थात् जल खेंचने का यंत्र है। क्योंकि यह तो स्पष्ट ही विदित है कि सूर्य्य भगवान की सहायता से जो भाफ पृथ्वी से उठती हैं उन्हीं से बादल बन कर वृष्टि होती है अर्थात् वृष्टि की अधिकता भाफ की अधिकता पर निर्भर है। पस वर्षा का जो पानी पृथ्वी पर पड़ता है उस को सूर्य्य अपनी आकर्षण शक्ति व उष्णता से भाफ बनाता रहता है यहां तक कि भूमि के भीतर की भी फुट दो फुट तक की नमी को खैंच कर भाफ कर देता है। परन्तु वर्षा का जो जल बहुत नीचे पहुँच जाता है वह सूर्य्य की शक्ति से बाहर हो जाता है कि जिस को वृक्ष अपनी जड़ों से खैंच कर डाली व पत्तों तक पहुँचाते रहते हैं और फिर उस को सूर्य्य भाफ बना कर बादल कर देता है अर्थात् जो काम भाफ बनाने का जो पृथ्वी के भीतर के पानी से से बनती सूर्य्य की शक्ति से बाहर था उस को वृक्षों ने आसान

कर दिया कि जिस से वर्षा की अधिकता होती है। लेकिन जो कि अब वृक्षों के बनों के कट जाने से कमी हो गई इसी कारण प्रति वर्ष वर्षा की भी कमी हो गई। सुना है कि यूरोप देश में सिसली द्वीप का जंगल एक दफै सब काट डाला गया था कि जिस से कई वर्षों तक वहां वृष्टि नहीं हुई। जब यूरोपियन विद्वानों ने इस को जाना तो फिर वहां वृक्ष लगा उन की रक्षा की गई। तभी से वहां फिर वैसी ही वृष्टि होने लग गई। क्या आप लोग नहीं जानते कि हमारे महर्षियों ने हरे वृक्ष का काटना अथवा उस की डाली व पत्तों का बड़ी आवश्यकता के सिवाय तोड़ना महापाप लिखा है इस का गौण कारण उपरोक्त हानि भी है। दूसरे बनों के कट जाने से लकड़ी की कमी हो गई और उस के स्थान में भोजनादिक बनाने में गोबर के उपलों का व्यवहार होने लगा कि जो और भी खाद की न्यूनता से कमी पैदावार का कारण हुआ। अब देख लीजिये शंका करने वाले की इच्छा के विरुद्ध बनों का कट कर खेत हो जाना दो कारण अकाल और अनावृष्टि के बन गये। इस के अतिरिक्त बनों के कट जाने से पशुओं के चरने की भूमि भी कम हो गई कि जिस से बड़ी भारी हानि इन परमोपयोगी, जगत्‌हितैषी पशुओं के पालने में हो गई और साथ ही पुष्टकारक मसाले और औषधियों की बनों के कट जाने से कमी हो गई। अतएव इन उपरोक्त छः कारणों से जो पृथक् २ हानि पहुँचा रहे हैं सिद्ध हुआ कि गोबध विशेष कर इस मँहगी का मुख्य हेतु है। याद रक्खो और घोर निद्रा से जागो कि यह केवल गौओं का नाश नहीं है,

वरंच अन्न के असंख्य भंडारों में अग्निका लग जाना वा देश भर को सर्वनाश कर देना है ।

(द्वितीय शङ्का) आप चाहे गोवध को अन्न की मँहगी का कारण बतलावें परन्तु हमारी बुद्धि में तो विदेशों को अन्न का जाना इस मँहगी का मुख्य हेतु है । देखिये १० जनवरी सन् १९०८ के हिंदुस्तान पत्र लाहौर ने लिखा है कि जनवरी सन् १९०७ से अक्तूबर तक १० मास में केवल पंजाब प्रदेश से २०, ७६९, ५९१, हंडरवेट गेहूँ (हंडरवेट ५६ सेर के लगभग होता है) कराची बंदर से जहाजों द्वारा बाहर गया। उस साल जब कि देश की दोनों फ़सलों का नाश हो चुका है मँहगी और अकाल के हो जाने में आश्चर्य ही क्या है । यह तो केवल १ सूबे का हाल है दूसरे सूबों से अन्य बंदरों द्वारा जो गया वह अलग रहा । यदि यह सब अन्न हमारे देश में ही रहता तो अन्न की मँहगाई न होती ।

(उत्तर) निस्संदेह इस में हम भी सहमत हैं और इसी कारण अपनी इस पुस्तक में पीछे लिख आये हैं कि (दूसरे छोटे २ कारणों के अतिरिक्त कि जो वे भी इन संकटों के सहायक हो रहे हैं बड़ा भारी मूल कारण गोवध है) सो उन में एक छोटा कारण विदेश को अन्न का जाना भी है क्योंकि एक विघ्न के अनेक कारण होते हैं जो मुख्य होता है वही दूर करने से सब दूर हो जाते हैं । क्या आप इस बात को स्वीकार नहीं करते कि जिस बाग़ में १०० वृक्ष आम के होवें और उन में से ८० वृक्ष काट डाले जावें तो शेष २० वृक्ष भी उतना ही फल देंगे कि जितना पहले १०० देते थे और फिर आम का उन ८० वृक्षों के कट जाने के पश्चात् भी वही भाव रहेगा जो पहले था ? नहीं कदापि नहीं, यह तो स्पष्ट

ही है कि जितनी गौएं मारी जाती हैं उतने बच्चे पैदा नहीं होते तो सिद्ध हुआ कि बैलों की उत्पत्ति के बृक्ष की कमी हो गई। पस बैल कम पैदा होने से मँहगे अवश्य मिलेंगे जैसा कि सरकारी नक़शों तक में स्वीकार किया गया है कि एक शताब्दी के भीतर बैलों का मूल्य प्रति सैकड़ा तीन सौ रुपये अधिक हो गया, अर्थात् जो बैल पहले १०) रु० में मिलता था वह अब ४०) रु० में मिलता है कि जिन के कम मिलने से खेतों की जोताई कम होने लगी और गाय बैलों की न्यूनता से खाद भी कम हो गई कि जो दोनों कारण कमी पैदावार के हो गये। यदि गाय व बैलों की वैसी ही अधिकता रहती जैसी कि पहले थी, और फिर विदेशों को अन्न भी जाता रहता तो अन्न का भाव इतना मँहगा न होता। क्या आप नहीं देखते कि इस देश में इतनी अधिकता से अन्न उपजता था कि देशवासियों की आवश्यकता दूर हो जाने के पश्चात् करोड़ों मन हर साल कोठों और खत्तों में चिरकाल तक बंद रहता था। जैसे कि आप के लेखानुसार भी दोनों फसल नष्ट हो जाने पर भी करोड़ों मन अन्न भी बाहर चला जा रहा है और फिर भी इस देश की रत्नगर्भा भूमि सस्ता मँहगा जैसे हो यहां वालों की भी जठराग्नि की ज्वाला को बुझाती है। इस से सिद्ध हुआ कि यदि गायें पहले की भांति अधिकता से होतीं तो उन से पैदा हुए अन्न का तो हिसाब ही क्या है हमारे पूर्व लेखानुसार पचास करोड़ मन खाद की कमी का ही अन्न विदेशियों को काफ़ी होता। शोक तो यह है कि इधर तो खेती का मुख्य साधन अर्थात् गाय बैल कम हुए, और दूसरी ओर विदेश को अन्न जाने लग गया। प्रियवर सज्जनो! याद रक्खो और विश्वास

करो, यदि गाय बैल यहां पहले की भांति अधिकता से होते तो यह विदेश को अन्न का जाना ऐसा था कि जैसा पृथ्वी की गोलाई में बड़े २ पर्व्वत या नारंगी की गोलाई में उस का खुरदरापन कुछ भी फ़र्क नहीं डाल सकता। ज़रा आईन अकबरी नामक पुस्तक को देखिये कि उस में उपज के लिहाज़ से भूमि के चार दर्जे स्थापित किये हैं जिस में अव्वल दर्जे की भूमि का नाम फ़ारसी भाषा में पौलिज रक्खा है उसकी रबी की फसल की पैदावार का निम्न लिखित आशय है अर्थात् पोलिज भूमि हरसाल और हर फ़सल में बोने योग्य रहती है। उस के १ बीघे में अव्वल नम्बर का गेहूं १८) मन और मध्य श्रेणी का १२) मन और तीसरी क़िस्म का ८॥)५ आठ मन पैंतीस सेर अर्थात् कुल अढ़तीस मन पैंतीस सेर होता है, परन्तु जो कि उस समय का मन आजकल के २६ सेर की बराबर था। इस से २५) मन अंग्रेजी मन से १ बीघे की गेहूं की पैदावार हुई। अब आप देखते हैं कि बंदोबस्त में जो भूमि उच्च श्रेणी की मानी गई है उस की उपज उस हालत में कि जब उस की सिंचाई और खाद का पूरा प्रबन्ध किया जावे १८) मन फी बीघा रक्खी है। इस से विदित हो गया कि महाराजाधिराज अकबर के समय से अर्थात् अढाई सौ वर्ष में ही पैदावार अन्न की अढाई हिस्से से १ हिस्सा रह गई। इस के अतिरिक्त पहले समय के छोटे २ राजा महाराजाओं की सेना की आजकल के सम्राटों से अधिकता और राज्य कोष का भरपूर रहना कि जिस में से महमूद ग़ज़नवी जैसे कई बादशाह सहस्रों ऊंट सोना चांदी व जवाहरात से भर कर ले गये और फिर उस के पश्चात् दिल्ली के बादशाहों की उदारता और फजूलखर्चियां जिन का थोड़ा सा वर्णन हम आगे करेंगे

स्पष्ट सिद्ध करती हैं कि यदि अन्न की अधिक उपज से माल-गुज़ारी में अधिक न मिलता तो इतनी उदारता और लूट होने पर भी ख़ज़ाना कैसे मालामाल रहता, इसी से यहां की वसुंधरा को रत्नगर्भा कहा गया है, परन्तु अब गौओं की कमी से पैदावार अन्न की बहुत कम हो गई और यदि अब भी रोक न हुई तो न मालूम देश की क्या दशा होगी। अब आप ही न्याय कीजिये कि यदि उतनी ही पैदावार अन्न की होती चली जाती तो विदेश को अन्न का जाना क्या कुछ हानि कर सकता था? नहीं कदापि नहीं, इस से हे भाइयो! अब घोर निद्रा से जागो और अंतिम फल को सोच गोरक्षा पर कटिबद्ध हो जाओ, नहीं तो पछताओगे और इस समय को फिर न पाओगे।

अब द्वितीय संकट अर्थात् रोगों की वृद्धि का होना सिद्ध किया जाता है—जो कि पूर्व काल में खेतों में गोबर की खाद का व्यवहार होता था जो अपने अपूर्व रासायनिक पदार्थों के योग से कि जो उस में होते हैं बड़ी भारी अन्न को बलकारक एवम् आरोग्यवर्द्धक कर देती थी परन्तु अब जो कि पशुओं की न्यूनता से गोबर की खाद का मिलना कठिन हो गया और इस के स्थान में किसानों ने बिष्टा का उपयोग खेतों में करना आरम्भ किया कि जो शहरों में म्यूनिसिपिल्टी की ओर से एक प्रकार का व्यापार हो गया है। क्या आपने नहीं देखा है कि शहरों में खेतों के भीतर दो दो तीन तीन फुट गहरी बिष्टा डाल कर उन में नाना प्रकार की जिंस अर्थात आलू गोभी पौंडा मूली आदिक बो देते हैं। और इस के प्रभाव से एक फसल में कई बार फल ले लेते हैं। यह तो स्पष्ट ही है कि जो पदार्थ उन में बोये जावेंगे उन में बिष्टा

का अंश अवश्य होगा। बल्कि यह कहिये कि उस का सत या सार उस तरकारी व अन्न में प्रवेश कर जावेगा। एक ज़रासी बात को देख लीजिये कि बहुधा वैद्य लोग बतलाया करते हैं कि अमुक काढ़े के नीचे अमुक वृक्ष की लकड़ी की आग देना या इस औषधि को इतने दिन अमुक वस्तु के भीतर दबा देना। अतएव जिस प्रकार उस लकड़ी की आग का गुण उस औषधि में प्रवेश कर जाता है तो क्या उस विष्ठा अथवा मैले का सार भाग उस तरकारी अथवा अन्न में प्रवेश न करेगा। और क्या यह अन्न या तरकारी की अधिकता जो अस्पर्श्य खाद से हुई वह रूपान्तर में उस विष्टा का अंश नहीं है? अवश्य है। निःसन्देह है। अतएव जब उस मल मूत्र का सारांश उस तरकारी वा अन्न में प्रवेश कर गया और प्रत्येक नगरवासियों के खाने में आना प्रारम्भ हुआ अर्थात् जब शनैः शनैः उस का सारांश हमारे शरीर में संग्रह होता गया तो काफ़ी तादाद हो जाने पर वही हमारे असाध्य रोगों का कारण हो गया, फिर ऐसे भृष्ट तत्काल फलदायक रस के सेवन करते क्या आवश्यकता है कि हम अधिक दिनों तक पहले की भांति शय्या सेवन करके अपना उपार्जित धन वैद्यों को देवें और वृथा कुटुम्ब वालों को अपनी सेवा का कष्ट देवें। सज्जनो! इसी कारण हमारे त्रिकालदर्शी महर्षि गणों ने बोये हुये खेत के भीतर अथवा बाग़ और जलाशयों के समीप मल मूत्र का त्याग महा पाप लिखा है और यही कारण है कि आज कल की सफ़ाई अपना कुछ प्रभाव जमा रोगों को दूर नहीं कर सकती। अतएव गोबर की खाद का अभाव जो गौओं की न्यूनता और गोबध के कारण हुआ और जिस के अभाव में विष्ठा की भृष्ट खाद के डालने की पृथा प्रचलित हुई प्रथम कारण रोगों की वृद्धि का हुआ।

(२) जिस समय गायों की अधिकता के कारण घी का भाव सस्ता था उस समय चर्बी का भाव मँहगा था, दोयम मनुष्यों के हृदय का धर्म भाव भी कम न हुआ था। इस कारण घी में चर्बी या किसी और हानिकारक वस्तु का उपयोग नहीं होता था। वर्त्तमान काल में जब कि गायों की न्यूनता से घी का भाव सेर व तीन पाव तक पहुँच गया तो भृष्टाचारी लोगों ने उस के भीतर चर्बी आदिक घृणित वस्तुओं का उपयोग करना प्रारंभ किया। चुनांचे बड़े बड़े नगरों में तो अधिकतर चर्बी मिश्रित ही घी बिकता है। सन् १८९८ ई० के 'भारत-मित्र' समाचार-पत्र से ज्ञात हुआ था कि कलकत्ते के घी को डाक्टरों ने जांचा तो उस में फ़ीसदी ८० मन गाय शूकर आदिक पशुओं की चर्बी पाई गई कि जिस के कारण तेरह दूकानदार वैश्य जो इस स्वास्थ्य नाशक नीचकर्म्म के करने वाले थे बिरादरी से अलग किये गये। और वे सहस्रों कनस्तर ऐसे घी के शीघ्रता से अन्य दिसावरों को भेज दिये गये। अब ध्यान देने योग्य बात है कि यह कर्म्म हिन्दू मुसल्मान दोनों मतों के धर्म्म नाश के अतिरिक्त कितना बड़ा कारण स्वास्थ्य के बिगड़ने का है। इसी तरह से विदेशी खांड अर्थात् कंद का हड्डियों और बैल के रक्त से साफ़ करना और अधिकता के साथ उस का देश में व्यवहार होना रोगों की वृद्धि का कारण हुआ। पस चर्बी को घृत में मिश्रित करने की घृणित प्रथा जो गायों को न्यूनता और गोबध के कारण प्रचलित हुई दूसरा कारण रोगों की वृद्धि का हुआ।

(३) तृतीय—जब घी दूध सस्ता था तब यह धनी निर्धन सभी को खाने को भली भांति मिलता था कि जिस

से उन के मुख्य अंग प्रत्यंग सब बलवान् होते थे। यदि उन को दैवात् कोई रोग भी हो जाता था तो उस से वे शीघ्रता से आरोग्य हो जाते थे। हम पहले अपने लड़कपन की अवस्था में देखते थे कि जब कभी अहीर जाट आदिक किसानों को ज्वर हो जाता था तो वे तुरन्त हल जोतना और परिश्रम करना आरंभ कर देते थे कि जिस के करने से ज्वर का पता भी नहीं लगता था। परन्तु इस समय ऐसा हम किसी को नहीं पाते कि जो दो एक दिन के ही ज्वर आजाने से फ़सल भर को बेकार न हो गया हो। परिश्रम करना तो अलग रहा बिना सहारे उठना बैठना भी कठिन हो जाता है। पहले रोगी चार छः मास तक शय्या पर पड़ा रहता था। वैद्य, डाक्टरों के इलाज से चाहे मन की उमङ्ग निकल जाती थी परन्तु अब तो खाट पर पड़ा नहीं कि यमपुर को प्रस्थान किया। इलाज की आशा मन की मन में ही रह जाती हैं। वृद्ध लोग जो थे कहा करते थे कि बेटा तुमने इतना पानी नहीं पीया है कि जितना हमने घी दूध खाया है। यह कहना उन का सत्य है क्योंकि अलाउद्दीन के समय का तो कहना ही क्या है कि जब एक पैसे का डेढ़ पाव घी मिलता था। किन्तु ग़दर के समय में भी कि जिस को केवल पचास ही वर्ष हुए हैं एक पैसे का छटांक सवाछटांक घी मिलता था। यही कारण है कि उन का बल अब तक वैसा ही है। वे इस वृद्धावस्था में भी हम से अधिक बलवान् हैं, उन के नेत्रों की ज्योति अभी वैसी ही बनी है। एक हम हैं कि जहां चौदा पन्द्रह वर्ष की आयु हुई कि नेत्र रोग को शौर्ट साइट कह चश्मा लगाना आरम्भ कर दिया। या नज़ला उतर ने से अन्धे हो गये, और क्यों न हों? देखिये मनुष्य तो

सजीव हैं किन्तु बिना चिकनाई के मिलों की निर्जीव कलों के पुरजे भी नहीं चल सकते। ऐसे ही गाड़ी या कोल्हू और चरखे आदि के लोहे में यदि चिकनाई न लगाओ तो उस के पुरजे शीघ्र घिस कर नष्टभ्रष्ट हो जावेंगे। फिर क्या आप नहीं जानते कि मोम या चर्बी की चिकनाई से मोमबत्ती, मिट्टी के तेल से लैम्प और नाना प्रकार के तेलों से साधारण दीये जला करते हैं और घी के सहारे मंदिरों में चकाचौंध रहती है। तात्पर्य्य यह है कि बिना चिकनाई के चाहे वह किसी प्रकार की हो रोशनी कदापि नहीं ठहरती, तनिक तेल या घृत का अभाव हुआ कि ज्योति नष्ट हुई। सज्जनों! जब साधारण तुच्छ दीयों वा लैम्पों की यह दशा है तो क्या ईश्वरीय रचना के अद्वितीय अनुपम दिया अर्थात् मनुष्यों के नेत्रों की ज्योति कि जिस से संसार के सब काम चलते हैं बिना चिकनाई स्थिर रह सक्ती है? नहीं कदापि नहीं। इस से सिद्ध हुआ कि पुराने मनुष्यों ने जिन की उत्पत्ति ग़दर से दस बीस वर्ष प्रथम की है। खूब घी दूध खाया है, उन के नेत्रों के दीये में अभी चिकनाई बाक़ी है। हमारे व्यवहार में जो कि घी दूध औषधि की नाईं आता है इसी से हमारी आंखों के चिराग़ टिमटिमाने लगते हैं। इस के अतिरिक्त हम लोग युवा अवस्था से ही बवासीर, धातुक्षीणता और प्रमेहादिक रोगों में फंस जाते हैं। कोस आधकोस चले कि हांपने लगते हैं। तनिक दो एक वमन या दस्त हुए कि अंग शिथिल हो संसार से चल बसे। अतएव यदि गोवध के कारण गौओं की न्यूनता न होती तो यह घृत अथवा दुग्ध लगभग उसी भाव में हम को मिलते रहते और फिर ये नाना प्रकार के रोग हमारे शरीर को अपना

निवास-स्थान बना अवसर पा हमारे अकालमृत्यु का कारण न होते, इस से सिद्ध हुआ कि घी वा दूध की अलभ्यता कि जो गौओं की न्यूनता और गोबध से हुई तीसरा कारण रोगों के फैलने का हुआ।

(४) चौथे—प्राचीनकाल में यहां स्थान २ पर यज्ञादिक होते थे जिस के कारण वायु की शुद्धि हो यथेच्छा वर्षा का कारण और रोगों के नाश का हेतु होता था इस में विशेष प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। इस को यूरोपीय विद्वान् भी मानते हैं कि अग्नि में किसी बलकारक औषधि के डालने से जो धुआँ उस से उठेगा वह दूषित वायु को पतला कर बाहर निकाल देवेगा, और शुद्ध वायु प्राप्त कर आरोग्य का कारण होगा। इसी से संक्रामक रोगों में वायु शुद्धि को डाक्टर लोग भी गंधक का अग्नि में डालना रोगनाशक बताते हैं। हकीम लोग भी ऐसे समय में अम्बर या ऊद जो एक प्रकार की सुगंधित औषधि है जलवाते हैं। परन्तु जो कि हमारे महर्षिगण पदार्थ-विद्या वा विज्ञान-शास्त्र के पूर्ण ज्ञाता थे अतएव वे इन वस्तुओं के अतिरिक्त गुर्च, सोमलता, कर्पूरादिक को घृत तिल हलवा व खीर सहित अग्नि में हवन कर वायु की शुद्धि करते थे। अब जो कि घी दूध कि जिस से यज्ञादिक कार्य्य होते थे खाने को भी प्रति सैकड़ा पांच मनुष्यों को नाम मात्र कठिनता से मिलते हैं फिर किस की शक्ति है कि पूर्व समय के अनुसार यज्ञ करे। अतएव यज्ञादिक शुभ कर्म्मों का न होना जो गोबध वा गौओंकी न्यूनता के कारण से हुआ चौथा कारण रोगों की वृद्धि का हुआ।

(५) पंचम—गोमांस का सेवन भी इन संक्रामक रोगों की वृद्धि का हेतु है इस को हम मुसलमानी ग्रंथों और डाक्टरों

के कथन से सिद्ध करेंगे। यहां हम मूल भाषा को छोड़ उस का भावार्थ लिखेंगे। यदि असली लेख देखना हो तो आप हमारी बनाई उर्दू की पुस्तक (नुसखे दाफ़अ मसायबे हिन्द) को देखें।

देखो (तोहफ़तुल् मौमनीन) नामक ग्रन्थ में जो यूनानी वैद्यक का मान्य ग्रन्थ है लिखा है कि गोमांस बहुत गरिष्ट व गर्म है। पित्त सम्बन्धी रोगों का कारण और कुष्ट, पागलपन, दाद, गंज आदि संक्रामक रोगों का हेतु है और दांतों और मसूढ़ों के रोगों को पैदा करता है। उसी पुस्तक में गो दुग्ध के ये गुण लिखे हैं अर्थात् उस के तुरन्त निकले दुग्ध का पीना मस्तिष्क को बलकारक और भूल और पागलपन की बीमारी को दूर और चेहरे का रंग सुर्ख करता है। ऐसे ही उस के गर्म दूध का सेवन पुष्टिकारक है और स्मरण शक्ति को बढ़ाता और अनेक रोगों को दूर करता है। मौलवी फ़र्रुख़ी साहब उस्ताद हिज़हाइनेस श्रीमान् नव्वाब साहब रामपुर अपनी पुस्तक (बर्कत बग़ैर हरकत) में गोमांस के बहुत से दोष दिखलाते हुये लिखते हैं कि आजकल का रोग कि जिस को अंग्रेजी में कैनसर कहते हैं (जो मुँह में एक ज़ख़्म हो जाता है अव्वल डाढ़ या दांत की जड़ में या गाल में अन्दर की ओर थोड़ा सा चमड़ा छिल जाता है फिर घाव बढ़ते बढ़ते सम्पूर्ण जबड़े के मांस को गला देता है और उस की बदबू के मारे पास खड़ा नहीं हुआ जाता) गो मांस खानेवालों को अधिकता से होता है और असाध्य होजाता है, और अपनी आंखों देखे कई ऐसे श्रीमानों के दृष्टान्त दिये हैं कि जो बहुत इलाज करने पर भी नहीं बचे। आंखों की सूजन, सिर दर्द, गंज इस मांस के खाने वालों में

सैकड़े पीछे अस्सी के मिलेगी। ऐसे ही अबूदा ऊद ने मरासील नामक पुस्तक में लिखा है कि पैगंबर साहब ने फ़रमाया है कि गोमांस बीमारी व गोघृत दवा और गोदुग्ध सिफ़ा अर्थात् आरोग्यता है। उपरोक्त संक्षिप्त वाक्यों से सिद्ध होता है कि गोमांस अनेक रोगों का कारण और गोदुग्ध और गोघृत परमौषधि हैं। अतएव जब गोबध से गोमांस भक्षण की अधिकता और इस रोग नाशक दूध और घृत के वृक्ष नष्ट हो गये तो क्या यह पांचवां कारण रोगों की वृद्धि का नहीं है? अवश्य है निस्संदेह है। प्रियवर सज्जनो! सत्य मानो, निश्चय जानो, गाय बैल हमारे सम्पूर्ण सुखों के मूल हैं। यदि ये न होते तो मनुष्यों का जीवन भी कठिन होता। इसी से परमेश्वर ने हम हिन्दू, मुसल्मान और ईसाइयों की कृतघ्नता से रुष्ट हो इस के पलटे में दंड स्वरूप प्लेग व महामारी जैसे असाध्य रोगों को इस देश में भेजा है। गोबध को बंद कीजिये फिर देखिये कि ये रोग सात समुद्र पार जाते हैं या नहीं। यदि हमारी शिक्षा न मानी तो न मालूम और कौन २ दैवी कोप इस देश पर होवेंगे।

(शंका) तुम जो यह कहते हो कि गायों की न्यूनता से यह नाना प्रकार के रोग इस देश में फैल गये हैं यह सत्य नहीं मालूम होता। वरन् हमारी बुद्धि में तो यह साधारण व संक्रामक रोगों की वृद्धि देश में जन संख्या के बढ़ जाने से हो रही है। क्योंकि दुर्गन्धित परमाणुओं की अधिकता कि जो मनुष्य संख्या की अधिकता के कारण उत्पन्न होते हैं जल वायु अर्थात् आब हवा को दूषित कर रोगों की वृद्धि का हेतु होते हैं और घी दूध की मँहगी का कारण भूतकाल से वर्तमान काल में प्रजा के पास धन की अधिकता

है। इस से जन संख्या के अधिक होते हुए प्रजा का लक्ष्मी-पात्र व धनवान होना घी दूध की आवश्यकता को बढ़ा कर इन दोनों वस्तुओं के मँहगा होने का कारण हुई।

(उत्तर) यह आप का विचार कि आबादी की वृद्धि रोगों की वृद्धि का हेतु है और पहले समय से इस समय प्रजा का लक्ष्मीपात्र व धनवान होना घृत दुग्ध की मँहगाई का मुख्य कारण है इतिहास-वेत्ताओं को सत्य नहीं विदित होता वरंच भ्रम मात्र है। मेरी बुद्धि में तो पहले समय से इस समय मनुष्य संख्या की अधिकता भी नहीं है। जो अधिकता हुई है वह इस तीस चालीस वर्ष से इधर की है क्योंकि पहले समय में लड़ाई झगड़ों व मुसल्मान बादशाहों के अत्याचारों से अधिकता के साथ मनुष्य संख्या घट गई थी।

अब जब बृटिशराज्य के प्रताप से देश में फिर शान्ति देवी विराजमान हुई तो फिर मनुष्यसंख्या बढ़ने लगी परन्तु जिस को पूर्व काल कह देश पुकारा जाता है, उस से अभी बहुत कम है। इस की पुष्टि को थोड़े से प्रमाण हम भूतकाल में मनुष्य संख्या की वृद्धि की बाबत लिखते हैं। कृपा कर सुनिये।

देखिये इतिहासों में एक छोटे से राजा कन्नौज के विषय में यह लिखा है कि राजा के यहां अस्सी सहस्र सेना कवच-धारी और तीस सहस्र अश्वारोही और पांच लक्ष पियादह फौज थी, और नगर में तीस सहस्र दुकानें केवल तँबोलियों की और साठ सहस्र घर नृत्यकारिणी वेश्याओं के थे। ध्यान का स्थल है कि जब तँबोलियों व वेश्याओं की यह संख्या है तो शेष उन की निर्वाह करने वाली प्रजा कितनी होगी। ऐसे ही महाराजा महानंद मगधाधीश की सेना में

इतिहास-लेखकों ने छः लाख पैदल व बीस हज़ार सवार व नौ हज़ार जंगी हाथी लिखे हैं और इसी के तुल्य महाराजा पृथ्वीराज दिल्लीपति की सेना लिखी है।

फिर मथुरा नगर के विषय में सुलतान महमूद ग़ज़नवी ने अपने पत्र में जो यहां से ग़ज़नी को अपने मंत्रियों के नाम रवाना किया था लिखा है कि इस नगर में एक हज़ार महल ऐसे हैं कि जिन की कुरसियां आकाश से बातें कर रही हैं और अधिकांश उन में पत्थर के हैं। मंदिरों की तो वहां संख्या ही नहीं हो सकती। अगर कोई चाहे कि उन के समान एक मकान बनावे तो एक लक्ष स्वर्ण मुद्रा के खर्च से दो सौ वर्ष के अरसे में जब कि बनाने वाले अपने कार्य्य में कुशल और प्रवीण हों निर्माण कर सकेगा.............. अतएव जब एशियाई बादशाह की दृष्टि में प्रजा के मकानों की यह प्रतिष्ठा थी और अगणित ऐसे मकान व मन्दिर थे तो प्रजा भी अधिकता के साथ होगी। यह भी आप ने इतिहास में देखा होगा कि इस बादशाह ने बारह चढ़ाई इस देश पर की हैं, और यहां की लूट से सहस्रों ऊंट बहुमूल्य जवाहिरात व सोने चांदी के भर कर अपने देश में ले गया था। इस के पश्चात् सन् ११९४ ई० में शहाबुद्दीन गौरी ने बनारस से लगा कर बंगाले के द्वार तक लूटा था, इस लूट में चार हज़ार ऊंट हीरे याक़ूत और मोती सोना आदिक के भर कर ले गया। फिर इस के दो साल बाद गुजरात की राजधानी अनहलवाड़े को लूटा। इतिहास-लेखक लिखते हैं कि इस लूट में बादशाह के अतिरिक्त सिपाहियों के हाथ इतनी दौलत आई कि एक २ सिपाही पूर्ण धनवान् हो गया, फिर उज्जैन की लूट में जिस को शमसुद्दीन अलतमश ने लूटा था सहस्रों मन जवाहरात व सोना चाँदी बादशाह के हाथ आया।

फिर सन् १२९४ ई० में अलाउद्दीनख़िलजी ने दक्खन में देवगढ़ पर चढ़ाई कर वहां के राजा से एक हज़ार मन चाँदी छः सौ मन सोना, सात मन मोती और दो मन हीरा, पन्ना, नीलम आदि बहुमूल्य जवाहरात और ४ सहस्र रेशमी थान और बहुत सा माल जो अनुमान से बाहर है लिया। इससे पहले वह प्रजा से पचास मन सोना और कई मन मोती और बहुत सी बहुमूल्य वस्तु ले चुका था। फिर सन् १२९७ ई० में गुजरात और रनथंभौर को लूटा। इन में पहले से भी अधिक धन बादशाह और सेना के हाथ आया। फिर सन् १३९५ ई० में अमीर तैमूर ने दिल्ली मेरठ आदि नगरों को लूटा, इस में बादशाह और सेना के हाथ जो बहुमूल्य हीरा याक़ूत सोना आदिक आया, वह अनुमान से बाहर था। इस के अतिरिक्त मिस्टर फ़िच साहिब यूरोपियन यात्री ने इस लुटे हुये देश के जो वृत्तान्त अपनी चिट्ठी में स्वयं लिखे हैं वे संक्षिप्त से नीचे लिखे जाते हैं।

अर्थात सन् १५८५ ई० में मैं हिन्दसागर के किनारे से भीतर की ओर चला और बेलगांव में पहुँचा कि जहां एक बहुत बड़ा बाज़ार हीरों और बहुमूल्य जवाहरात का देखा। वहां से चल कर बीजापुर पहुँचा। यहां जंगी हाथियों का वैभव और सोने व चांदी की अधिकता देख कर मैं भौंचक व अवाक रह गया। वहां से गोलकुंडह पहुँचा। यह नगर अतीव स्वच्छ व मनोहर था। मकानात बहुत दृढ़ बने थे नगर के निकट मिष्ट एवम् मधुर मेवों के वृक्ष और उस के आस पास रत्नगर्भा हीरेकी खानें थीं। वहां से प्रस्थान कर ख़ानदेश की राजधानी बुरहानपुर में पहुँचा। यह खण्ड ऐसा स्वच्छ और नरपरिपूर्ण था कि उस की शोभा और

असापत देख कर मैं चकित रह गया। यहां हिंदू प्रजा के बालकों की बारातें देखने में आईं उन में ऐसी अधिकता से जलूस देखने में आया कि मैं अकचका गया। वहां से चल कर मालवा देश की राजधानी मांडू में पहुँचा, यह नगर अतीव दृढ़ता से निर्मित हुआ है यहां तक कि अकबर बादशाह ने बारह वर्ष तक जीतोड़ युद्ध कर उस को प्राप्त किया था। मांडू से चल कर मैं अकबराबाद पहुँचा यह नगर अति विस्तृत व आबाद था और लंदन नगर से अधिक शोभायमान था लेकिन उस समय में बादशाह फतहपुर सीकरी में रहते थे और यह नगर अकबराबाद अर्थात् आगरे से भी शोभायमान और विस्तृत था, और इन दोनों नगरों के मध्य में जो रास्ता था वह बिलकुल बाज़ार प्रतीत होता था, बरन मनुष्यों के आवागमन की अधिकता से रास्ते की शोभा नगर होने का भ्रम उत्पन्न कराती थी। फिर आगरे से इलाहाबाद होता हुआ मैं बनारस पहुँचा और इस बहुत बड़े पूजनीय स्थान और व्यापारिक मंडी को मैं ने बहुत बड़े आश्चर्य की दृष्टि से देखा। जो स्वर्गवत् मनोहर मन्दिरों से परिपूर्ण था। शाही दरबार के विषय में मिस्टर फ़िच साहब ने लिखा है कि ऐसी दौलत मैंने कभी नहीं देखी। सोने की तराज़ू पर प्रथम सोने व जवाहरात और फिर अन्य २ पदार्थों से बादशाह तुलता था और वह सब उसी जगह लुटा दिया जाता था। अकबर लोगों को इनाम बहुत देता था, और सोने चांदी के बादाम दरबारियों पर फेंकता था, और दर्बारी जैसे आकाश तारों से जगमगाता है हीरों से शोभायमान होते थे। पांच हज़ार हाथी उस की हस्तीशाला में थे। और बारह हज़ार ख़ासे

के घोड़े थे जिन के सुनहरी रत्न जड़ित साज़ देखने से आंखें चौंधयाती थीं। और सवारों के शरीर पर कमख़्वाब की वरदियां जगमगाती थीं। इस के पश्चात् सन् १६१५ ई० में सर टामसरो साहिब जो जहांगीर बादशाह के समय में सफ़ीर हो कर आये थे वे लिखते हैं कि सोना व जवाहरात चारों ओर फैला हुआ देख कर मेरी आंखें चौंधया गईं। विशेष कर जब मैं ने शाही हाथियों के मस्तकों पर जवाहरात चमचमाते हुए देखे। रास्ते में चित्तौढ़गढ़ देखा यह नगर बिलकुल दूसरा स्वर्ग बना हुआ था। लगभग सौ मन्दिर और बहुत से ऊंचे ऊंचे महल और अगणित घर एक उच्च पर्वत के शिखर पर शोभायमान थे।

इस के पश्चात् सन् १७३९ ई० में नादिरशाह दिल्ली में लूट मार कर के ७२ करोड़ का धन ले गया जो। उस के सेना वालों ने लिया वह भी बेशुमार था। हमने यह हर सदी का हाल संक्षेप से लिखा है। अब ध्यान देना चाहिये कि जिस लुटे हुए देश को देख कर यूरोपियन यात्रियों की आंखें चौंधिया गईं उस का हाल उस के पूर्णोन्नति के समय में क्या होगा।

देखिये आगरा और फतहपुर सीकरी में १९ कोस का अंतर है और वह १९ कोस मनुष्यों के आवागमन की अधिकता से शहर सा मालूम होता था। फिर आगरा व क़न्नौज व मथुरा की आबादी और शोभा जो ऊपर लिखी है उसे सोचिये। और छोटे से राजा क़न्नौज की सेना पर ध्यान दीजिये। उस समय हिन्दुस्तान में ऐसे २ सौ पचास राजा थे कि जिन के पास भी इन से कम फ़ौज न थी।

अब ध्यान दीजिये कि जब यहां इतनी फ़ौज और अगणित महल व मंदिर और तीस हज़ार तंबोलियों की दुकानें और साठ हज़ार वेश्याओं के घर थे, तो और प्रजा कितनी होगी ? बिना प्रजा की अधिकता और उस के धन पात्र होने के इतनी २ बड़ी सेनाओं का ख़र्च कैसे चलकर राजकोष धन से परिपूर्ण रह सकता है। नगरों की मनोहरता और राजदर्बार की अकथनीय शोभा स्पष्ट बतला रही है कि प्रजा पूर्ण धनवान् और सुखी होगी। बिना व्यापार व मालगुज़ारी की अधिकता के जो पैदावार की अधिकता की दशा में हो सकता है कदापि पहले राजाओं और बादशाहों के ऐसे अपरिमित व्यय नहीं हो सकते थे। अस्तु—इन संक्षेप उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट विदित है कि पूर्वकाल में मनुष्य-संख्या भी अधिक थी और पृथ्वी की उपज अच्छी होने से प्रजा भी धनपात्र थी, और इस के साथ ही अमनचैन और प्रजा की निर्भयता भी अब से अधिक होगी, क्योंकि जब मिस्टर फ़िच लिखते हैं कि बेलगांव में एक बहुत बड़ा बाज़ार बहुमूल्य हीरे आदि जवाहरात का देखा और जवाहरात व सोने चांदी को चारों तरफ़ फैला हुआ देख कर मेरी आंखें चौंधिया गईं तो अब ध्यान दीजिये कि वर्त्तमान काल में भी किसी नगर के बाज़ार में सोना चांदी और जवाहरात फैला हुआ दिखाई देता है ? अगर कहीं है तो जौहरियों की बंद संदूकों के भीतर होगा। ऐसे अदृश्य संदूकों से आंखें नहीं चौंधिया सकतीं। फिर बाज़ारों में वे ही वस्तु बाहर रक्खी रहती हैं कि जिन की साधारण मनुष्यों तक को नित्य आवश्यकता रहती है। इस से जब हीरा आदि रत्न बाज़ारों में मौजूद थे तो ख़रीदार भी उस के हर समय होंगे। जो प्रजा व

रईसों के अतिरिक्त नहीं हो सकते और इस प्रकार बाज़ारों में रत्नों के रखे रहने से सिद्ध हो गया कि राज्य के सुप्रबंध से उस समय डाकू व चोर आदिक का भय भी बहुत कम था। क्योंकि आज कल अंगरेजी राज्य में जो अमन अमान का समय कहलाता है तहसील के छोटे २ ख़ज़ानों में भी सिपाही बंदूक़ लिये पहरा देते रहते हैं। बाज़ारों में जवाहरात का दिखलाई देना तो स्वप्नवत् हो रहा है। फिर ऊपर लिखा गया है कि देवगढ़ की प्रजा से अलाउद्दीन ख़िलजी ने पचास मन सोना और कई मन मोती लिये थे भला अब तो कोई बड़े से बड़ा नगर इस छोटे नगर की समता कर इतना धन दिखलादे। खेद का विषय है कि आज कल देहली में जो मोती बाज़ार है जहां कभी मोती अवश्य बिकते होंगे वहां अब तरकारी बिकती है। चमकदार अंगूर और टिमाटरों को यदि रत्नों का रूपान्तर मान लिया जाय तो दूसरी बात है।

फिर घी दूध की मंहगाई जो आप देश के धनवान् होने का कारण बतलाते हैं यह भी सत्य नहीं, क्योंकि अभी सत्तर अस्सी वर्ष की अवस्था के निर्धन मनुष्य मौजूद हैं उन से पूछिये कि आप ने अपने बचपन और जवानी में कितना घी दूध खाया है उत्तर मिलने पर आप अवश्य आश्चर्य्य में पड़ जावेंगे। यह घी दूध का ही प्रताप है कि उन की नेत्रों की ज्योति और शरीर का बल आजकल के युवाओं से कहीं अधिक है। अब सिवाय बाहरी टीपटाप के रहा ही क्या है कि जो भारतवासी पेट भर घी दूध खावें। तनिक सर विलयम डिगबी. सी. आई. ई. सेक्रेटरी इंडियन पोलीटिकल एजेंसी लंदन की खुली चिट्ठी को जो ९ जनवरी सन् १८९१ को

आनरेबिल मेम्बरान हौस औफ कामन्स के नाम लिखी गई है देखिये:—

उस में सरकारी अफसरों की रिपोर्टों के आधार पर सिद्ध किया गया है कि औसत बचत प्रति भारतवासी मनुष्य की साढ़े चार आने वार्षिक है। यह बचत बिना शामिल किये शादी और ग़मी के खर्चों के है। और रईसों और सेठ साहूकारों की आमदनी भी इस औसत में शामिल है। अगर उन को अलग कर दिया जावे तो विदित हो जायगा कि दस बारह करोड़ भारतवासी आधा पेट अन्न कठिनता से प्राप्त कर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। वर्त्तमान काल की धन की अधिकता केवल उन्हीं मनुष्यों को मालूम होती है कि जिन के बाप दादा पहले निर्धन थे और समय के प्रताप और अंगरेजी स्वतन्त्र शिक्षा के कारण वे आज बाबू साहब बन गये हैं नहीं तो पहले जिन घरों में सोने चांदी के बर्तन और पीतल तांबे के कलसे मौजूद थे अब वैसे ही घरों में लोहे के डोल और टीन की बालटी अधिकता से मिलेंगी।

फिर रोगों की वृद्धि का कारण जो आप मनुष्यों की अधिकता से वायु का बिगड़ जाना बतलाते हैं तो यदि हम मान भी लेवें कि मनुष्य संख्या की अधिकता से ही यह हैज़ा व प्लेग आदिक संक्रामक रोग आजकल बढ़ रहे हैं, तो अब बतलाइये कि अब जो अठारह बीस वर्ष की ही अवस्था से दृष्टि मंद हो चशमे और ऐनकों की आवश्यकता हुई, और बवासीर और धातुक्षीणता आदि रोग पहले से दस गुना हो गये तो क्या मनुष्यों की अधिकता लोगों की दृष्टि को चाट गई या बवासीर और धातु क्षीणता का कारण वायु विकार हो गया। दूसरे प्रकृति का नियम है कि पिता के रंग रूप

और डील डौल पर पुत्र होता है परन्तु यदि आप इस समय के पिता पुत्र की तुलना करेंगे तो बड़ा भारी अन्तर पावेंगे। ऐसी ही दशा बल व शक्ति की भी है, कि जहां उन के बाप दादा साधारणतः चालीस पचास कोस तक पैदल चल सकते थे अब उन की सन्तान दो चार कोस चलने में हीं हांपने लगती है। ज़रा कर्नल टाड के बनाये हुये टाड राजस्थान नामी इतिहास को देखिये कि पंद्रह बीस वर्ष के राजपूत योद्धाओं अथवा क्षत्रिय वीरांगनाओं ने अकबर व अलाउद्दीन व औरंगजेब जैसे सम्राटों की फ़ौज के मुग़ल व पठानों को गाजर मूली की भांति काट डाला था, और बीसियों दफ़े ऐसी शक्तिशाली सेना को नीचा दिखलाया। हरीसिंह नलुआ के नाम से अब भी पठानों के बच्चे डरा कर सुलाये जाते हैं किन्तु अब हम उन्हीं हींग बेचने वाले निरस्त्र पठानों की सूरत देख कर थर २ कांपते हैं। तो क्या आप के कथनानुसार मनुष्य संख्या की अधिकता हो जाने से परमेश्वर ने औसत के हिसाब से आजकल की सन्तानों का बल पराक्रम और शरीर कम कर दिया। जब मनुष्य संख्या कम थी तो शरीर की लम्बाई व पराक्रम अधिक मिलता था। हा शोक! कब परमेश्वर हम को सुबुद्धि दे गोरक्षा में तत्पर कर उस के प्रताप से महाराना सांगा व सेवाजी वा प्रतापसिंह जैसे शूरवीर साहसी और पराक्रमी बनावेंगे।

॥ गोवध से अकाल मृत्यु का होना ॥

महाशयो! अब आप को मेरे इस संक्षेप निवेदन से यह तो विदित ही होगया होगा कि अन्न की मँहगी और नाना प्रकार के रोगों के इस देश में वृद्धि का मुख्य हेतु गोवध से

गायों की न्यूनता है। अब केवल यह सिद्ध करना शेष रहा कि गोवध कैसे इन अकाल मृत्युओं का कारण है और किस कारण से अधिकांश जवानों की ही मृत्यु होती है, और किसलिये वृद्ध माता पिता नहीं मरते, उमर भर रोने को बैठे रहते हैं मृत्यु उन के पास तक नहीं फटकती।

महाशयो! अब इस में अधिक प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैं निवेदन कर चुका हूं कि ये साठ सत्तर बरस की आयुवाले वृद्ध वे लोग हैं कि जिन के खाने पीने में घी और दूध पानी की भांति आया है कि जिस के कारण उन के अंग प्रत्यंग सब दृढ़ बने हुये हैं। यमराज के दूत या रोगादिक समय से पहले उन के पास नहीं फटकते। और ये आज कल के जवान वे लोग हैं कि जिन के व्यवहार में घी दूध दवा की तरह आता है। तनिक किसी रोग से पीड़ित हुये कि उदर पीड़ा व धातु क्षीणता से उस से निवृत्ति कठिन हो गई। अपने वृद्ध माता पिता अथवा युवा विवाहिता स्त्री को जीता छोड़ यमपुर की राह ली। दूसरे घी दूध के न मिलने से इधर तो मुख्य अंग बलहीन रहे उधर वीर्य्य भी पुष्ट न हो सका तो जैसे कच्चे बीज को खेत में बोने से प्रथम तो वह उगता ही नहीं जो उगा भी तो हरयाली के रूप में रहा फल फूल न लगा, यदि फल फूल भी आया तो बाल खाली होंगीं या पतले दाने होंगे, इसी प्रकार आज कल की सन्तानों का वीर्य्य पुष्ट न होने से समझ लीजिये कि प्रथम तो गर्भ ही स्थिर न होगा और जो गर्भ भी स्थिर होगया तो मियाद के भीतर गर्भपात से बचना कठिन है। यदि ईश्वर की कृपा से गर्भपात न हुआ पुत्र उत्पन्न हुआ तो दुर्बल होगा। पैदा होते ही मसान रोग का खटका हुआ,

यदि ईश्वर ने उस से भी बचाया दो चार बरस का किया तो सीतला देवी से छुटकारा कठिन हुआ। यदि दान पुण्य से सीतला से बचा, दस पंद्रह बरस की आयु हुई, ब्याह गौना हुआ तो जो कि उस का कलेजा या मस्तिष्क व भेजा तो पहले ही से निर्बल था तनिक कुछ ख़राबी उदर में हुई या जठराग्नि मंद हुई तो संग्रहणी या ज्वरादिक रोगों से यमपुर को प्रस्थान किया। यही मुख्य हेतु युवाओं की अकाल मृत्यु से विधवाओं की अधिकता का है। सुतराम् घी दूध का अभाव जो गोबध व गायों की न्यूनता से है, अकाल मृत्यु के अतिरिक्त हमारे वीरत्व, तेज, उदारता, दृढ़ संकल्पता व स्मरण शक्ति के नाश का हेतु हुआ। यदि प्राचीन काल की भांति गो रक्षा पर ध्यान रहता, लक्षों गौ बनों में चरतीं फिरतीं तो क्या अर्जुन व भीम व हनुमान जैसे योद्धा, गोतम व कणाद, नारद, वशिष्ठ जैसे महा विद्वान्, धर्मशास्त्र वक्ता, हरिश्चन्द्र, मोरध्वज, बलि सरीखे धर्मवीर वा दृढ़प्रतिज्ञ हमारे देश में फिर उत्पन्न न होते? अवश्य होते।

(शंका) आप का यह कहना कि गोबध से घी दूध कम हो गया कि जिस के न मिलने से बलहीन संतान उत्पन्न होने लगीं कि जो जवान मौतों अथवा अकालमृत्यु का कारण हुई यह ठीक नहीं मालूम होता। वरन बाल्यावस्था के विवाह की प्रथा का प्रचलित होना युवाओं अथवा बालकों की मृत्यु का कारण है।

(उत्तर) जो कि एक रोग के पैदा होने के अनेक कारण होते हैं, किन्तु जो सब में प्रबल होता है वही उस का मुख्य हेतु माना जाता है। निस्संदेह एक कारण जवान मौतों का बाल्यावस्था का विवाह भी हो सकता है। जिस को

हमने आप ही छोटे कारणों में गिना है, क्योंकि गोहत्या के सन्मुख यह अत्यन्त तुच्छ है। देखिये इस बाल्यावस्था के विवाह की प्रथा कुछ आज से नहीं है इस के प्रचलित होने का समय मुसलमानी राज्य का आरम्भ कहा जाता है जिस को लगभग एक सहस्र बरस हुए। आज कल तो इस का रिवाज कम होता चला जा रहा है। यदि कल्पना भी कर लिया जावे कि बाल्यावस्था के विवाह ही इन युवाओं की मृत्युओं का मुख्य हेतु है तो हम पूछते हैं कि आज से साठ सत्तर बरस पहले कि जब भी छोटी अवस्था में विवाह होते थे इन जवान मौतों की अधिकता क्यों नहीं थी ?

सज्जनो ! इस का उत्तर इस के अतिरिक्त कुछ भी न मिलेगा कि घी दूध उस समय सब को इच्छानुसार मिलता था कि जिस से बाल्यावस्था में विवाह होते हुए भी घी दूध के कारण उन के अंग प्रत्यंग व बल वीर्य पुष्ट होते थे और उन की सन्तानें अति बलवान् होतीं थीं। अभी तो सत्तर अस्सी बरस की अवस्था वाले वृद्ध मौजूद हैं कि जो हम तुम से अधिक परिश्रम कर सकते हैं। सब तरह से आज कल के जवानों से मज़बूत हैं और इस अवस्था में भी ख़ाली आंखों से भली प्रकार लिख पढ़ सकते हैं। फिर उन को उन के बेटे पोतों से तुलना कीजिये एक दूसरे से शरीर अथवा बल में कम पाओगे। कारण यही है कि उन को एक दूसरे से घी दूध कम मिला है नहीं तो जैसे कि बेटे पोतों का विवाह बाल्यावस्था में हुआ है वैसे ही उन के दादा परदादा का भी हुआ था। कमी है तो केवल इस अमृत तुल्य घी दूध की है यदि आप ऊपर की और चार पांच छः पीढ़ियों का हाल सुनोगे तो उन के बल पराक्रम को सुन चकित रह जाओगे। परन्तु

यह आप का भ्रम है। एक समय मुझ से आग़ा याक़ूब अली-शाह तहसीलदार बिल्हौर जिला कानपुर ने ऐसी ही चर्चा होते हुए कहा था कि हमने एक गांव में पत्थर का एक मुद्गर पड़ा हुआ देखा कि जो तोल में चार मन पुख़्ता कहा जाता था इस के सम्बन्ध में पूछा गया तो गांव वालों ने कहा कि एक जाटनी ने इस को एक हाथ से कई वार उठा लिया है कि जिस के कारण अब कोई पुरुष इस के उठाने में अग्रसर नहीं। होता पूछा गया तो मालूम हुआ कि वह स्त्री अभी जीवित है जब हमने उस के देखने की इच्छा प्रकट की तो वह बुलाई गई। हमने पूछा कि माई क्या तुम ने इस मुद्गर को कभी उठाया है? इस पर उसने उत्तर दिया कि हां मैं ने इसको कई बार सिर से ऊंचा उठा लिया है। हमारे आश्चर्य करने पर उसने उस अवस्था में भी कि जब जवानी समाप्त हो चुकी थी, उस को पृथ्वी से चार फुट ऊंचे तक दोनों हाथों से उठा कर दिखा दिया और कहा कि इस का कुछ आश्चर्य मत करो। मेरे दस सन्तान हुई हैं और प्रत्येक सन्तान के होने में मैं ने दूध के सिवाय तीस २ घड़ी घी खाया है। अब आप ही सोच लेवें कि अमीरों तक को इस का दशमांश भी खिलाना कठिन हो रहा है। ऐसी दशा में आज कल की संतानों में बल पराक्रम कहां से आवे। अतः सिद्ध हुआ कि बाल्यावस्था के विवाहों की हानियों को घृत दुग्ध दूर कर सकते हैं कि जो बिना गायों की अधिकता के प्राप्त नहीं हो सकते।

इस से गोवंश की वृद्धि ही से यह अकाल मृत्युओं का होना दूर हो सकता है और प्रकार से नहीं।

तृतीय अध्याय ।

इस में गोरक्षा सम्बन्धी शिक्षा और देश के उपरोक्त संकटों की निवृत्ति का उपाय लिखा है:—

हे सज्जनो व प्रियवर महाशयो ! ध्यान पूर्वक सोचो और बुद्धि से काम लो । पक्षपात और हठधर्मी को दूर कर अपने लाभालाभ का चिन्तन करो तो थोड़े ही विचार के पश्चात् हम को यह अभिमान और घमण्ड दूर करना पड़ेगा कि हम गोरक्षा करते हैं और गौओं का वंश बढ़ाते या उन को मरने से बचाते हैं । क्योंकि यह गोरक्षा नहीं है बल्के वास्तव में यह मनुष्यमात्र की रक्षा है और हमारे कुटुम्ब अथवा जाति व देश की वर्त्तमान और भविष्यत् उन्नति का मूल कारण है । गाय और बैलों की मनुष्यमात्र और विशेषतः भारतवासी हिन्दू, मुसलमान अथवा ईसाइयों को ऐसी ही आवश्यकता है कि जैसे आत्मा की रक्षा को जल वा वायु की है। देखिये माता का दूध केवल दो डेढ़ वर्ष तक ही पीया जाता है परन्तु इस के दूध की अभिलाषा हम को संसार में जन्म लेने के दिन से मृत्यु पर्य्यन्त रहती है । तो क्या हम को इस की माता से अधिक सेवा करनी उचित नहीं है ? क्या यह सच्ची माता नहीं है ? अथवा आर्य्य विद्वानों ने इस का नाम गोमाता व्यर्थ ही रक्खा है । भ्रातृगणो व मान्यवर सज्जनो ! इस के दूध की बालक से वृद्ध तक को अभिलाषा रहती है । फिर इस के दूध वा घृत से नाना प्रकार के भोजन सुस्वादु व्यञ्जन अथवा मिष्टान्न बना हम चैन करते हैं । इस के बच्चों अथवा बैलों को रथ वा गाड़ी में जोत मार्ग के कष्ट से मुक्त होते हैं । इन की ही सहायता से एक स्थान के अन्नादिक पदार्थ दूसरे स्थान में ले जाते हैं । इन्हीं को हलों

में जोत खेती बोकर इन्हीं के सहारे उन को कुए से सींचते हैं। फिर अन्न काटने के पश्चात् इन्हीं की कृपा से अन्न को भूसे से जुदा करते हैं। गोबर इसका और पशुओं की अपेक्षा खेतों के लिये बलकारक खाद है। हमारे भोजन बनाने के भी काम आता है। मूत्र तक भी वैद्यक शास्त्र के अनुसार अनेक रोगों को नष्ट करता है यहां तक कि मर जाने पर इस का चमड़ा हमारे जूतों व चडुसे व पुर आदि के काम में आता है।

प्रियवर सज्जनो! क्या ऐसे लाभदायक पशु के अहसानों का यही पलटा है कि हम उस पर छुरी चलायें या चलवावें, अथवा इस के उपकारों को भूल इस की रक्षा से मुँह मोड़ कृतघ्न बनें, और अज्ञानता से अपने पांव में आप कुल्हाड़ी मारें। वह कौनसा मत है कि जिस में उपकारों के पलटे अपकार करना महापाप नहीं कहा है। जब यह दशा है तो फिर वृद्धावस्था में इस को बांध किस कारण वृद्ध माता पिता से अधिक इस की सेवा नहीं करते? प्रत्यक्ष बात है कि जब एक वस्तु की आमदनी कम और निकासी अधिक होगी तो निस्संदेह किसी दिन वह समाप्त हो जावेगी। पर्व्वत से भी जब एक २ पत्थर नित्य उठा लेने का नियम किया जावे तो इस में संदेह नहीं कि कभी वहां पर्व्वत का कुछ चिन्ह भी न रहेगा। इसी प्रकार जब गाय बैल भी घटते २ बिलकुल नहीं रहेंगे या कम हो जावेंगे, उस समय जो दुर्दशा हमारी या हमारी सन्तान अथवा हमारे देश की होगी उसके विचार करने से शरीर थर्राता है आंखों के आगे अंधेरा छा जाता है शरीर रोमाञ्चित हो जाता है। वैद्यक शास्त्र का वचन है कि

नोचेद्गवांयदिपयःपृथिवीतलेस्मिन्, संवर्द्धनं नचभवेद्विधि संततीनां। यो जायते विधिवशेन तुमोऽपिरुक्षः, निर्वीर्य शक्तिरहितोऽतिकृशः कुरूपः॥ १॥

इस का अर्थ यह है कि यदि गोदूध इस पृथ्वी पर न होता तो ब्रह्मा की सृष्टि की उत्पत्ति व अधिकता कदापि नहीं होती। यदि ईश्वरीय नियमानुसार होती भी तो अति दुर्बल, निर्वीर्य्य, शक्तिरहित अथवा कुरूप होती। अतएव सज्जनो! उपरोक्त निवेदन पर ध्यान दे इस संकट के दूर करने का शीघ्र यत्न करो। अब भी समय बाक़ी है इस समय चूके तो सदैव के लिये पछताओगे। हाथ मलते रह जाओगे। नहीं २ मैं भूल गया क्योंकि यदि हमारी असावधानी से गौएँ न रहीं तो फिर हाथ मलने वाले ही काहे को रहेंगे। अर्थात् फिर आवागमन का काम ही न रहेगा। क्योंकि न बलवीर्य्य की अधिकता होगी न सन्तान उत्पन्न होगी, मानव सृष्टि मुक्ति अवस्था को पहुँच जावेगी। देखलीजिये कि यदि भारतवर्ष के समस्त गाय बैलों को एक स्थान में बन्द कर दिया जावे या परमेश्वर न करे हमारी असावधानी से घटते २ यह जीव ही लोप हो जावे तो बतलाइये कि वह कौन देहधारी होगा कि जिस पर महान् कष्ट उपस्थित न होगा। क्योंकि बिना बैलों के यह समस्त भारत भूमि बिना बोये पड़ी रहेगी। अन्न के न उपजने से संसार भूखा मरने लगेगा, कपास की उत्पत्ति न होने से किसी प्रकार की वस्तु प्राप्त न हो सकेगी। घी दूध, तेल, खांड सब अलभ्य हो जावेंगे। अर्थात् सांसारिक समस्त पदार्थों से हम वञ्चित रह जावेंगे। भारत सरकार को भी खेती न होने के कारण भूमि कर अथवा अन्य महसूलों से कुछ प्राप्त न होगा तो इस प्रभावशाली सेना और अपने प्रभुत्व की रक्षा कठिन होगी। लाचार देश को उस के भाग्य पर छोड़ देना पड़ेगा। सेठ साहूकार जो इस समय इस के प्रताप से तोंद फुलाये इस की रक्षा से बेफिकर

हो रहे हैं, या जो अमीर, रईस प्रातःकाल से पहले मोहन-भोग चट कर चिकने चुपड़े बन मौज उड़ाते हैं, अथवा ब्राह्मण देवता जिन को कलाकंद वा लड्डू पेड़े ही भाते हैं या मुसलमान साहब जो सुबह उठ डाढ़ी पर हाथ फेर शीरमाल या कूरमे की तय्यारी की आज्ञा देते हैं, या हमारे समय के प्रभु साहब बहादुर जो नित्यप्रति मक्खन की गोली खाना अथवा पांच वक्त दूध की चाय पीना पसंद फ़रमाते और गो रक्षा का नाम लेते ही डाट फटकार बतलाने लगते हैं। सत्य मानो जब यह अमृतरूपी घी दूध की देने वाली गाय अथवा अन्नादिक पैदा करने वाले बैल न रहेंगे तो रक्त मांस रहित केवल अस्थि चर्म्म के पुतले रह जावेंगे, नाममात्र को मनुष्य कहलावेंगे। अतएव हे सज्जनो वा हे मान्यवर राज्य-कर्म्मचारियो ! सचेत कटिबद्ध हो तन मन धन से गोरक्षा में सहायक बन इस के वंश की वृद्धि की ओर ध्यान दो। जहां सहस्रों रुपये आंखें बंद कर विवाहादिक उत्सवों में वेश्या भांड़ कोरी चमारादिकों में लुटाते हो, वहां जी कड़ा कर कुछ गोरक्षा में भी जो कि धर्म्म और परोपकार का मूल है दीजिये। जहां अपने कुटम्ब के पालने में ईमान व धर्म्म का कुछ विचार न कर झूठ बोल वा कम तोल रुपया जमा करते हो, वहां आंखें बंद कर कुछ इन की सहायता में भी दीजिये। जहां राज्य-कर्म्मचारी बन अपने देशवासियों का रक्त चूंस चूंस व रिशवत ले अपनी जेबें भरते हो वहां कुछ प्रति सैकड़ा इस का भी निकालिये। जहां न्यायपूर्वक धर्म्म से कुटम्ब के पालन पर ध्यान रखते हो तो गो रक्षा को भी परोपकार व सत्कर्म्म जान अपने खर्च में शामिल कीजिये। या जहां दूसरों के नुकसान अथवा भाइयों की

आबरू लेने को झूठे मुकद्दमे बना रात दिन इसी फ़िकर में मग्न रहते हो वहां थोड़ी देर इस की रक्षा का भी उपाय सोचिये। जहां दिल खोल उपार्ज्जित धन से अथवा रियासत रहन रख क़र्ज़ से केवल दो चार अंगरेजी वर्णमाला के अक्षर उपाधि स्वरूप लेने को मुतफ़र्रिक फंडों में द्रव्य देते हो वहां कुछ गो रक्षा में भी दीजिये या जहां दीवानी फ़ौजदारी अभियोग ले न्यायालय में घूमते हो वहां इस बेज़बान की फ़र्याद को भी हाकिमों के कानों तक पहुँचा यश लीजिये। हे सज्जनों! जब गौ तुम्हारे प्राणों की रक्षा का हेतु है तो फिर किस कारण इस की रक्षा की ओर ध्यान नहीं देते? शोक! शोक! महा शोक!!

अब मैं कुछ उपाय इस की रक्षा और वंश की
वृद्धि के लिखता हूं।

(१) प्रथम हम दोनों दलों हिन्दू व मुसल्मानों को एक दिल होना चाहिये। ऐक्यता और मेल जोल बढ़ा, द्वेष-भाव और पक्षपात को दूर करना चाहिये। एक देश के वासी हो जाने से अब दोनों दलों में चोली और दामन का नाता हो गया है न कि पहले की भांति जेता और जित का।

ध्यान करने योग्य बात है कि गायों के नष्ट होने से केवल हिन्दुओं की ही हानि नहीं है क्योंकि खाने पीने को घी दूध की और कृषि कर्म्म को बैलों की जैसी आवश्यकता हिन्दुओं को है वैसी ही मुसलमानों को भी है। फिर किस कारण दोनों सहवासी व पड़ौसी दल एक चित्त हो अपनी लाभ हानि तुल्य समझ इस देशहितकारी जीव की रक्षा व वृद्धि करने में दत्तचित्त नहीं होते?

(२) दूसरे—सुगम उपाय इस की वृद्धि अथवा रक्षा का यह है कि हरएक गृहस्थी को कम से कम १ गौ अपने घर अवश्य रखनी चाहिये और जो अधिक रखने की सामर्थ्य रखता हो वह श्रद्धानुसार अधिक रक्खे, परन्तु दूध से छुटने अथवा वृद्ध हो जाने पर वा अकाल के समय में अपने वृद्ध माता पिता की सेवा की भांति बरन उन से अधिक इन की सेवा अपने ऊपर कर्त्तव्यकर्म्म जान इनको कभी घर से जुदा न करें।

(३) तृतीय—यदि कोई निर्धन या साधारण गृहस्थी अकाल के समय में इस के रखने की सामर्थ्य न रखता हो तो उस को उचित है कि उसे गौशाला में छोड़ आवे। ये गोशालाएँ हम को आपस के चन्दे से लगभग दस २ कोस के अन्तर पर प्रत्येक ज़िले में स्थापित कर देनी चाहियें। इन के व्यय निर्वाहार्थ प्रत्येक सामर्थ्यवान् व्यक्ति को अपनी आमदनी में से प्रति सैकड़ा पांच रुपये अथवा कम से कम १) रु० धर्म्मार्थ निकाल गौशाला में देना चाहिये। मंडी अथवा बाज़ारों में माल की बिक्री पर प्रति सैकड़ा दो चार आने पंचायत कर के क़ायम कर देने चाहियें जिन को आढ़तियों से गौशाला का चपरासी ले जाया करेगा। ऐसे ही दूसरे उत्सवों विवाह, मुंडन, दसोठन आदि पर जहां सैकड़ों रुपये नाच, तमाशे, आतिशबाज़ी, फुलवाड़ी आदि में व्यर्थ नष्ट किये जाते हैं, वहां गौशालाओंके लिये भी पंचायत कर के कुछ नियत करना चाहिये। इसके अतिरिक्त हरएक गृहस्थियोंको अपने२ घर स्त्रियोंसे कह देना चाहिये कि जब पीसने अथवा रसोई बनाने बैठें तो एक बर्तन में नित्य:प्रति पैसे दो पैसे भर श्रद्धा पूर्वक अन्न की चुटकी डालती जावें कि जिस को सातवें दिन गोशाला में पहुँचा दिया करें।

यह अक्षय धर्म्म अथवा सुगम उपाय है। यदि धर्म्म को सोचेंगे तो किसी को भी इस का देना दुःखदायी न होगा। बल्कि यदि इस पर सब ध्यान देवें तो इस से बहुत बड़ी सहायता गोशालाओं को पहुँच सकती है। और जहां व्यर्थ चुटकी मुस्टण्डों को देते हो वहां इस की बदौलत सैकड़ों वृद्ध गाय और बैलों की जान बचेगी।

(४) चौथे ज़िमीन्दारों अथवा किसानों को उचित है कि जब खेत काटें और अन्न उठावें तो पैदावार पर फ़ी मन *पावभर या आधपाव अन्न और फ़ी हल मन छः धड़ी भूसा या पूली गोशाला के वास्ते और ख़र्चों धोबी, बढ़ई, लुहारों की भांति निकाला करें तो अवश्य है कि ऐसा करने से आये दिन की आपदाओं टिड्डी, ओलों व हवा से उन के खेतों की रक्षा रहेगी और इस थोड़े पुण्य के पलटे ईश्वर उन के खेतों में अधिक अन्न पैदा कर देवेगा।

(५) पंचम राजा महाराजाओं तथा भूम्यधिकारियों वा ज़िमीन्दारों को उचित है कि बनों व जंगलों को कटवा कर खेत न बनवावें तथा बंजर व पड़ती को न जुतवावें क्योंकि आज कल इसी कार्य्यवाही के कारण वृष्टि का होना कम हो गया है जैसा कि इस पुस्तक के द्वितीय अध्याय के चौथे प्रमाण में सिद्ध किया गया है। इस के अतिरिक्त बंजर के जुतवाने अथवा बनों के कट जाने से पशुओं के चरने का स्थान कम हो जाने से इन का पालन भी कठिन हो गया है। ऐसा करने से आप अपनी हानि न समझें, क्योंकि जब गौओं के चरने को बन अथवा जंगल अधिकता से होंगे तो हरएक को इन का पालना सुगम हो जावेगा। गायों की अधिकता से बैल सस्ते होंगे खेत खूब

जोते जावेंगे। खाद की अधिकता के कारण उसी थोड़ी भूमि में दुगना तिगुना अन्न पैदा हो जावेगा। किसानों पर नालिश करने को न्यायालयों की शरण न लेनी पड़ेगी। इस के अतिरिक्त भूम्यधिकारियों वा जिमीन्दारों सेठ साहूकारों को यह भी उचित है कि यदि मालगुजारी वा बीज आदिक का कुछ रुपया किसानों पर बाक़ी रह जावे तो उस के गाय बैलों को न बिकवावें। यदि यह कहा जावे कि फिर लगान अथवा ऋण कैसे वसूल किया जावे, तो इस के लिये उन को उचित है कि खलिहान में उन के अन्न को रोक कर रुपया वसूल करें। यदि इस प्रकार भी वह देनी की श्रद्धा न रखता होवे या खेत में पैदावार ही कम हुई होवे तो या तो उस को ऋण से मुक्त करदो, या शनैः २ उस को उऋण होने का अवसर दो। ऋण से मुक्त कर देना भी कोई बड़ी बात नहीं है। आखिर न्यायालयों और व्यर्थ के झगड़ों में भी तो सैकड़ों रुपये व्यर्थ करते हो, ये तो वे लोग हैं जिन के कारण तुम्हारी ज़िमीन्दारी अथवा कोठी क़ायम है, रईस व सेठ कहलाते हो, क्योंकि बहुधा ऐसा प्रचलित है कि जब किसान निवेदन करता है कि हमारे पास देने को कुछ नहीं है तो उस समय यही कहा जाता है कि हम नहीं जानते। चाहे अपनी स्त्री बेच, गाय बेच, भैंस बेच पर यदि कल तक रुपया अदा न किया तो तुम पर नालिश कर के खर्चे सहित रुपया वसूल किया जावेगा। उस समय वह बेचारा डर का मारा गाय भैंसों को जो होती हैं पैंठ या बाज़ार में बेचने को ले जाता है। अब ध्यान का विषय है कि ऐसे समय में उन का क़साइयों के सिवाय और कौन ग्राहक होगा। अतएव उस हत्या का उत्तरदाता वही सेठ या ज़िमीन्दार है कि जिस ने

इस प्रकार ज़ोर दिया, यही कारण है कि बहुधा सेठ साहूकारों वा भूम्यधिकारियों के सन्तान नहीं होती। इसी का प्रतिफल है कि बिना उत्तराधिकारी रियासत तीन तेरह हो जाती है। अतएव परमेश्वर ने जो आप को प्रभुता दी है या अनेकों का स्वामी बनाया है तो इस थोड़ी हानि को सह उन पर दया करो तो ईश्वर अवश्य इस का यथेच्छ फल तुम को देवेगा।

(६) छटे—सेठ साहूकारों को उचित है कि दूध वा घी अथवा गाय बैलों की वृद्धि के अर्थ डेरी फ़ार्म बनावें और कम्पनीयें खड़ी करें। सौ२ अथवा पचास २ रुपये के शेयरों से कम से कम पचास हज़ार मूल धन रक्खा जा कर काम चलाया जावेगा तो तीस चलीस रुपया सैकड़ा वार्षिक लाभ हो जाना सम्भव है। यदि किसी बड़े नगर के समीप कम्पनी खड़ी की जावेगी तो केवल दूध और घी से ही बहुत बड़ा लाभ हो सकता है। या चारे की तंगी हो तो बन जंगल अथवा नदियों के समीप यह कंपनी खड़ी की जावे। जो वहां दूध की बिक्री न हो सके तो वह समस्त दूध उन के बच्चों को पीने दिया जावे कि जिस से वे बच्चे बहुत बलवान् बैल और अधिक दूध देने वाली गायें बनेगीं और बड़े मूल्य पर बिकेंगीं कि जिस से हमारी राय में सब कम्पनियों और कारख़ानों से अधिक लाभ होने की आशा है। एक पंथ दो काज अर्थात् नफ़े का नफ़ा धर्म्म का धर्म्म यही है। परन्तु प्रथम किसी साहसी को दृढ़ प्रतिज्ञा से इस को आरंभ करना चाहिये। फिर तो लाभ जान बहुत डेरी फ़ार्म हो सकते हैं। देखिये अलीगढ़ के समीप किसी यूरोपियन ने डेरी फ़ार्म बनाया है कि जिस में बड़ा भारी लाभ हो रहा है।

(७) जो कि बारंबार अकाल व दुर्भिक्ष पड़ने से इन लाभकारी पशुओं का संहार हुआ जाता है। जैसा कि श्रीवेंक- टेश्वर समाचार सन् १८६२ के किसी अंक में छपा था कि ज़िले झांसी में १ सप्ताह के भीतर दस सहस्र गाय बैल दो दो चार चार रुपयों में बिक गये। ध्यान का विषय है कि ऐसे कुसमय में सिवाय बधिकों के उन का कौन ग्राहक हुआ होगा।

हमारे हिन्दू भाइयों में ऐसे धर्म्मवीरों की कमी नहीं है कि जो सहस्रों रुपये धर्म पर लगा देने में विलम्ब करें। ऐसे तो सभी हैं कि जिन के जी में अपने जीवनकाल में कम से कम एक दो चार बार गौदान करने की इच्छा बनी ही रहती है। ऐसे सज्जनों को गौदान के गूढ़ मर्म्म पर लक्ष्य देने से मालूम हो जावेगा कि आजकल के गौदान से यह गौ का जीवदान सहस्र गुना फलदायक है। १ गौदान कम से कम चालीस पचास रुपये में हो सकता है परन्तु इतने रुपयों से दुर्भिक्ष के समय में जब चारे के अभाव से लोग गायों को बधिकों के हाथ बेच देते हैं आठ दस गौओं के प्राण बच सकते हैं। देखिये संसार में दो प्रकार के मनुष्य हैं एक तो वे लोग कि धर्म्म के नाम तो कुछ नहीं देना चाहते। जिस में लाभ देखेंगे उस काम को करेंगे। उन के लिये निवे- दन है कि वे अकाल के समय एक कम्पनी खड़ी कर के लाख दो लाख रुपये एकत्रित करें और फिर जहां चारे पानी का दुर्भिक्ष के कारण अभाव होने से पशुओं को किसान लोग नाम मात्र मूल्य ले बेच रहे हों और जिन को सिवाय बधिकों के और कौन ख़रीदने वाला है खुद ख़रीद कर रास्ते में चारे का प्रबन्ध करते हुए किसी निकट के जंगल या नदी के

बेले में जहां उस अकाल के समय में भी भरपूर चारा होता है चरने के वास्ते स्थान बना कर रक्खें और जब अकाल निकल जावे तो उन को किसानों के हाथ बेच देवें। उस समय जो पशु चार रुपये में लिया था वह पचास रुपये से कम में न बिकेगा कि जिस का खर्च निकाल कर बड़ा भारी लाभ होना सम्भव है। दूसरे देश के पशु नाश होने से बचेंगे कि जिस से घी दूध की मँहगी नहीं होगी। दूसरा दल कि जो लाभ के साथ धर्म्म को भी मुख्य मानता है उन को उचित है कि दस बीस या हज़ार दो हज़ार रुपये श्रद्धानुसार इस काम में दे कर धन इकट्ठा कर उपरोक्त प्रकार से ही गाय बैलों को खरीद उन को उसी तरह बनों में पहुँचा उन की जान बचावें और फिर अकाल दूर हो जाने पर उन को बेच देवें। इस तरह जो धन आवे उस को किसी बेंक में पशु कष्ट निवारक फण्ड के नाम से जमा कर जब २ अकाल पड़े उस से काम लेवें। फिर देखिये कि इस के प्रबंधकर्त्ताओं और धन दाताओं को असंख्य गो-जीवदान का फल मिलता है या नहीं। और सदैव यह धन दुगुना चौगुना हो देश की दुर्दशा को दूर करता रहेगा।

(८) आठवें—हरएक समाचार पत्र के सम्पादकों को उचित है कि कम से कम १ लेख गोरक्षा सम्बन्धी गवर्नमेंट या देशवासियों के लिये अवश्य प्रति मास लिखा करें। मैं देखता हूं कि किसी धार्म्मिक सम्पादक का भी इस ओर ध्यान नहीं है। क्या हुआ कि किसी के भेजे हुए दस लेखों में से एक दो कभी छाप दिये। फ़ज़ूल लड़ाई झगड़ों के तो हरएक समाचार पत्र में कालम के कालम भरे रहते हैं परन्तु गोरक्षा के नाम उन के पत्र में स्थान ही नहीं रहता। इस से

हे देश सुधारक धार्म्मिक सम्पादकों! कृपा कर इस देश और धर्म्म रक्षक गौमाता की रक्षा के निमित्त जो २ उपाय उचित मालूम दिया करें उस को प्रतिमास अपनी चित्ताकर्षक लेखनी से लिख प्रकाशित करते रहा कीजिये। सत्य पूछिये तो देश-हित-देशोन्नति का मुख्य हेतु और हमारा कर्त्तव्य कर्म्म यही है कि जिस पर बहुत ही कम ध्यान है। इस कृषिप्रधान देश में बिना पूर्ण रूप से गोरक्षा हुये न तो स्वदेशी आन्दोलन में ही सफलता प्राप्त हो सकती है न कांग्रेस से कुछ लाभ की आशा है क्योंकि अन्न, वस्त्र, घृत, शक्कर सब इसी की बदौलत पैदा होते हैं। जब यह नहीं रहेगी या कम हो जायगी, तो अपने आप विदेशी माल की आमद अधिक होगी, और जब घृत दुग्ध के अभाव से शरीर और मस्तिष्क निर्बल होंगे तो कांग्रेस पंडाल में कैसे गला फाड़ २ बोलोगे अथवा साहसी और दृढ़-प्रतिज्ञ होने के गुण बिना इस सात्विक भोजन को कहां से पाओगे। इस से जो जो उपाय गो रक्षा विषय में लाभकारी प्रतीत हुआ करें कृपा कर के समाचार पत्रों में लिखना अपना कर्त्तव्य कर्म्म समझते रहियेगा। नहीं तो फिर पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गईं खेत। बहुधा महाशय यह कहा करते हैं कि हम से अपना या अपने परिवार का तो पालन पोषण बड़ी कठिनता से होता है फिर गोशाला को चंदा कहां से लावें। उन को ध्यान रखना चाहिये कि यह चन्दा नहीं है किन्तु तुम्हारे व तुम्हारी जाति व देश की भविष्यत् उन्नति की नींव है। अगर सब मिल कर गोरक्षा पर कटिबद्ध होवें तो फिर तुम को कुटुम्ब के पालन का नाम लेकर ऐसे कमहिम्मती के शब्द न कहने पड़ेंगे।

देखिये ऐसा कौन मनुष्य है कि जिस के प्रतिमास दो चार आने पान तम्बाकू आदि में न उठ जाते होवें, या

किसी रोग से पीड़ित होजाने पर श्रद्धानुसार दो चार रुपये वैद्य व डाक्टर या औषधियों के ख़रीदने में खर्च न हो जाते होवें या सरकार किसी क़िस्म का टैक्स या चौकीदारा नियत कर देवे या बढ़ा देवे तो लाचार हो कर उस को न देता होवे। या यदि एक दो इष्ट मित्र घर पर आजावें तो श्रद्धा-नुसार रुपया आठ आना उन की शुश्रूषा में न खर्च न कर देता हो या मुक़द्दमा लग जाने पर सौ पचास रुपये पुलिस या मुख़तार और वकील या अदालत की भेट न करता होवे। अतः जैसे यह खर्च उठा लिये जाते हैं तैसे ही इस ख़र्च को भी कि जिस से इस लोक और परलोक में सर्वथा लाभ है प्रसन्नता से स्वीकार कीजिये। अवश्यमेव इस धर्म्म व परोपकार के पलटे में सर्वशक्तिमान् परमात्मा आप को उपरोक्त आपदाओं व हानियों से बचावेगा। सत्पुरुष वही है कि जिस का मन हर घड़ी देशोपकार या परोपकार में लगा रहे। देखिये नीतिशास्त्र का वचन है:—

पिबंतिनद्यः स्वयमेवनोदकं स्वयम्नखादंति फलानिवृक्षाः ॥
धराधरोवर्षतिनात्महेतवे परोपकाराय सतांविभूतयः ॥ १ ॥

इस का अर्थ यह है कि नदियां अपने जल को आप नहीं पीतीं, वृक्ष अपने फलों को आप नहीं खाते, या बादल कुछ अपने प्रयोजन को नहीं बरसते।

तात्पर्य्य यह है कि देशोपकार व परोपकार ही सत्पुरुषों का कर्त्तव्य-कर्म्म वा अक्षय धर्म्म भण्डार है।

इस से हे प्रियवर मित्रो! अच्छी कमाई वही है कि जो शुभकर्म्मों परोपकार आदि में लगे। तनिक आंखें खोल कर देखिये कि हमारे यहां के धनवानों का द्रव्य यदि वे विवाह करते हैं तो अधिकतर वेश्या, भांडों व अग्नि क्रीड़ा

आदि में कि जिस से हानि के अतिरिक्त किञ्चित् मात्र भी धर्म नहीं है प्रसन्नता से लगता है । मन्दिरों व विद्यालयों व गोशालाओं व अनाथालयों में बड़ी कठिनता से वह भी पंचों के डर व बिरादरी की शर्म से रुपये दो रुपये देते हैं या कर्मकर्त्ता पंडित जी को विवाह कर्म्म की दक्षिणा में जिस के सामने विवाह के सब कर्म्म तुच्छ हैं रुपया दो रुपया दिया जाता है तो उस के देते समय कलेजा धड़कने लगता है बुद्धि चक्कर खाने लगती है कि हाय पंडित जी ने दो दो चार चार पैसे लेकर लोटा भर लिया परन्तु जब वेश्या को कि जिस को उन का कुलपूज्य कहना चाहिये जिस से ऐसे समाज में कि जहां वृद्ध व बालक हर श्रेणी के मनुष्य उपस्थित होते हैं व सभ्यता की दुर्दशा होती है दो चार दस रुपये तक दिली उमंग के साथ बराबर देते चले जाते हैं क्यों न हो शास्त्र का वचन है कि

प्रायश्चित्ते राजदण्डे वेश्यानृत्येच भारतः ॥
मद्यद्यूत परस्त्रीषु धनंगच्छति पापिनाम् ॥ १ ॥

अर्थात् पापियों का धन इन ७ स्थानों में लगता है। प्रथम प्रायश्चित्त में अर्थात् जो किसी बुरे कर्म्म करने के पश्चात् बिरादरी को दण्ड दे कर क्षमा मांगी जाती है दूसरे राजदण्ड अर्थात् कचहरियों के ख़र्च व टैक्स आदि में तीसरे वेश्याओं के नृत्य आदि में चौथे लड़ाई झगड़ों में सैकड़ों रुपया प्रसन्नता से घूंस व वकीलों में खर्च करना पांचवें मद्यपान में कि जहां प्रतिष्ठा व लज्जा को तिलाञ्जली दे कलालों का झूठा पानी पीया जाता है छठे जूए में सातवें व्यभिचार व परस्त्री-गमन में खर्च होता है।

धर्म के नाम पर पापी लोगों का यह हाल है कि जान जाय पर कौड़ी न जाय।

अतएव हे प्यारे मित्रो! यह धन द्रव्य व ऐश्वर्य्य व प्रतिष्ठा जो परमेश्वर ने आप लोगों को प्रदान की है उसे अपने पूर्व जन्म के कर्म्मों का फल समझो। अगर अब कुछ अपने हाथ से सन्मार्ग में ख़र्च कर जाओगे तो वहां पाओगे। मरने पर ख़ाली हाथ जाओगे वहां केवल धर्म्म ही साथ जायगा। बाक़ी यह सब धन दौलत जो दिन रात अधर्म्म करके प्राप्ति की है इसी जगह पड़ी रहेगी। यह कभी ध्यान में न लाना कि हमारे विद्या-गुण वा बाहुबल से यह ऐश्वर्य्य हम को प्राप्त है। नहीं कदापि नहीं। क्योंकि यदि ऐश्वर्य्य का होना विद्या के ऊपर होता तो सैकड़ों विद्वान् भीख मांगते या दस पांच की नौकरी की तलाश में फिरते दिखलाई न पड़ते। या निर्बुद्धि लोग कुवेर के भण्डार पर इन्द्र बने बैठे दिखलाई न देते। यदि बाहुबल पर धन व ऐश्वर्य्य का होना मानो तो मथुरा के चौबों या पल्लेदारों को देख लीजिये कि जो चार आदमियों का सिर तोड़ डालें या अढ़ाई मन का बोझा मील भर तक ले जावें किस भांति अपना निर्वाह करते हैं। इस से सिद्ध हुआ कि यह ऐश्वर्य्य जो परमेश्वर ने आप को दिया है पिछले शुभ कर्म्मों का फल है। इस से अब भी यदि भविष्यत् में इस से अच्छा होना चाहो तो शुभकर्म्मों गोरक्षा आदि में जो देशोपकार व परोपकार की जड़ है कटिबद्ध हो कर तन मन धन से उस में सहायता करो। मेरी इच्छा इस कहने से यह नहीं है कि यदि गाय को कोई बधिक ले जाता हो तो उस से छीन कर उस की जान बचाओ, किन्तु तात्पर्य्य मेरे कहने का यह है कि प्रथम आपस की फूट व

ईर्षा द्वेष को दूर करो। ऐसा करने के पश्चात् यदि तुम बधिक को इस के लाभ जतलाओगे और जो जो उपकार इस से संसार का हो रहा है बतलाओगे या जो हानियें इस के कुसमय मरने के कारण कमी नसल हो जाने से हो रही हैं या आगे को होने वाली हैं दिखलाओगे तो आश्चर्य नहीं कि उन का वह बज्रहृदय नर्म हो जाये और फिर ऐसा करना वह बिलकुल छोड़ देवे या कम कर देवे। सज्जनो! वे हिन्दू भी अत्यन्त निर्बुद्धि हैं कि जो रास्ता चलते क़साइयों से या ईद के दिन मुसलमानों से गौ के ऊपर लड़ अपनी पड़ौसी जाति से तकरार कर सहस्रों रुपया मुक़द्दमों में बरबाद कर देते हैं। यदि यह कहा जाये कि उन से गोवध देखा या सुना नहीं जाता तो यह उन की पूरी भूल है। यदि ऐसा ही खून में जोश है तो क्यों नहीं छावनियों के बूचड़ख़ानों में जाकर अपनी जान देते? यहां नाहक़ सरकार तक को अपनी व अपनी जाति की तरफ से क्रोधित करते हो। प्रबन्ध व शांति स्थापन के लिये हाकिमों को हैरान करते हो। चाहे मेरा ऐसा कहना कुछेक अदूरदर्शियों को अनुचित प्रतीत हुआ होगा किन्तु मैं सत्य कहता हूं कि ईद के दिन हमारा इस क़दर चिढ़ना गौओं के अधिक मरने का कारण है। यदि हम बादशाही राज्य में गौओं का इतना पक्ष न करते तो आज दिन ज़िद से इतनी मृत्यु कदापि नहीं होतीं, और मुसलमान लोग इतनी हठ न कर इस को अपने धर्म्म का मूल न समझते। देखिये ऊंट और घोड़ा भी तो मुसलमानी धर्म के अनुसार हलाल जीवों में से हैं और अकाल के समय मनुष्यों को इन को भी दाने चारे के अभाव से रखना कठिन पड़ता है किन्तु इन का पक्ष न लेने से कहीं भी यह बध नहीं किये जाते। जितनी गौ

ईद को मारी जाती हैं वे सब पक्षपात से हिन्दुओं का पूज्य जान मारी जाती हैं नहीं तो वह कौन मुसल्मान है कि जो अपना नुक़सान करे और गाय के स्थान में बकरे व दुंबे आदि का बलिदान अरब व ईरान व काबुल की भांति (जहां गाय के बलिदान का किसी को ध्यान तक नहीं होता) करने न लग जावें क्या आप नहीं देखते कि बहुधा हिन्दू राम नाम हरएक के मुंह से निकलवाने को किसी विशेष नाम जय कन्हैया जी या जय सीताराम जी पर चिड़ने लगते हैं तो यह दशा हो जाती है कि गली कूचों में छोटे २ बालक बल्कि मुसलमान लोग तक भी यह नाम ले कर उन से हँसी करते और उन के बनावटी क्रोध का तमाशा देखते हैं।

फिर यदि गौ का बलिदान मुसल्मानों के यहां मत सम्बन्धी कर्त्तव्य कर्म है तो अपना देश भाई समझ असह्य कष्ट झेल उस दिन चुप हो जाओ और मित्रता व भाई बंधी से उन से प्रार्थना करो कि सिवाय ईद के दिन के यह जो नित्यप्रति सहस्रों गौ मारी जाती हैं कि जिन से मेरे सप्रमाण कथनानुसार बड़ी भारी हानियें हैं बध न करें।

मुसल्मानों को भी चाहिये कि पक्षपात छोड़ इस के मारने में देश के हानि लाभ पर विचार करें। मैं अपने मुसलमान भाइयों पर ही गोबध का दोष नहीं लगाता हूं बल्कि मैं खूब जानता हूं कि वह मुसल्मान जो भली भांति अपने धर्म्म ग्रन्थों को पढ़ते हैं कदापि इस कर्म को अच्छा नहीं कहते हैं न गोमांस खाते हैं बल्कि अधिकतर यह दोष मैं हिन्दुओं पर ही लगाना उचित समझता हूं कि जो बधिकों को तो बुरा कहते हैं परन्तु यह नहीं बिचारते कि आख़िर यह गायें बधिकों को कौन देता है या किस के घर से आती

हैं। क्या देने वाले जो विशेषकर हिन्दू होते हैं वे यह नहीं जानते कि इन का क्या होगा और यह क्यों खरीदते हैं? सच पूछिये तो उन बधिकों से वे बेचने वाले हिन्दू अधिक अपराधी हैं कि जिन से हम कुछ घृणा नहीं करते और उन को हिन्दू समझ उन का छूआ हुआ भोजन खाते या पानी पीते हैं।

हे प्रियवर हिन्दू नाम धारियो! आप लोगों के यहां गायें अवश्य होंगी और हिन्दू धर्म्मावलम्बी होने का अभिमान भी अवश्य होगा। गाय को गोमाता कहने और उस की रक्षा पर प्राण देने का दम भी अवश्य भरते होगे परन्तु इस समय जो यह प्रश्न किया जाय कि किसी धनवान के यहां ऐसी बूढ़ी गाय भी मौजूद है कि जो वृद्धावस्था के कारण दूध के काम की न हो या कभी कोई गौ अपनी मौत आप के खूंटे पर वृद्धावस्था के कारण मरी हो तो आप सब लोग उत्तर न दे सकेंगे। मुख ताकने लगेंगे। क्या यह लज्जा का स्थान नहीं है? मेरे नज़दीक आज कल सैकड़े पीछे दो एक हिन्दू ऐसे निकलेंगे जिन का सच्चा ध्यान गाय के महत्त्व पर हो और उस को देव तुल्य समझते हों। इस से हिन्दुओं को चाहिये कि प्रथम अपने दोषों को दूर करें और फिर मुसलमानों या अंगरेजों की निन्दा करें। मुसलमानी धर्म्मग्रन्थ गोबध को बुरा कहते हैं। अच्छे मुसलमान भी गोबध के विरुद्ध हैं। अब मैं आप महाशयों के सामने जो केवल अपने को ही धर्म्म या दया का अवतार समझे बैठे हैं या उन मुसलमानों की जानकारी को कि जो छुरी चलाना या हत्या करना ही मुसलमानी धर्म्म का मूल समझे हुए हैं थोड़ा सा नमूना मुसलमानी धर्म्मग्रन्थों से या मुसलमान सत्पुरुषों के वाक्यों से कि

जिन में दया ठूंस ठूंस कर भरी है पेश करता हूं। कृपा करके इन धर्म्म ग्रन्थों व सत्पुरुषों के वाक्यों को जो अब चतुर्थ अध्याय के आदि में लिखे जाते हैं ध्यान पूर्वक पढ़िये और सुनिये।

चतुर्थ अध्याय।

मुसलमान भाइयों की सेवा में निवेदन।

यदि आप साहबों के धर्म्म ग्रन्थों व सत्पुरुषों के वचनों को देखा जावे तो उस में दया कोमल का प्रधान अंग माना गया है। जैसे हदीस शरीफ में लिखा है कि

क़लील मिन्नुः शफ़क़ते-ख़ैर मिन कसरतुल् इबादते।

अर्थात् थोड़ी सी भी दया अधिक भक्ति व पूजा से अच्छी होती है या यह कहो कि दया का दर्जा भक्ति से बहुत ऊंचा है। अब मैं थोड़े से माननीय मुसलमान सज्जनों के वाक्यों को सर्व साधारण के अवलोकनार्थ लिखता हूं। देखिये हज़रत शेख़सादी ने बोस्तां में इस प्रकार लिखा है:—

यके सीरते नेक मर्दां शुनो।
अगर नेक मर्दी व पाकीज़ा रो॥
के शिबली ज़ ह़ानूत गंदुम फ़रोश।
ब देह बुर्द अंबाने गंदुम बदोश॥
निगह कर्द मोरे दरां ग़ल्लह दीद।
के सर्गश्तह अज़ हरतरफ़ मे दवीद॥
ज़ रहमत बरो शब नियारुस्त ख़ुफ़्त।
ब मावाय ख़ुद बाज़श आवुर्दो गुफ़्त
मुरव्वत न बाशद के ईं मोरे रेश।
परागंदह गर्दानमज़ जाये ख़ेश॥

इस का आशय यह है कि एक दिन शेख़ शिबली ने एक बनिये की दुकान से गेहूं मोल लिये और गठरी बांध सिर पर रख अपने गांव को ले गया परन्तु जब गठरी खोली तो देखा कि एक चिऊंटी उस में भागी २ फिर रही है उस की व्याकुलता देख शेख शिबली ने सोना बंद किया और रात को ही उस चिऊंटी को ले उसी बनिये की दुकान पर जहां से गेहूं खरीदे थे ला कर छोड़ दिया और कहा कि यह बात दया और न्याय के विरुद्ध है कि मेरे कारण एक दीन चिऊंटी अपने कुटम्ब से जुदा हो दुःख उठावे। कहिये शेख सादी और शेख़ शिबली ने दया को सब से ऊंचा स्थान दिया या नहीं? क्या समझ में आ सक्ता है कि ऐसे ईश्वर के प्यारे कि जो एक चिऊंटी का भी इस प्रकार का दुःख नहीं देख सकते हैं गाय के मारने को कभी धर्म-संगत कह सकें? नहीं कदापि नहीं। फिर उन्हीं शेख सादी ने बोस्तां के एक स्थान पर फिर लिखा है।

चे ख़ुश गुफ़ फ़िर्दौसिये पाकज़ाद।
के रहमत बरां तुर्बते ख़ाक बाद॥
मियाज़ार मोरे के दानह कशस्त।
के जां दारदो जान शीरीं ख़ुशस्त॥
सियह अन्दरूं बाशदो संगदिल।
के ख़्वाहद के मोरे शवद तंगदिल॥

अर्थात् स्वर्गवासी फ़िर्दौसी ने क्या अच्छा कहा है कि किसी चिऊंटी को भी कष्ट न दो क्योंकि उस में भी हमारे जैसा ही जीव है, वे मनुष्य बड़े वज्रहृदय और दुष्टात्मा हैं कि जो यह चाहते हैं कि किसी जीव का दिल दुखे—इससे—

चौ०—जो चिऊंटी दुख व्याकुल भाई। वे कैसे मारेंगे गाई॥

फिर शेख़ सादीने गुलिस्तां में लिखा हैः—

मबाश दरपये आज़ारो हर्चे ख़्वाही कुन।
के दर शरीयते मा ग़ैरज़ीं गुनाहे नेस्त॥ १॥
हुमाय बरहमः मुर्ग़ों अज़ां शरफ़ दारद।
के उस्तख़्वां ख़ुरदो तायरे नियाज़ारद॥ २॥
अज़ीज़ा मुर्ग़ों माही रा मियाज़ार।
न बाशी ता ख़जिल सो पेशे दादार॥ ३॥
आहिस्ता ख़िराम बल्के मख़िराम।
के ज़ेर क़दमत हज़ार जानस्त॥ ४॥
हासिल न शवद रज़ाये सुल्तां।
ता ख़ातिरे बंदगां न जोई॥ ५॥
दिल बदस्तावर के हज्जे अकबरस्त।
अज़ हज़ारां काबः यकदिल बेहतरस्त॥ ६॥
काबः बुनगाहे ख़लीले आज़रस्त।
दिल गुज़रगाहे जलीले अकबरस्त॥ ७॥

अर्थात् शेख सादी फरमाते हैं कि किसी जीव को कष्ट न दो और जो चाहो सो करो। क्योंकि हमारे धर्म में जीव-हिंसा से बढ़ कर कोई भी अपराध नहीं है—१

फिर लिखा है कि हुमा जो एक प्रकार का पक्षी है और जिस के सिर पर बैठने से ही राज्य मिलता है उस को सब पक्षियों में इस कारण प्रधानता दी गई है कि वह हड्डी पर अपना निर्वाह करता है किन्तु हड्डी मिलने के अर्थ किसी पक्षी को नहीं सताता—२

फिर लिखा है कि हे प्यारे किसी पक्षी अथवा मछली को मत दुःख दे कि जिस से तू परमेश्वर के सन्मुख लज्जित न होवे—३

फिर देखिये वह क्या कहते हैं कि मनुष्य को उचित है कि बहुत धीरे चले-वरन यदि आवश्यकता न हो तो बिल्कुल न चले। कारण यह है कि पांव के नीचे अनेक जीवों की हत्या हो जाती है-४

फिर देखो वह कहते हैं कि यदि तू चाहता है कि मेरा मालिक मुझ से प्रसन्न रहे या परमेश्वर मुझ को स्वर्ग में उच्च स्थान देवे तो तुझ को उचित है कि ईश्वर की सृष्टि में प्राणी मात्र को प्रसन्न रख और किसी भी जीव को मत सता।-५

फिर वही महात्मा शेख सादी लिखते हैं कि प्राणियों के मन को प्रसन्न रख क्योंकि हज्जे अकबर अर्थात् बड़ी भारी तीर्थयात्रा के तुल्य है। सहस्रों काबे से एक दिल श्रेष्ठ है क्योंकि काबा तो ख़लील आज़ुर का मूर्त्ति बनाने का स्थान है किन्तु प्राणियों का हृदय परमेश्वर का निवास स्थान है-६

अतएव सच्चा मुसल्मान किसी जीव को भी दुःख देना पसंद नहीं करता है, जब ऐसा है तो वह गोहत्या कर के एक बड़े भारी हिन्दू दल के हृदय को कभी भी कष्ट न पहुँचावेगा। फिर एक महात्मा का वचन है कि

हज़ार गंजे क़नाअत हज़ार गंजे करम।
हज़ार ताअ़ते शबहा हज़ार बेदारी॥ १॥
हज़ार सिज्दओ हर सिजदः रा हज़ार नमाज़।
क़बूल नेस्त अगर ख़ातिरे बियाज़ारी॥ २॥

अर्थात् कोई मनुष्य अति संतोषी होनेपर सहस्र धन भंडार नित्य प्रत ग़रीबों को दान देता होवे और रात्रि दिन तपस्या में व्यतीत करे और सहस्रों बार नमाज़ पढ़ प्रति नमाज़ सहस्रों दण्डवत् करता होवे परन्तु ऐसा तपस्वी और सत्-कर्मी पुरुष यदि किसी जीव को कष्ट देवेगा या मारेगा तो

ईश्वर के सामने उस की यह सब तपश्चर्यायें निरर्थक होंगी और ईश्वर के समीप वह महा अपराधी गिना जायगा। फिर शेख़ सादीने बोस्तां में लिखा है:—

यके दर बियाबां सगे तिश्नः याफ़्त।
बेरूं अज़ रमक़ दर हयातश न याफ़्त॥ १॥
कुलह दल्व करदां पसंदीदह केश।
ब हब्लंदरां बस्त दस्तार ख़ेश॥ २॥
ब हिम्मत कमर बस्तो बाज़ू कुशाद।
सगे नातवां रा दमे आब दाद॥३॥
ख़बर दाद हातिफ़ ज़े अहवाले मर्द।
दावरे गुनाहाने ओ अफ़्व कर्द॥ ४॥

इसका आशय यह है कि एक वन में एक मनुष्य ने एक कुत्ते को देखा कि प्यास के मारे तड़फ २ जान दे रहा है यह देख उस सज्जन धर्मात्मा ने अपनी तुर्की टोपी का डोल और अपनी पगड़ी की रस्सी बना एक कूये से पानी निकाल उस कुत्ते को पानी पिला उस की जान बचाई। इस सत्कर्म के कारण आकाश-वाणी हुई कि हे धर्मवीर सज्जन तूने जन्म से अब तक जितने अपराध किये हैं वे ईश्वर ने इस प्यासे कुत्ते के पानी पिलाने के पलटे में सब क्षमा कर दिये।

महाशयो! विचार करने का स्थान है कि ईश्वर ने दया का दरजा कितना बड़ा रखा है। इसी कारण उसने अपने नाम पर भी रहमान व रहीम के विशेषण लगाये हैं। फिर गुलिस्तां में एक स्थान पर लिखा है कि:—

शनीदह अम् के ज़ क़स्साब गोस्फंदे गुफ़्त—
दरां ज़मां के सरशरा ब तेग़ तेज़ बुरीद—१

सज़ाय हर ख़सो ख़ारे के खुर्दह अमदीदम्—

कसे के पहलुये चर्बम् खुरद् चे ख़ाहद् दीद्—२

इसका अर्थ यह है कि एकदफै जब क़साई ने बकरी की गरदन पर छुरी रक्खी तो वह बकरी उस क़साई से कहने लगी कि सुनरे दुष्टात्मा मैंने जो हरी हरी बनस्पतियें खाई थीं उस के पलटे में मुझ को तो तेरे हाथ से यह प्राण-दंड मिल गया, परन्तु न मालूम उस को जो मेरा मांस खावेगा ईश्वर उसे इस महान् अपराध में क्या दण्ड देवेगा। सज्जनों कुछ बकरी नहीं बोली थी किन्तु यह कवियों का अपने धर्म-ग्रन्थानुसार एक रोचक उपदेश है। तात्पर्य इसका यह है कि पशु पक्षियों के अतिरिक्त मुसल्मानों के धर्म में जैसा कि इस सत्पुरुष का वाक्य है बनस्पतियों का सताना अर्थात् तोड़ना भी महा अपराध है ऐसे ही और बहुत से महात्माओं के वाक्य हैं जो ग्रन्थ के विस्तार के भय से नहीं लिखे जाते हैं। अब मैं उपरोक्त वचनों की सत्यता मुसल्मानी धर्म के मूल ग्रन्थ से दिखलाता हूं असल आयात अर्थात् सूत्र विस्तार भय से नहीं लिखे जाते हैं केवल उनका उल्था ही लिख देना उचित समझा। यदि किसी को निश्चय न हो तो उन पुस्तकों के कथित स्थानों को पढ़ कर तसल्ली कर लेवें। देखिये क़ुरान शरीफ़ के सूरह उलमायद् पारह चार मंज़िल दो आयत तीन का आशय यह है कि हे ईमान वालो न मारो शिकार जिस वक़्त कि तुम अहराम में हो और जो कोई तुम में से जान कर मारे तो उस के बदले में या तो उस शिकार के बराबर पशु छोड़ दो या दो मौतबिर आदमियों के ठहराने के अनुसार कई ग़रीबों को भोजन देना चाहिये कि जिस से वह अपने किये का दण्ड समझे। अल्ला ने माफ़ किया जो हो

चुका। जो कोई न मानेगा तो अल्ला उसे दण्ड देगा क्योंकि अल्ला सब से बलवान है। इसका मतलब यह है कि मुसल्मान लोग जब हज करने जाते हैं तो जहाज के ऊपर चढ़ते समय जो इरादा यात्रा का किया जाता है उसी इरादे का नाम अहराम है बस उस दिन से मक्के पहुंचने तक मुसल्मानों को शिकार खेलना अथवा किसी जीव को मारना ईश्वर ने मना किया है। इस आज्ञा का पालन यहां तक करना कहा है कि यदि जूं कपड़े में हो या बिच्छू तक हो तो उस को भी मार नहीं सकते फेंक देना पड़ता है। खुदाताला की ऐसी आज्ञा देने से यह मन्शा थी कि जब मुसल्मान लोग जानेंगे कि जब खुदा ने अपने पवित्र स्थान में जीवों का मारना बुरा कहा है तो इस काम को बुरा समझ कर वह धीरे२जीवहिंसा करनी छोड़ देवेंगे। इसी आयत के आशय पर शेख सादी इत्यादि सत्पुरुषों के वाक्य हैं। इसके सिवाय जब मुसल्मान लोग कोई इस्म पढ़ते या चिल्ला खेंचते अर्थात् मंत्र सिद्धि करते हैं तो उन दिनों मांस बिल्कुल नहीं खा सकते हैं बल्कि दूध तक जो पशुओं से निकलता है नहीं पीते और जलाली इस्म पढ़ने वाले तो यदि भूल कर भी गो-मांस से छूआ हुआ बरतन अपने खाने में छुआ देवें तो उन का निश्चय है कि वे तत्काल पागल हो जावेंगे—क्योंकि लिखा है कि गो मांस खाने से दिल स्याह हो जाता है फिर कुरान के सूरहहज की छत्तीसवीं आयत में लिखा है कि न पहुंचेगा अल्ला को मांस बलिदान के पशुओं का और न खून लेकिन पहुंचेगी उन को परहेजगारी तुम्हारी।

देखिये यहां भी जीव की कुरबानी अर्थात् बलिदान करना मना किया है।

प्रियवर सज्जनो ! यह तो साधारण जीवहिंसा के निषेध के विषय में थोड़ा सा आप को मुसल्मानी धर्म ग्रन्थों से दिखलाया गया है । अब विशेष कर गो-हिंसा के विषय में जैसी कुछ आज्ञायें कुरान आदि में हैं संक्षेप के साथ लिखी जाती हैं ।

(१) खुदा ने जब कुरान शरीफ़ उतारा है तो उस में सब से पहले सूरह बक़र अर्थात् गाय और बैल की सूरत उतारी है ध्यान का विषय है कि यदि गाय सब जीवों में माननीय न होती तो कुरान में उस का सूरह सब से पहले न भेजा जाता ।

(२) पैग़म्बर साहब ने कुरैशों की लड़ाई में कि जब मुसल्मानों की फ़ौज को कई दिन तक कुछ खाने को न मिला और मुसलमानी फ़ौज भूखी मरने लगी तो गो मांस खाने की आपद्काल जान कर आज्ञा दे दी थी परन्तु आप नहीं खाते थे । इस कारण फ़ौज ने हठ की और कहा कि हज़रत आप भी खाइये उस वक्त पैग़म्बर साहब ने अपनी उँगली पर सात तह कपड़े की लपेट कर उसको रकाबी में डाला और फिर उस कपड़े को खोल कर उँगली को तीन बेर मुँह में दे थूक दिया और कहा कि

ज़ाबेह उल् बक़र–क़ाते उल् शजर–दायमुल् ख़मर ।

अर्थात् गाय के मारने वाले और फलदार दरख़्त के काटने वाले, शराब के पीने वाले का अपराध नहीं क्षमा किया जायगा । ध्यान का विषय है कि कैसी कड़ी आज्ञा गोबध के निषेध में है । कारण इस का यह है कि गाय ही सब जगत् के जीवन का हेतु है ।

(३) लिखा है कि सृष्टि की आदि में जब हज़रत आदम की औलाद बहुत बढ़ी और उन के खाने के वास्ते

कोई वस्तु पैदा नहीं की गई यहां तक कि क़रीब ३०० वर्ष तक वह लोग बिना खाये रहे तो हज़रत आदम ने परमेश्वर से निवेदन किया कि हे प्रभु अब हम से भूख का कष्ट नहीं सहा जाता, इस का उपाय कीजिये। इस निवेदन पर ईश्वर ने आकाश से एक जोड़ी बैलों की और कुछ दाने बाजरे के भेजे और आज्ञा की कि बैलों से अन्न बोओ और खाओ। अतएव प्रातःकाल हल चला कर बाजरा बोया जाता था और शाम को पका हुआ खेत काट कर भोजन किया जाता था।

अब इस से दो बातें सिद्ध होती हैं प्रथम यह कि गाय व बैल स्वर्गीय जीव होने के कारण आदरणीय हैं कि जिन को ईश्वर ने अपनी परम दयालुता से हज़रत आदम को दिया। दूसरे भूख दूर करने को ईश्वर ने अन्न ही भेजा था यदि मनुष्य का भक्ष्य पदार्थ मांस रखते तो ईश्वर आकाश से हज़रत आदम के लिये क्षुधा निवारणार्थ मछली या पक्षी व बकरे आदि रवाना करता बाजरा नहीं भेजता। इस से सिद्ध हुआ कि अन्न ही मनुष्य का भोजन है।

(४) फिर सूरह ने हल की आयत तीन व पैंसठ में जो खुदाताला ने फरमाया है उसका अर्थ यह है कि चौपायों में बोझा रखने की जगह है और पिलाते हैं तुम को अपने पेट की वस्तुओं में से गोबर और खून के बीच से उम्दा दूध जो बलकारक है पीने वालों को और वह जो तोड़ कर उन शहरों तक बोझ ले जाते हैं कि जहां तुम नहीं पहुंच सकते बेशक तुम्हारा ईश्वर बड़ा कृपालु है और घोड़े और ख़च्चर और गधे उत्पन्न किये कि इन पर सवार हो। खुदा तलाये देता है उन बातों को कि जिन को तुम नहीं जानते। इन दोनों आयतों से सिद्ध होता है कि गाय दूध पीने और

बैल व घोड़े आदि बोझा उठाने व सवारी के लिये बनाये गये हैं न कि मार कर खाने के लिये।

(५) फिर सूरह इनआम की आयत १४२ में जो खुदा ने फ़रमाया है उस का अर्थ यह है कि पैदा किये जानवरों में से बोझा उठाने वाले और पृथ्वी पर हल चलाने वाले पस खाओ उस चीज़ से कि रिज़क दिया है तुम को अल्लाताला ने अर्थात् हल चलाने से जो अन्न पैदा हो उसे खाओ।

(६) इस से आगे इसी तरह सूरह इनआम की १४६ आयत में स्पष्ट लिखा है।

व अल्ल लज़ीना हादू हर्रमना कुल्ल
ज़ी ज़ुफ़रीनः व मिन्नुल्बक़र

अर्थ—और यहूदा पर हमने हराम किया था हर नाखून वाला जीव और गाय बैल। इस आयत से स्पष्ट विदित है कि खुदा की आज्ञा गाय मारने की नहीं है। अगर कोई साहब यह कहें कि आज्ञा केवल यहूदियों के वास्ते थी हमारे वास्ते नहीं है। यह कुछ समझ में नहीं आता क्योंकि हज़रत मुहम्मद साहब के समय में तो मुसल्मान लोग गाय को खाते ही नहीं थे, हां यदि खाते होते तो इस प्रकार आज्ञा होती कि इसलाम और यहूदा पर हराम किया, परन्तु चूंकि मुसल्मान लोग तो ऐसा करते ही नहीं थे सिर्फ यहूदी करने लगे थे इसलिये उन्हीं को आज्ञा दी गई है।

ज़रा सोचने का विषय है कि यहूदा को मना किया और आप के नबी के मुँह से, और आप के धर्म ग्रन्थ में दर्ज भी किया गया। पस यदि आप के वास्ते भी मना न होता तो कुरान शरीफ़ में दर्ज नहीं किया जाता, क्योंकि यहूदी तो कुरान शरीफ़ को मानते ही नहीं हैं फिर परमेश्वर का हुक्म

सब मनुष्यों के वास्ते एकसा होता है, ऐसा कदापि नहीं हो सकता कि एक मनुष्य को तो एक काम करने की आज्ञा दी जाय और फिर उसी काम का दूसरे मनुष्य के लिये निषेध किया जावे।

(७) देखिये मौलवी मौहम्मद अशरफ़ साहब ने कुरान शरीफ़ के सूरह यूसुफ की जो टीका की है उस के ११३ सफ़े में इस भांति लिखा है।

यह उस वक़्त जबरील ने यों कहा।
कि ग़म की हुई अब तेरी इन्तहा॥
तेरे हक़ में रहमत का दरया बहा।
और इस तरह इर्शाद हक़ ने किया॥
किया हम ने यूसुफ़ को तुझ से जुदा।
तू समझा नहीं इस का बाइस था क्या॥
न तुझ को हुई इस की कुछ भी ख़बर।
कि तुझ पर गया इतना ग़म क्यों गुज़र॥
कमर किसलिये ख़म तेरी हम ने की।
और आंखों की बीनाई क्यों हम ने ली॥
कहा बाज़ ने यह सबब इस का था।
कि एक गाय थी इस के बस बे बहा॥
और एक उस का बच्चा था वह शीरख़्वार।
छुरी ले के याकूब ने एक बार॥
किया सामने इस का बच्चा हलाल।
हुआ उस घड़ी रंज इस को कमाल॥
न रहम उस पै याकूब ने कुछ किया।
ख़ुदा ने एवज़ इस के यह दुःख दिया॥

देखिये साहब—गाय के बच्चे के मारने के अपराध में ख़ुदा ने अपने प्यारे नबी हज़रत याकूब को कैसी कठिन

सज़ा दी है कि उन के प्यारे पुत्र हज़रत यूसुफ को उन से जुदा कर कुए में डलवाया और उन की कमर टेढ़ी कर आंखों से अन्धा कर दिया। इस से ख़ुदा ने सब को यह बतलाया कि जब हम ने अपने नबी को एक गाय के सताने में यह दण्ड दे उस की नबी होने के कारण ज़रा भी रिआ़यत नहीं की तो फिर साधारण मनुष्य जो गाय को मारेगा या उस का दिल दुखावेगा उस को बहुत ही कठिन दण्ड दिया जायगा। इसी आज्ञानुसार हज़रत मोहम्मद साहब ने फ़रमाया है कि ज़ाबेह उल्बक़र अर्थात् गाय के मारने वाला कदापि नहीं बख़्शा जावेगा अर्थात् सदा के लिये उस को घोर नरक में डाला जावेगा।

(८) इस ज़ाबेह उल्बक़र की आज्ञा का बहुधा पक्षपाती व हठी मुसल्मान लोग यह अर्थ करते हैं कि गो मांस खाने वालों के लिये यह आज्ञा नहीं है बल्कि जो गायों को मारते हैं उन के लिये है अर्थात् क़साई लोग नरक में डाले जावेंगे क़साई लोग कहते हैं कि यह आज्ञा हमारे लिये नहीं है बल्कि वे मनुष्य नरक में डाले जावेंगे जो एक टके के लोभ से उस को हलाल करते हैं क्योंकि किसी जीव को हम अपने हाथ से नहीं मारते।

अब ध्यान करना चाहिये कि यह तीनों इस हत्या को बुरा समझ झूठे बहाने कर रहे हैं परन्तु यदि न्याय से देखा जाय तो अधिकतर इस में खाने वाले ही अपराधी हैं कि जिन की आवश्यकता उन को मारने पर लाचार करती है क्योंकि बाज़ारों में वही वस्तु बेची जायगी कि जिन के लोग ग्राहक होंगे इस से जब गोमांस का कोई ग्राहक ही नहीं होगा तो क़साई लोग गौओं के मारने में अपना टका क्यों

ख़राब करेंगे, इस से सिद्ध हुआ कि उन दोनों गोवध करने और कराने वालों से खाने वाले अधिक अपराधी हैं अतएव इन तीनों को ईश्वर के कोप से बचने का उपाय करना चाहिये ।

(९) बहुधा हठी मुसलमान इतने पर भी नहीं समझते कहते हैं कि हमारे ख़ुदा ने गाय को हलाल पशुओं में रक्खा है अर्थात् इस को खाने योग्य पशु कहा है, इस से हम इस को अधर्म या अपराध नहीं समझते । लीजिये हम उन के इस बहाने का भी निबटारा कर हलाल का अर्थ समझाते हैं । देखिये ख़ुदा ने इस गूढ़ प्रयोजन से गौ को हलाल फ़रमाया है कि यदि हम इस को हराम जीवों की श्रेणी में रक्खेंगे तो हमारे प्यारे मुसलमानों पर गाय का अमृत तुल्य दूध और घी भी हराम हो जायगा और वे इस अमूल्य पदार्थ से सदा के लिये महरूम अर्थात् वंचित हो जावेंगे इस कारण उस को हलाल फ़र्मा अपने प्यारे पैग़ंबर मोहम्मद के द्वारा तुरन्त यह आज्ञा भिजवाई कि जिस को मुसलमानों के मान्य ग्रन्थ मुस्तदरक में हज़रत इब्न मसऊद सहाबी ने लिखा है कि फ़रमाया रसूलअल्लाह सल्लल्लाः अलह वसल्लमने ।

अलैकुम् बअलबानुल् बक़रे व असमानिहा व इय्याकुम् व लुहूमुहा । लबनुहा शिफ़ाउन् व समिनुहा दवाउन् व लह-मुहाद् आउन् ॥

इस का अर्थ यह है कि तुम को उचित है खाना गाय का दूध और घी और ख़बरदार उस के मांस से उस का दूध शिफ़ा अर्थात् आरोग्य है और घी दवा है और मांस बीमारी है ।

गो मांस के लिये खुदा ने इय्याकुम् का शब्द फ़रमाया है, अरबी में यह शब्द किसी चीज़ से बचने अथवा किसी काम को न करने की सख़्त ताकीद के लिये बोला जाता है।

इसी के तुल्य अबूदाऊद ने 'मरासील' नाम की हदीस की पुस्तक में लिखा है कि फ़र्माया रसूलल्लाह ने।

लुहूमल् बक़रे दाउन् व समिनुहा दवाउन् व लबनुहा शिफ़ाउन्।

इस का अर्थ यह है गाय का मांस बीमारी है और घी दवा है और दूध शिफ़ा अर्थात् आरोग्यता है।

ऐसे ही और भी बहुत सी हदीस की किताबों में गो मांस की बुराई और गोघृत अथवा गोदुग्ध के गुण लिखे हैं कि जिन को हम विस्तार भय से नहीं लिखते।

इस पर भी यदि कोई हटी मुसल्मान भाई यह कहने लगे कि यहां भी खुदा ने गो मांस को हराम अथवा निषेध नहीं किया है तो उन को सोचना चाहिये कि खुदा या पैगम्बर साहब कोई मनुष्य नहीं हैं उन्हों ने बड़ी दूरदर्शिता व बुद्धिमानी से गो मांस को बीमारी फ़रमाया है इस कारण कि यदि हम इस को हराम कहेंगे तो विपद् के समय लोग इस को खालेवेंगे क्योंकि विपत्ति के समय सूअर का मांस और रक्त और झटके मांस के खाने को भी अपराध नहीं माना गया है इसी कारण इस के मांस को बीमारी कहा है क्योंकि बीमारी के डर से विपद्काल में भी कोई इस को न खायगा। जैसे कि किसी अन्न में विष मिला हो या वह भोजन बीमारी पैदा करने वाला हो तो कैसी ही भूख हो कोई उस के पास तक न फटकेगा। इसी से खुदा ने इस को हराम नहीं बतलाया बल्कि बीमारी कहा जिस को बड़ी भारी ताकीद

समझ ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन अथवा अपमान न कर इस महा अपराध से बचना चाहिये।

अतः हे मान्यवर मुसलमान बांधवो! मेरी इच्छा उपरोक्त निवेदन से यह नहीं है कि अपने देशभाइयों से बहस या तर्क वितर्क किया जावे। अगर किसी साहब के नज़दीक उपरोक्त आयतों वा हदीसों के दूसरे अर्थ हों तब भी बहस की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि अपने २ धर्म्म-ग्रन्थों के अर्थ उसी मत के मनुष्य सही जान सकते हैं अन्य मत वाला चाहे कैसा ही उस भाषा का विद्वान् अथवा जान-कार क्यों न हो उन के तुल्य सही नहीं जान सकता।

हम ने माना कि मुसलमानी धर्म्मानुसार गाय हलाल जानवरों में से होने के कारण उस का मारना अपराध अथवा धर्म्म विरुद्ध न हो परन्तु यदि गाय की रक्षा की जावे और उस को मनुष्य मात्र का हितकारी पशु समझ उस को न मारा जावे तब भी तो इस की रक्षा करने वाला या न मारने वाला अथवा न खाने वाला धर्म्मानुसार अपराधी अथवा काफ़िर नहीं हो सकता है क्योंकि गाय को मारना अथवा उस की कुरबानी या बलिदान फ़र्ज़ वा कर्त्तव्यकर्म नहीं है। यदि फ़र्ज़ होता तो अरब अथवा काबुल व ईरान देशवासी भी अवश्य करते। इस से जब यह कर्त्तव्य कर्म्म नहीं है और इस को न मारना अपराध नहीं है तो आप लोगों को उचित है कि देश के लाभ और अपने पड़ोसी हिन्दू भाइयों की प्रस-न्नता के अर्थ इस को मारना या खाना छोड़ दीजिये कि जिस से दोनों जातियों में मित्रता बढ़े।

देखिये ५ जनवरी सन् १९०७ ई० को शहर सरहिन्द में काबुल के बादशाह सर अमीर हबीबुल्ला ख़ां साहब जी.

सी. ओ. ने भी फ़रमाया था कि गाय की कुरबानी या गोवध कर के अपने देश भाई हिन्दुओं का दिल न दुखाओ। आपस में मित्रता करो गाय के स्थान में ऊंट और दुंबे आदि की कुरबानी करो बल्कि यहां तक ताकीद फ़रमाई कि २५ जनवरी सन् १९०७ ई० याने बक़रीद को यदि किसी मुसलमान ने हमारे आने की ख़ुशी में एक भी गाय की कुरबानी का संकल्प किया तो हम कदापि देहली न पधारेंगे।

इन न्यायपूर्ण व पक्षपातरहित वाक्यों ने बहुत बड़ा प्रभाव भारतवर्ष की प्रजा विशेष कर हिन्दुओं के दिलों पर किया। अगर काबुल नरेश सहस्रों जागीरें हिन्दू मन्दिरों को दान दे जाते तब भी हिंदू लोग इतने प्रसन्न अथवा कृतज्ञ न होते, जिन के उपलक्ष में हिन्दुओं ने स्थान २ पर सभाएँ कर के धन्यवाद के तार काबुल नरेश की सेवा में रवाना किये और सभाओं और देवालयों में काबुल-नरेश के लिये उन के चिरायु व राज्य निष्कंटक रहने के निमित्त ईश्वर से प्रार्थनाएँ की गईं। इस से यदि आप लोग भी अमीर काबुल के उपदेशानुसार गोवध को बंद कर देवेंगे तो हिन्दू लोग आप की इस कृपा से इतने कृतज्ञ होवेंगे कि जिस का अंत नहीं, और इस के पलटे में जहां कहोगे धन व प्राण लड़ा देवेंगे, जहां आप का पसीना पड़ेगा वहां अपना रक्त बहा देवेंगे, क्योंकि सिवाय इस के हिन्दू व मुसलमानों में शत्रुता व फूट का कोई भी कारण नहीं है।

दूसरे इस की रक्षा से अपने कुटुम्ब व जाति भाइयों का लाभ विचार कर गौजाति की वृद्धि में कोशिश करो क्योंकि खेती करने व बोझा ढोने व सिंचाई करने के लिये बैलों की और दूध और घी के कारण गायों की जैसी आवश्यकता

हिन्दुओं को है वैसी ही मुसल्मानों को भी है। जो अन्न की मंहगाई व बीमारी व अकालमृत्यु का होना पहले हमने गायों की कमी के कारण सिद्ध किया है उस का प्रभाव भी दोनों जातियों पर तुल्य पड़ता है। यदि न्यायपूर्वक देखा जावे तो जिस गुण व लाभ के कारण हिन्दू लोग इस को गोमाता कहते हैं उसी विचार से आप के यहां भी इस को माता नहीं तो माता के तुल्य अवश्य ही कहा जायगा क्योंकि कुरानशरीफ़ में आज्ञा है कि जिस दाई का दूध पीया जावे उस से निकाह कदापि न करना चाहिये क्योंकि दूध पीने के कारण वह भी माता के तुल्य है। अतएव गाय भी दूध पीने के कारण माता के तुल्य हुई कि जिस का मारना भी अनुचित है।

इस से हे प्यारे मुसल्मान भाइयो! आप लोगों को उचित है कि उपरोक्त निवेदन व अपने लाभ हानि पर ध्यान देकर उन मनुष्यों को जो इस के मारने में हठ करते हैं उपदेश कीजिये दया और परोपकार के लाभ दिखलाइये। देखिये शाहनूशाह अकबर व शाहआलम के समय में राज्याज्ञा से गोबध बंद हो रहा था उस फ़रमान पर क़ाजियों और मौलवियों के हस्ताक्षर हो रहे हैं और वह असल फ़रमान तांबे के पत्र पर अब भी महाराजा साहब ग्वालियर के यहां मौजूद है इस के सिवाय अब बहुत से सज्जन मुसल्मान भाइयों का भी देश की दुर्दशा होती देख इस ओर ध्यान हुआ है वे देश से गोबध बंद करने की चेष्टा में लगे हुये हैं जैसे कि मौहम्मद मुरादअली साकिन अजमेर व मौलाना अब्दुलग़नी व सय्यद महमूद साहब लखनवी ने इस की रक्षा का फतवा दिया है यहां तक कि मौलवी हिदायत रसूल साहब लखनवी

ने २४ मई सन् १८९७ ई० को जुबिली कानफरेन्स हिन्दू मुसलमानों में प्रीति बढ़ाने के अर्थ स्थापित की जिस में गोबध के निषेध के अर्थ मन्तव्य पास किया जिस को लखनऊ के सब मुसलमानों ने स्वीकार किया था। हाल में मौलवी फर्रुखी साहब उस्ताद नव्वाब साहब रामपुर ने एक पुस्तक जिस का नाम (बर्कत बग़ैर हरकत) रक्खा है, मुसलमानों के कल्याण के अर्थ इस विषय की लिखी है। उस में दिखलाया है कि ख़ाली रियासत रामपुर के मुसलमान गोबध के कारण दस अरब तेरह करोड़ तेईस लाख तरेपन हज़ार रुपये का सालाना नुक़सान गोबध से उठा रहे हैं। इसी तरह फ़क़ीरुद्दीन साहब साकिन ज़िला बैरीसाल अहाता बंगाल दौरा कर के मौलवियों से गोबध निषेध का फ़तवा प्राप्त करने को फिर रहे हैं, चुनांचे बम्बई जी में उन्हों ने व्याख्यान दिया था उस का सारांश तीन मार्च सन् १९०५ ई० के श्री वेंकटेश्वर समाचार पत्र में दर्ज हुआ था। उन्हों ने मामूली समय में पंद्रह लाख गायों का माहवार मरना लिखा था जिस में से पांच लाख अपनी मौत से और दस लाख चमड़े वग़ैरह के लालच से मारी जानी लिखीं थीं जिस को सुन कर कलेजा धड़कता है।

देखिये मेरठ की जियाब जंतरी सन् १९०६ ई० में अलाउद्दीन ख़िलजी के वक्त में चौदह आने १/२ पाई का एक मन घी बिकना लिखा है जो कि गोबध के कारण सन् १८५७ ई० में रुपये का चार सेर हो गया और अब सन् १९०७ ई० में एक रुपये का एक सेर से भी कम हो रहा है अतः इस आधार पर दृढ़ता पूर्वक कहा जा सकता है कि यदि गोबध की रोक नहीं हुई तो सन् १९५७ ई० में याने आज से पचास साल आगे एक रुपये का चार छटांक और सन् २००० ई० में एक रुपये

का तीन चार तोले घी हो जावेगा, कि जो रईसों के यहां अतर की शीशियों में दिखलाई दिया करेगा जैसे अब हम पहले के साढ़े बाईस सेर के भाव को आश्चर्य की दृष्टि से देखते हैं वैसे ही उस समय के मनुष्य आज कल के एक सेर के घी के भाव को भी आश्चर्य मान कहेंगे कि इतना भाव होना असम्भव है यदि इस को असत्य समझो तो हमारे इसी किताब की अपील शाहनशाहे हिंद के पृष्ठ को देखो जिस में सरकारी कागज़ात से सिद्ध किया गया है। इससे हे प्यारो! अब गौ की रक्षा का शीघ्र उपाय करो नहीं तो फिर पछताओगे हाथ मल मल रह जाओगे। ऐसा अवसर फिर न पाओगे।

ईसाई धर्मावलम्बियों से निवेदन।

सज्जनो! आप लोगों के यहां दया और सहनशीलता इस सीमा तक बढ़ी हुई है कि जिसे पढ़ या सुन कर आश्चर्य होता है जैसे कि एक स्थान पर युसूमसीह ने आज्ञा दी है कि यदि कोई क्रोध वश हो कर तुम्हारे दाएं गाल पर थप्पर मारे तो तुम को उचित है कि बायां गाल भी उस के सामने कर दो और कुछ विचार पलटा लेने का मत करो। देखिये और कौन मत है कि जिस में इतनी सहनशीलता भरी हो रहा दया करना सो इस के विषय में भी बायबिल के स्थान स्थान पर शिक्षाएं लिखी हुई हैं, जिन का नमूने के तौर पर थोड़ा सा हम आप लोगों की भेट करते हैं, देखो बायबिल का उत्पत्ति प्रकरण अध्याय पहला आयत ३९ में ईश्वर आज्ञा देता है कि, लो मैं ने नाना प्रकार के साग पात जो सम्पूर्ण पृथ्वी पर हैं और सहस्रों प्रकार के वृक्ष जो फलों से लदे हुये हैं तुम्हारे खाने के निमित्त पैदा किये हैं, देख लीजिये कि

आदि में हीं अन्न और तरकारी आदि खाने की आज्ञा दी गई है नकि मांस की।

इस स्थान पर हम बायबिल का असली वाक्य लिखते हैं:—

GENESIS CHAPTER 1 P. H. 29

And God said, behold, I have givin you every bread bearing seed, which is upon the face of all the earth, and every tree, in which is the fruit of a tree yeilding seed, to you it shall be for meat.

फिर मीका की पुस्तक अध्याय तीन में दो से पांच आयत तक में लिखा है कि जो भलाई से मुँह फेरता है और बदी से प्रीति करता है जो जीवों का चमड़ा उन पर से उतारते हैं और उन का मांस हड्डियों से जुदा करते हैं और जो मेरी सृष्टि का मांस खाते हैं और उन की खाल उन पर से खींच लेते हैं और उन के हाड़ों के टुकड़े करते हैं और उन्हें अलग कर देते हैं जब वह परमेश्वर की शरण लेवेंगे तब वह उन की न सुनेगा, और अपना मुँह छिपा लेवेगा क्योंकि उन्हों ने अपने कर्म्मों को नष्ट किया अर्थात आज्ञा का उल्लंघन किया। ऐसे ही और बहुत से वाक्य हैं जिन को विस्तार भय से न लिख कर केवल उन का पता दिया जाता है जैसा कि होशिया की पुस्तक अध्याय ४ आयत २--३--१९ और अध्याय ५ आयत २—और अध्याय ८ आयत १३—और अध्याय १३ आयत १३ और अध्याय ६ आयत ६ इसी भांति युसाह की पुस्तक अध्याय पहला आयत ११—१५ और रोमन्सलेटर के बाब १४ की आयत २० से लेकर २२ तक में हर प्रकार की निर्दयता और मांस भक्षण का पूर्ण रूप से निषेध किया गया है।

अतएव इतने निषेध पर भी यदि आप को जाति रीति ने लाचार कर रक्खा हो तो हम आप लोगों को अधिक कष्ट

देना नहीं चाहते केवल इतनी ही प्रार्थना करते हैं कि हिन्दुस्तान कृषि प्रधान देश है यहां बिना गाय और बैल के कोई वस्तु नहीं मिल सकती है न बिना इस के किसी दरिद्र से अमीर तक का निर्वाह हो सकता है जो कि अब गाय और बैल अकाल और नित्यप्रति की हिंसा के कारण लुप्तप्राय होते चले जाते हैं। इस से परमेश्वर के क्रोध और उस की आज्ञा भंग के भय या अपनी और अपने देश की उन्नति और भलाई के ध्यान से जहां तक हो सके गोवध के रोकने में सहायता करनी चाहिये। जो कि आप लोग इस समय के राजा के जाति-भाई हैं इस से पूर्ण आशा है कि यदि आप इस में सच्चे मन से कोशिश करेंगे तो निस्सन्देह यह हानिकारक प्रथा इस देश से उठ जावेगी और देश जो गोवध के कारण अवनति की सीमा तक पहुँच गया है फिर पहले की भांति पूर्णोन्नति प्राप्त कर सकेगा।

श्रावक धर्म्मावलम्बी जैनियों से प्रार्थना।

प्रियवर सज्जनो! आप लोगों को दया धर्म्म का उपदेश करना ऐसा है जैसे कि सूर्य्य को दीपक से आरती करनी अथवा समुद्र के प्रति मोतियों की भेट चढ़ानी। आप के यहां तो सम्पूर्ण शास्त्रों का सारांश दया और अहिंसकता ही है। उपकारी और नेत्रों से दिखलाई देने वाले जीवों की रक्षा तो अलग ही रही किन्तु छोटे २ जीव जो नेत्रों से दिखलाई तक नहीं देते और मुख की गर्म भाफ से तत्काल मर जाते हैं उन की रक्षा के हेतु आप लोग कष्ट उठा मुँह के आगे कपड़ा लटका लेते हैं कि जिस से वार्त्तालाप करने के समय वे जीव भाफ निकलने से मर न जावें। देखिये ऐसे दया के साक्षात् अवतारों के सामने मेरी क्या सामर्थ है कि

जो गोरक्षा के विषय में कुछ निवेदन कर सकूं परन्तु क्या किया जावे प्राकृतिक स्वभाव छूट नहीं सकता। शास्त्रों ने जो ब्राह्मणों को महीसुर वा जगद्गुरु की पदवी से भूषित कर रक्खा है इस से निर्भय आप लोगों की सेवा में भी इस विषय में प्रार्थना करने का हौसिला हो गया। सज्जनो! वर्त्तमान समय में आप लोगों की कार्य्य प्रणाली पर जो दृष्टि की जाती है तो आप के यहां भी दया केवल पोथी पुस्तकों में ही दिखलाई देती है। आप लोगों से जब गोरक्षा के विषय में निवेदन किया जाता है तो बहुधा सज्जन यही उत्तर देते हैं कि हमारे यहां तो शास्त्रों में समस्त जीवों पर दया करना लिखा है दया के अधिकारी जैसे कुत्ते बिल्ली आदि जीव हैं वैसे ही गाय बैल जीव सब में तुल्य हैं। यह कथन आपका सत्य है किन्तु आप ही विचारें कि आप समस्त जीवों के ऊपर दया कर सकते हैं या नहीं ध्यान देने से विदित हो जायगा कि इस कलिकाल में समस्त जीवों की रक्षा करना अत्यन्त कठिन ही नहीं वरन दुःसाध्य है जब यह दशा है तो हम आप से एक छोटा सा प्रश्न करते हैं कि आप के सन्मुख यदि किसी एक ही स्थान में एक हिंसक जन्तु किसी साधु वमुनि के प्राण लेने पर उद्यत हो रहा है और दूसरा दुष्टजीव किसी साधारण मनुष्य के खाने को लपक रहा है तो अब बतलाइये कि इस में आप का सामर्थ्य रखते हुए क्या कर्त्तव्य है? या आप का शास्त्र या आप की दया दोनों में से प्रथम किस की रक्षा करने की आज्ञा देती है? आप बड़े धर्म-संकट में पड़ पूर्ण विचार के पश्चात् यही उत्तर देवेंगे कि प्रथम साधु का ही प्राण बचाना श्रेष्ठ है इस पर जब यह प्रश्न किया जाय कि क्यों साहब यहां तो जीव तुल्य होने के अतिरिक्त दोनों

एक ही जाति अर्थात् मनुष्य हैं तो फिर ऐसी दशा में साधु के प्राण बचाने में प्रधानता का क्या कारण है? प्रश्न को आप यही उत्तर देवेंगे कि यह साधु उस साधारण मनुष्य की अपेक्षा अत्यन्त उपकारी है। उन की शिक्षा व उपदेश के कारण धर्म की वृद्धि हो मनुष्य निर्वाण पद को पहुंच सकते हैं बस इसी जगह आप का जीव को तुल्य मानना जाता रहा। सिद्ध हो गया कि उपकारी जीव की रक्षा करना प्रथम कर्त्तव्य है इसी से गौ की भी अत्यन्त उपकारी होने के कारण कुत्ते व बिल्ली आदि की अपेक्षा रक्षा करना मुख्य कर्त्तव्य सिद्ध हो गया। अब यदि आप उलटा हम से यह प्रश्न करने लग जावें कि गौ किस तरह से उपकारी जीव है? आप का इस में क्या प्रमाण है? लीजिये सुनिये कल्पना कर लीजिये कि एक मनुष्य ने कुत्ते या बिल्ली की रक्षा कर उन की जान बचाई दूसरे मनुष्य ने गायों की रक्षा की। अब देखिये प्रथम मनुष्य की दया के कारण कुत्ते व बिल्ली अपनी पूर्ण आयु को पहुँच पंच तत्त्व को प्राप्त हो गये। जिन के जीव-दान के पुण्य का वह धर्मात्मा अधिकारी हुआ इस से अधिक उस का और कुछ पुण्य न होगा। बरन उस आयु बढ़ने की अवस्था में उन्हों ने जो अधर्म चूहे पक्षी आदिक मार कर किये उन महा पापों में उस धर्मात्मा को भी कुछ भाग मिल सकता है। अब दूसरे मनुष्य का हाल सुनिये जिस ने गायों की जान बचाई अर्थात् उस के पलटे में गायों ने अमूल्य रत्न दूध व घी दे संसार को तृप्त किया हल व गाड़ी के लिये बैल व बछड़े दिये। जो कि इस पुस्तक के दूसरे अध्याय में प्रमाण सहित सिद्ध कर के दिखला दिया गया है कि एक गाय अपनी आयु में ११९६०० मनुष्यों का एक पीढ़ी में कम से कम

पालन कर सकती है और यह भी सिद्ध कर के दिखलाया गया है कि गायों के गोबर की खाद की न्यूनता के कारण भ्रष्ट विष्टा के खेतों में पड़ने के कारण नाना प्रकार की बीमारियों की वृद्धि हो गई है। दूसरे दूध और घी की न्यूनता के कारण जिस का हेतु गायों की न्यूनता है सब मनुष्य घी व दूध नहीं खा सकते हैं कि जिस से वीर्य परिपक्व न हो कर संतान निर्बल हो अकाल मृत्यु की अधिकता होने लग गई। फिर इस के अतिरिक्त गायों की न्यूनता से बैल भी मँहगे होने के कारण खेत अच्छी तरह न जोते जाने से उन में अन्न की पैदावार भी कम हो गई जहां मनों का भाव था वहां सेरों का रह गया घी के भाव की कमी से उस में चर्बी का मिलाना आरम्भ हो गया कि जिस से धर्म भ्रष्ट होने के सिवाय नाना प्रकार के रोगों की उत्पत्ति होने लग गई। अतएव उस धर्मात्मा के गोरक्षा करने के कारण उपरोक्त सब हानियें दूर हो जावेंगीं। अर्थात् गायों की वृद्धि के कारण घी सस्ता होने से चरबी का मिलना बन्द हो धर्म्म भ्रष्ट न होगा। गोबर की खाद की अधिकता से अन्न आरोग्य और बलकारक उत्पन्न होगा। यह जो प्लेग व हैज़ा आदि रोग फैलते हैं, हज़ारों आदमी नित्य मरते हैं न मरेंगे। बैल अधिक पैदा होने से सस्ते हो कर हमारे भाइयों को पचास रुपये का बैल दस बीस रुपये में मिलने लगेगा। अधिक जुताई होने से अधिक पैदावार हो कर अन्न सस्ता होगा। हज़ारों आदमी जो पहले भूखे मरते थे अब न मरेंगे। कुत्तों व बिल्लियों को जो अन्न की मंहगी के कारण एक टुकड़ा रोटी का देना कठिन हो रहा था अब आसान हो जावेगा। घी और दूध के सस्ते मिलने से मनुष्य बलवान् होने लगेंगे।

हैज़े और प्लेग आदिक रोगों के क़ाबू के न रहेंगे, बालविधवाओं का होना कम हो जायगा। इस के अतिरिक्त घी दूध के मँहगे होने से जो विवाहादिक उत्सवों में जहां हमारे सैकड़ों रुपये खर्च होते थे उस समय इस का आधा भी खर्च न होगा। अतएव अब आप ही विचार कीजिये कि जब उस धर्मात्मा के गायों की रक्षा करने के कारण (इस संक्षेप कथन के अनुसार) रोगों की कमी हुई तो मानो उस ने सहस्त्रों औषधालय वा वैद्य अपनी ओर से मुक़र्रर कर दिये सैकड़ों मन दवा मुफ़्त बांटने का फल उस को प्राप्त हुआ। प्रत्येक गाय की जान बचाने में उस को इतना पुण्य हुआ कि मानो उस ने ११९६०० मनुष्यों को एक दिन भोजन दिया। जब गाय बैलों की अधिकता से अन्न सस्ता हुआ तो जिस क़दर भूखे पहले मरते थे अब सब तृप्त हो सुख की नींद सोने लगेंगे मानो उस ने सहस्त्रों सदाव्रत बिठला दिये। वीर्य्य की निर्बलता से जो सन्तानें निर्बल पैदा हो कर शीघ्र मर जाती थीं लाखों बालविधवाएँ होती थीं अब घी व दूध के कारण वीर्य्य पुष्ट हो आयु बढ़ी तो मानो इस गोरक्षा के कारण सैकड़ों आदमियों की जान बची उस ने बालविधवाओं का आशीर्वाद लिया। सच तो यह है कि उस ने केवल गोरक्षा ही नहीं की बरन संसार भर के प्राणी मात्रों को नाना प्रकार के लाभ पहुँचाने का प्रबन्ध कर अपने लिये गोलोक में सहस्त्रों युगों तक रहने के लिये स्थान बना लिया।

सज्जनो! उपरोक्त कथन से आप को विदित होगया होगा कि केवल गोरक्षा करने से ही समस्त जीवों की रक्षा हो सकती है, और मनुष्य असंख्य पुण्य का भागी हो सकता है। इस कारण हम सब को ऐक्यता कर के गोरक्षा पर कटि-

बद्ध होना चाहिये, जिस से आत्युन्नति व देशोन्नति व धर्मोन्नति आदिक सहस्त्रों सांसारिक लाभ हो कर अंत में सद्गति को प्राप्त होवें।

साधु महात्माओं व महंतों की सेवा में निवेदन।

हे परमपूज्य सम्प्रदायों व अखाड़ों के महंत व मठाधिकारी महात्माओं! ध्यान से देखा जाता है तो इस घोर कलिकाल में आप लोग ही इस निराधार आकाश के स्तम्भ हैं जब तक आप लोग विद्यमान हैं तब तक इस कलियुग का पूरा प्रभाव होते हुये भी धर्म बना हुआ है उस देश का अहोभाग्य है जहां आप लोग निवास करते या जिस स्थान को आप अपने चरणों से पवित्र करते हैं जब २ धर्म का लोप होता रहा है तब २ आप लोग ही जगदुद्धार के निमित्त उपदेश कर धर्म्म स्थापन करते रहे हैं परन्तु शोक का स्थल है कि कुछ दिनों से यह परिपाटी उठ गई है। भगवन् आज इस पवित्र भूमि आर्य्यावर्त्त में गोबध से जो महान् पाप हो रहा है वह आप महात्माओं से छिपा हुआ नहीं है। गो महिमा व गोरक्षा के विषय में वे कौन शास्त्र व पुराण हैं कि जिन में अध्याय के अध्याय न लिखे गये होवें वे सब आप ही जैसे संत व महात्माओं और ऋषियों के अमूल्य वचन हैं, किन्तु शोक का स्थल है कि आजकल जहां साधु समागम होता है वहां गोरक्षा विषय जिस की अत्यन्त आवश्यकता है कुछ भी चर्चा नहीं होती है। जीव व ब्रह्म की ऐक्यता व संसार को स्वप्नवत् सिद्ध करने व वैराग्य उत्पन्न कराने में आप लोग धाराप्रवाह उपदेश करते चले जाते हैं। या मंदिरों के जो साधु व महंत हैं वे भगवद्भक्ति व तुलसी पूजन, व व्रतादिक करने का उपदेश करते रहते हैं या बहुधा साध नाम के लिये

कूआ या शिवाला बनवानें या तालाब खुदवाने पर कमर कसे रहते हैं। यद्यपि ये समस्त शुभ कर्म हैं तथापि गोमहिमा व गो रक्षा के उपदेश जो इन सब साधनों के मूल हैं किसी भी महात्मा के मुख से आज तक नहीं सुने गये।

देखिये दरिद्र से धनवान् तक और छोटे जमीन्दार से महाराजाओं तक समस्त आप लोगों के शिष्य व आज्ञानुवर्ती हैं। यदि आप लोग उन को दूसरे तीसरे दिन भी गो महिमा सुना कर और गो रक्षा का धर्म और उस से सांसारिक लाभ बतला कर उपदेश करते रहेंगे और समझाते रहेंगे कि कोई मनुष्य गाय को बधिकों या उन के दलालों के हाथ न बेचें और सामर्थ्य रखते हुए वृद्ध व अपाहज गाय व बैलों की माता पिता की भांति आप सेवा करें। यदि सामर्थ्य न हो तो उन को गोशाला में ले जा कर पहुंचा आवें। ऐसी आप की थोड़ी सी कृपा दृष्टि से गोबध बहुत कुछ कम हो सकता है क्योंकि छोटों से बड़ों तक ऐसा कोई भी नहीं कि जो आप के वचनों को टाल सके या आप के मुखारविंद से निकले हुए उपदेशों को पत्थर की लकीर न समझें। देखिये हाल की मनुष्य गणना में साधुओं की संख्या ५२ लाख गिनती में आई है। अतएव आप में से जिस प्रकार कि स्वामी आलाराम जी स्वागर सन्यासी स्थान २ पर कष्ट उठा कर गोरक्षा का उपदेश देते हुए बिचरते हैं या जैसे बिधौची कलां रियासत पटियाला के उदासीन साधु बाबा भगवान् दास जी तन मन धन से गोबध को जड़ से दूर करने की चेष्टा कर रहे हैं। या जैसे बोहर की गद्दी के साधु आदीनाथ जी महाराज पिंजरापोल देहली के प्रबन्ध में दत्तचित्त हैं ऐसे ही और साधु भी कटिबद्ध हो उपदेश करें तो लाखों वर्ष के तप या करोड़ों यज्ञ या उमर भर की देव-सेवा से अधिक पुण्य लाभ करते हुये

इस भारतवर्ष देश को अपने अमृतमय उपदेशों के द्वारा फिर पहले की भांति हरा भरा कर उन्नति के शिखर पर पहुँचा सकते हैं। गौ व बैल व दूध और घी के सस्ते होने से फिर किसी को भी आप की सेवा कठिन नहीं प्रतीत होवेगी। नहीं तो दूध और घी जैसे अमूल्य रत्न इस पुण्य भूमि से थोड़े ही दिनों में लोप होजावेंगे उस समय गृहस्थियों से अधिक आप लोगों को कष्ट होगा। देखिये हरि भजन और तपस्या से तो केवल अपना ही उपकार होता है परन्तु मुख्य धर्म व भजन वही है कि जिस से अपना और संसार दोनों का भला हो सो ऐसा धर्म गोरक्षा के अतिरिक्त और नहीं है। एक पंथ दो काज इसी का नाम है। नहीं तो गृहस्थ छोड़ कर जिस साधु के मुख से गोरक्षा के उपदेश न निकलें हमारी बुद्धि में वह साधु वर्षा के कीड़ों के तुल्य हैं कि पैदा हुये और मर गये। देखिये राजाओं और सेठों के मंदिरों में बहुत से गांव ख़र्च के वास्ते लगे हुये हैं और सैकड़ों रुपये नित्य का भोग उन में लगता है कि जो साधुओं के प्रसाद से बच कर बहुतसा बाज़ारों में बिकता है। यदि उस भोग में कुछ भाग गोभोजन का भी नियत कर दिया जावे अर्थात् मंदिर की प्रतिष्ठा के अनुसार दस बीस या पचास गौओं का उस में पालन किया जावे तो गोपालन से श्रीकृष्ण जी महाराज भी कि जिन्होंने निज कर कमलों से गोसेवा कर के अपना नाम गोपाल रखाया है अत्यन्त प्रसन्न और सन्तुष्ट रहेंगे, और दूध और घी भी कि जो बाज़ारों से आप को महा भ्रष्ट मिलता होगा वह नित्य शुद्ध प्राप्त होता रहेगा। आशा है कि साधु मण्डली मेरी इस धृष्टता को क्षमा कर के इस निवेदन पर अवश्यमेव ध्यान देवेगी।

श्रीमान् स्वाधीन नरपति गणों की सेवा में अपील।

हे महाराजाधिराजो व हे धर्ममूर्त्ति व धर्मावतारो! गो महिमा कुछ आप महाराजाओं से छिपी हुई नहीं है। आप के पुरुषा लोग जब तक इस लोक व परलोक की हितकारिणी गौमाताओं के संकट को दूर नहीं कर लेते थे तब तक जल-पान तक करना उन को हराम था। यह बात पुराणों व इतिहासों से पाई जाती है कि गो रक्षा में प्राण तक दे देना उन के निकट कोई कठिन काम नहीं था। यह उन ही पवित्र कथाओं और उपदेशों का प्रतिफल था कि जो आर्य्य महर्षियों ने बड़ी सावधानता से वर्णन किये थे जिस के कारण जब तक उन पर ध्यान रहा देश मालामाल और प्रजा निहाल रही। आज उन्हीं गौओं की प्रतिष्ठा और उन के उपकार पर दृष्टि न करने से देश की जो दुर्दशा है वह आप श्रीमानों से छिपी हुई नहीं है अर्थात् साधारण अच्छे वर्षों में अस्सी लाख से अधिक मनुष्य क्षुधा से प्राण त्यागते हैं, और भरत-खंड के दो तिहाई मनुष्य एक समय आधे पेट भोजन कर आयु टेर करते हैं। क्या यह शोक का स्थान नहीं है? इस के अतिरिक्त अकाल के समय में आप महाराजों के उपस्थित रहते हुये लक्षों गौ बैल और भैंसे दो दो चार चार रुपये में खुले मैदान बधिक लोग ले जाते हैं कि जिस के कारण से कृषि कार्य साधन में कठिनता और दूध और घी जैसे अमूल्य रत्न की अलभ्यता होगई है, और जिस की न्यूनता से वीर्य पुष्ट और अंग दृढ़ न होने से नित्य प्रति अकाल मृत्यु से देशवासियों का हृदय विदीर्ण हो रहा है। यदि थोड़ी भी आप महाराजों की दृष्टि इस ओर होजावे तो अकाल के समय में उन के प्राण बचा लेने कुछ भी कठिन नहीं हैं

क्योंकि राजदरबारों में एक छोटे से दरबार या राज्य सरकार या साधारण फंडों में रुपये का कुछ भी ध्यान नहीं किया जाता है। जैसे कि हाल में समाचार पत्रों में लिखा था कि जनाब प्रिंस औफ वेल्स के एक समय के आतिथ्य सत्कार में महाराज कशमीर का छः लाख रुपया व्यय होगया कि जिस से सिवाय दो घंटे के कुतूहल के और कोई लाभ सांसारिक अथवा पारिलौकिक नहीं हुआ। हम राजभक्त हैं हमारा सर्वस्व अपने राजा पर न्यौछावर होजाना कुछ बड़ी बात नहीं, परन्तु यदि इसी प्रकार दरबार की ओर से अकाल पीड़ित स्थानों के पशुओं के खरीदने में भी दो चार लाख रुपये लगाये जाकर उन पशुओं को किसी नदी की तराई अथवा बन में जहां उन दिनों में भी चारे की न्यूनता नहीं होती हो पहुँचा दिये जाया करें और फिर अकाल दूर होजाने के पश्चात् वे पशु प्रजा को उचित मूल्य में लौटा दिये जाया करें तो निःसन्देह दरबार के लगाये हुये मूल धन से अधिक प्राप्त होसकता है। इस के अतिरिक्त राज्य में गाय बैलों की न्यूनता न होने से खेती का काम सरलता के साथ चल कर हर घड़ी आप का कोष द्रव्य से परिपूर्ण रहेगा। अब उन्हीं गाय बैलों की न्यूनता से जो सहस्त्रों बीघे खेती बिना बोये रह जाती है या दूना तिगना रुपया बैलों के मोल लेने में खर्च कर खेती की जाती है अथवा तक़ावी दी जाती है या मालगुज़ारी मुल्तवी या माफ़ फ़रमाई जाती है ऐसा करने से यह सब कठिनाइयें दूर हो कर बड़ा भारी लाभ दरबार को हो सकता है।

इस के अतिरिक्त धर्म की ओर दृष्टि की जाती है तो इस गोरक्षा के पुण्य के सन्मुख लक्षों अश्वमेध अथवा राजसूय

यज्ञों का फल तुच्छ है। शास्त्रों में जितने धर्म कहे गये हैं उन सब से गोसेवा का फल सहस्त्रों गुणा अधिक लिखा है। कृपा कर के उन शास्त्रोक्त वचनों पर जो इस पुस्तक में पृष्ठ से पृष्ठ तक में निवेदन किये गये हैं ध्यान दीजिये।

इस में तो कुछ भी सन्देह नहीं है कि हिन्दू राज्यों में गोवध मनुष्य वध के समान अपराध गिना जाता होगा किन्तु उस में समय के प्रभाव से कुछ शिथिलता हो गई हो तो अपने धर्म का गौरव समझ फिर उस को निर्भयता से क़ानून द्वारा दृढ़ कर दीजियेगा। दूसरे यदि राज्य भर के ये हितकारी पशु दर्ज रजिस्टर रहा करें और उन की पैदायश और मौत भी लिखी जा कर उन के राज्य से बाहर जाने की मनाही रहे तो इस जीव की पूर्ण रक्षा हो कर बहुत भारी लाभ राज्य और प्रजा को हो सकता है। देखिये अंगरेज़ी राज्य के इटावा नगर निवासी एक छोटे से रईस श्रीमान् कृष्ण बलदेव जी भटेले ने अपनी ज़मींन्दारी के ४२ ग्रामों का इसी प्रकार प्रबन्ध कर रक्खा था, एक भी गाय बैल इन ग्रामों से बाहर किसी प्रकार से भी नहीं जा सकता था, जो उन की आयु भर उत्तमता से चलता रहा। जो कि वे तो एक छोटे से पराधीन रईस थे आप स्वतन्त्र नरेशों की तो ज़रा सी दृष्टि इस ओर होना काफ़ी है। इस के अतिरिक्त यदि आप श्रीमान् जनाब साहब गवर्नर जनरल बहादुर या दूसरे राज्यप्रति-निधियों और श्रीमान् युवराज आदि से भेट करने के समय मेरे दूसरे अध्याय के निवेदन के अनुसार धर्म सम्बन्ध छोड़ इस हितकारी जीव की रक्षा की आवश्यकता उचित समय पर एकान्त में प्रकट फ़रमाते रहा करें तो बहुत बड़ा प्रभाव अंगरेज़ी गवर्नमैण्ट पर हो सकता है, क्योंकि आप महारा-

जाओं का ऐसा न्यायपूर्ण कथन बड़ी प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जा सकता है। इस परमोपकार के कारण सांसारिक लाभों के अतिरिक्त धर्मदृष्टि से आप श्रीमानों को अंत समय इंद्रासन या गोलोक मिलना कोई बड़ी बात नहीं है।

अतएव सविनय नम्रता पूर्वक निवेदन है कि दरबारों से मेरी इस प्रार्थना के अनुसार या किसी और उत्तम प्रकार से जिस को राज्य उचित समझे बहुत शीघ्र ऐसा उपाय फ़रमाया जावे कि जिस से इस लोक और परलोक की सहायक गौमाताओं की रक्षा हो। और केवल गाय बैल ही नहीं बरन यह ब्रह्मा की अनन्त सृष्टि नाश होने से बचे।

दूसरे एक परमावश्यक प्रार्थना यह भी है कि जो बंजर भूमि अथवा बन व जंगल आदिक राज्य में होवें उन को कटवा कर खेत न बनवाया जावे क्योंकि ऐसा करने से इन उपकारी पशुओं के पालने में अंगरेजी राज्य की तरह अत्यन्त कठिनता हो जायगी। फिर बन व जंगलों का कट जाना साइन्स अर्थात् पदार्थ विद्या के द्वारा वर्षा के कम होने का कारण सिद्ध हो चुका है। इस के अतिरिक्त बनों में जो मनुष्यों की आवश्यकता की वस्तुएँ अर्थात् गर्म मसाले और औषधियें उत्पन्न होती हैं वे सब नष्ट हो जावेंगीं। थोड़े से लाभ को इतना भारी नुक़सान उठाना बुद्धिमानी नहीं है।

दूसरे राज्य के अन्तर्गत या बाहर जो मेले या मवडी लगती हैं उन में पहरा चौकी बिठला आज्ञा दी जावे कि गौएँ उस में बिल्कुल न आने दी जावें, और वृद्ध बैल भी बिल्कुल न दाख़िल होने दिये जावें क्योंकि अधिकतर बूचड़ों को इन मेलों की बदौलत गोहत्या करने में बड़ी सहायता

मिलती है। आशा है कि दरबार दृढ़ता के साथ ध्यान देवेगा। अंत में निवेदन है कि यह मेरी प्रार्थना महासागर को जिस में असंख्य रत्न भरे रहते हैं तुच्छ कौड़ियों की भेट चढ़ाने के तुल्य है, इस में यदि कोई अनुचित वाक्य होवें तो हृदय से शुभचिन्तक जान क्षमा प्रदान कीजियेगा। शुभमस्तु

गायों के परताप से भारत की भूमि थी हरी
गायें बध जब से हुईं तब से पड़ा काल और मरी

गोशालाध्यक्षों से निवेदन।

प्रियवर गो-भक्तो! आप सज्जनों ने जो गो-शालायें स्थापित कर उन में वृद्ध अथवा लूली लंगड़ी अपाहिज गो-वंश की सेवा करना आरम्भ किया है इस महान् पुण्य की प्रशंसा करना मनुष्य मात्र की शक्ति से बाहर है। क्योंकि शास्त्रों में अनाथ गोवंश के शीत निवारणार्थ स्थान बनवाने अथवा वस्त्र ईंधन का प्रबन्ध करने या समय पर जल देने और लवण आदिक खिलाने का पुण्य समस्त प्रकार के दानों से श्रेष्ठ व उत्तम बतलाया है। यदि आप लोग इन गौओं को स्थान न देते तो समय के प्रताप से ये अवश्य बधिकों की निर्दयता से प्राण त्याग करतीं। किन्तु बहुधा धर्मात्मा गो-प्रेमी जन जो बधिकों को गौ ले जाते देख कर उन से उन के बचाने का प्रयत्न करते हैं यह उन की भूल है क्योंकि यदि बल पूर्वक छुड़ाया तो न्यायालय में दोषी ठहर दण्ड पावेंगे। और फिर पक्षपात से गोहिंसक और अधिक गो-हत्या करने लगेंगे। यदि नरमी व प्रसन्नता से मूल्य दे छुड़ाई गई तो वधिक लोग अवश्य उस का दूना तिगुना धन लेवेंगे जिस से उस एक गाय के मूल्य से वे फिर दो तीन गौ खरीद लावेंगे इसी प्रकार तुम्हारे छुड़ाने से उन को अधिक धन और

गौओं के खरीदने को मिलेगा। अंत को तुम्हें लाचार हो इनकार करना पड़ेगा अर्थात् १ गाय के बदले कई गायों के प्राण उस दया के प्रताप से नष्ट होवेंगे। गौओं का प्राण बचाना तो परम धर्म है किन्तु ऐसी दशा में परिणाम पर ध्यान देना उचित है। हमारी बुद्धि में इस के बदले यदि यह पता लगाया जावे कि यह गौ कहां से लाया है और उस दुष्ट बेचने वाले को तलाश कर और उस को धर्माधर्म समझा लज्जित कर उस पर बिरादरी का ज़ोर दिया जावे तो वह गौ उलटी आनी सम्भव है। यदि वह लौट कर नहीं भी आई तो भविष्यत् में फिर और लोग वधिकों के हाथ पशु-विक्रय से डरने लगेंगे। क्योंकि अधिक गौ हिन्दुओं के यहां से ही जाती हैं। सर्कारी कांजीहौस से नीलाम होते गोवंश को वधिकों से सलाह कर अवश्य छुड़ा लेना चाहिये। मेरा तात्पर्य्य ऐसा कहने से यह है कि ऐसे समय में ज़िद न बढ़ाना चाहिये। ज़िद करने से हत्या में वृद्धि होती है। धर्म के पलटे अधर्म होता है। दूसरा निवेदन यह है कि गोशा-लाओं में इन अपाहिज गोवंश की रक्षा करते हुए ऐसा प्रयत्न करना चाहिये कि जिस से यह असंख्य गोवध बन्द हो। जिस की संख्या आज कल ७० हज़ार प्रति दिन तक पहुंच गई है। और यदि इस का तुरन्त उपाय न किया तो इस से भी अधिकतर गोवंश लोप हो जावेगा। फिर पछताना व्यर्थ होगा। इस से हे प्यारे गो भक्तो हिन्दु आर्य्य संतानों अन्य सभाओं की भांति हरसाल उन्हीं मन्तव्यों को पास कर समय नष्ट मत करो और कानों में इस वचन को सुनते ही उपाय करने में कटिबद्ध हो जाओ। नहीं तो शीघ्र ही यह सनातन धर्म रसातल को पहुंच जावेगा। अतः सम्पूर्ण गोशालाओं

और गोहितकारिणी सभाओं के संचालकों को उचित है कि यथाशक्ति अपने २ यहां उपदेशक नियत कर उन को एक २ तहसील बतला दी जावे और कह दिया जावे कि छोटे बड़े प्रत्येक ग्राम में जा कर वहां के जिमीन्दार आदिक संपूर्ण मनुष्यों को एकत्र कर गौमाताओं के उपकारोंको भली भांति समझावें कि धार्मिक और सांसारिक दोनों अभीष्ट से गाय बैल रक्षा और सेवा करने योग्य हैं। ऐसा करना तुम्हारी और तुम्हारे कुटुम्ब व देश की रक्षा है। नहीं तो बैलों के अभाव में मनुष्यों के कंधों पर हल रखना पड़ेगा। या बीघा दो बीघा फावड़ों से पृथ्वी खोद रोते २ खेतों में बीज डालोगे। और दूध और घी के तो दर्शन ही दुर्लभ होंगे। इत्यादिक बातें समझा कर उन से निम्नलिखित प्रतिज्ञायें करा करा रजिस्टर पर उन के हस्ताक्षर अथवा अंगूठे के निशान करा लेना चाहिये। और उन्हीं में से दो चार मुखिया नियत कर दिये जावें जो देखते रहें कि इन नियमों का पालन होता है या नहीं। जो मनुष्य नियमविरुद्ध चलता मालूम होवे उस का तत्काल हुक्का पानी बंद कर दिया जावे। यह बिरादरी का दण्ड राजदण्ड से अधिक असर करेगा।

या दूसरा उपाय इन की रक्षा का श्रीमान् बाबा भगवान् दास जी उदासीन स्थान विधौंची कलां रियासत पटियाले की स्कीम के अनुसार प्रत्येक गांव के पशुओं का रजिस्टर बनाया जावे और उस में जन्म-मृत्यु का लेखा रक्खा जावे, और बेचते वक्त जमानत ले कर जानकार के हाथ बेच कर उस गांव से उस को ख़ारिज और जहां जावे वहां चढ़ाया जावे, परन्तु हमारी बुद्धि में बहुत स्थानों में इस का प्रयोग कठिन होगा।

—: प्रतिज्ञायें निम्नलिखित हैं :—

(१) स्थान २ पर नियत दिन जो पशुओं के मेले अथवा मवड़ी या बाज़ार लगते हैं उन में हम गौओं को चाहे दूध की हो या बे दूध की या बहड़ी होवें कदापि विक्रयार्थ न ले जावेंगे और न बेकार बूढ़े बैल को ले जावेंगे।

(२) अनजान या बनजारों व व्यापारियों और गोमांस भक्षकों के हाथ अथवा उन के दलालों के हाथ नारियें अथवा ५०) रु० से अधिक मूल्य के बैलों के सिवाय किसी प्रकार का पशु न बेचेंगे अर्थात् गौ, बहड़ी, वृद्ध, बेकार बैल कदापि न बेचेंगे। सदा क्रय विक्रय आपस में हीं करेंगे, और न गाय अथवा वृद्ध बैल का बदला कर के भैंस या काम का पशु लेवेंगे। बहुधा नट या बनजारे या क़साई छापा तिलक लगा और जनेऊ पहन कर अपने को ब्राह्मण कह कर गाय बैल खरीदने आते हैं उन के धोखे में आकर गाय, बैल कदापि न देने चाहिये, क्योंकि जो ब्राह्मण होगा उन को इन बनावटी चिन्हों के दिखलाने की क्या आवश्यकता है?

(३) सामर्थ्य रखते हुए वृद्ध गौ, बैल को जिन से अद्यावधि कुटुम्ब का पालन पोषण हुआ है कदापि न बेचेंगे। वरन माता पिता की भांति सेवा करेंगे और श्रद्धा न होगी तो उस को समीप की गोशाला में पहुँचा देंगे।

(४) ऐसी गोशालाओं की फ़सल कटने पर चारे से और विवाहादिक उत्सवों में द्रव्य से सहायता करते रहेंगे।

उपदेशक महाशयों को ग्रामवासियों के ऐसे हस्ताक्षर कराने के सिवाय जहां २ तीर्थ स्थान हैं उन के पंडाओं से भी निवेदन करना चाहिये कि वे इसी प्रकार की प्रतिज्ञायें दक्षिणा लेने के समय अपने यात्रियों से कराते रहें। ऐसा

करने से हमारी बुद्धि में गोहत्या एकदम बहुत ही कम हो जावेगी।

यदि यह कार्य श्रद्धा पूर्वक गोशालाओं के अधिपति और उपदेशकगण अथवा तीर्थ पंडा जारी कर देवें तो हम को पूर्ण विश्वास है कि १ साल के भीतर गोहत्या नाममात्र की केवल छावनी आदि में रह जावेगी, और हम को मुसलमानों अथवा सर्कार के सामने गो हिंसा बंद करने को गिड़गिड़ाना न पड़ेगा, और जब वे हमारी ऐसी प्रतिज्ञा देखेंगे तो हमारी पुकार गोरक्षा की ध्यान देकर सुनेंगे।

दूध की गौ को बनजारों तथा व्यौपारियों के हाथ न बेचने का कारण।

देहातों में दस्तूर है कि दूध की गौ को चाहे कोई लेवे बेखटके मोल दे देते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि दूध देने वाली गौ मारी नहीं जाती हैं। परन्तु यह उन की भूल है हम देखते हैं कि सहस्त्रों उत्तम जाति की गौयें हरियाने आदि से खरीद हो कर कलकत्ते जातीं हैं। क्योंकि वहां प्रति वर्ष चालीस पचास हजार गौओं की दूध के अर्थ मांग होती है कि जिन की आयु केवल आठ दस मास की ही होती है। क्योंकि कलकत्ते के ग्वाला इन के बच्चों को तो तुरन्त क़साइयों के हाथ बेच डालते हैं और बच्चों के अभाव में फूका दे कर दूध निकालते हैं कि जिस से उन को अत्यंत कष्ट होता है। और इस फूके के प्रभाव से उन के शरीर से सब दूध निकल आता है। जिस से दूसरे वर्ष वह गौ दूध के काम की नहीं रहती। दोयम् कलकत्ते जैसे नगर में बिना दूध की गौ का रखना महा कठिन है अतः दूध से छूटते ही ग्वाला लोग उन को क़साइयों के हाथ बेच डालते हैं। और

तत्काल नई आई हुई गौओं को जिन को व्यौपारी लोग आप के घरों से लेजाते हैं खरीद लेते हैं और प्रथम की भांति ये ५० हज़ार गौ और ५० हज़ार उन के बच्चे फिर बधिकों की छुरी से प्राण त्यागते हैं। अब आप ही देखिये कि ये आप की प्यारी गौयें कैसा कष्ट सह अकाल मृत्यु को प्राप्त होती हैं। सत्य पूछिये तो यह गौ बेचना नहीं है बरन गौ मांस बेचना है और कलकत्ते के जिन दूध के शौक़ीनों की आवश्यकता इन को वहां ले जाती है वे दूध नहीं पीते हैं बल्कि गोरक्त पीते हैं। इस से हे कलकत्ता निवासी हिन्दू धनाढ्यो या तो आप हलवाइयों और ग्वालों का दूध छोड़ अपने गृह में गौ रक्खो और इस गोवध का गोभक्त हासानंद की इच्छानुसार रोकने का प्रबन्ध या संकल्प करो। इसी प्रकार हरियाणा आदि के ज़िमीन्दारों को उचित है कि गौ कदापि न तो मेलों में लेजावें न इन अनगारों के हाथ बेच कर पाप के भागी होवें नहीं तो सत्य जानो इस महान् पाप के प्रभाव से तुम संसार में धन-संतति से दुःख भोग अन्त को रौरव आदि नरकों में पड़ असह्य कष्ट भोगोगे।

श्रीमान् तीर्थ पंडाओं की सेवा में प्रार्थना।

मान्यवर महीसुरो व जगद्गुरुओ! गोवध रूपी महान् पाप जो आजकल बढ़ता जा रहा है इस से आप भली भांति परिचित हैं, और क्यों न हो, ऐसा कौन तीर्थ स्थान है कि जहां यह सर्वनाशी राक्षसी कर्म जारी नहीं है। यदि आप लोग इस धर्म कार्य में तन, मन से कोशिश करें तो सहज ही में गोहत्या कम होसक्ती है। वह उपाय यह है कि समस्त भारतवासी, शिखाधारी अपनी आयु भर में दो चार बार किसी न किसी तीर्थ हरिद्वार, गढ़मुक्तेश्वर, गयाजी, चित्रकूट,

पुष्करराज, जगन्नाथ जी, पंचवटी, सेतुबंध रामेश्वर प्रभृति तीर्थों में अवश्य जाते हैं। सो यदि आप अपनी बही में उन का नाम लिखते अथवा दक्षिणा लेते समय तीर्थ को साक्षी देकर उन से पृष्ठ १०० में लिखे अनुसार प्रतिज्ञा करा उन के हस्ताक्षर वा अंगूठे की निशानी उस बही पर करा लेवेंगे तो इस से वधिकों के हाथ गाय, बैल जाना निश्चय ही कम होजावेगा, क्योंकि वधिकों के यहां विशेष कर हिन्दुओं के घरों से ही पशु जाते हैं। इस में आप की कोई हानि भी नहीं है। बरन आप सदैव इस महापुरुष के प्रताप से धन संतान से परिपूर्ण रहेंगे। आशा है कि स्वयं भी इन नियमों का पालन करते रहेंगे। नहीं तो इस असंख्य गोवध के कारण सनातन धर्म नष्ट भ्रष्ट हो तीर्थ स्थानों में आने वाला ही कोई नहीं रहेगा

श्लोक—यस्मिन् देशे भवेत् हिंसा—गवानां यत्रसूदनः तस्मात् वै योजना दूरं—देवा गच्छन्ति सत्वरम्।

अर्थात् जहां पर गोवध होता है उस स्थान से १ योजन दूर देवता चले जाते हैं—अतः जब तीर्थ स्थानों में देवशक्ति न रहेगी तो फिर किस विश्वास पर वहां यात्री लोग आवेंगे।

॥ हिन्दुओं की सेवा में प्रार्थना ॥

हे प्रियवर सज्जनो तथा हे आर्य्य सन्तानो! आप लोगों को गो महिमा या गोरक्षा के विषय में शिक्षा करना निपट मूर्खता व अज्ञानता है। यद्यपि दीर्घकाल से पराश्रित होकर आप लोग अपने देशाभिमान अथवा धर्माभिमान के महत्त्व को खो चुके हैं, तथापि गोरक्षा का अंकुर हमारे महर्षियों ने आप लोगों के हृदय में ऐसा नहीं बोया है कि जो समय के उलट फेर या अन्य मतावलम्बियों के अन्याय रूपी कुठार के द्वारा आप

लोगों के चित्त से मिटाया जा सके। सच्ची आर्य सन्तानें गाय के कष्ट या संकट को कदापि देख या सुन नहीं सकतीं, बल्कि वे गाय के कष्ट पर अपने प्राणों को न्यौछावर कर देना एक तुच्छ बात समझते हैं। यह केवल हमारे उन पवित्र वेद शास्त्रों की उत्तम शिक्षा और महर्षियों के सत्योपदेश का कारण है, नहीं तो देख लीजिये कि जिस किसी देश में अन्य मत वालों का राज्य हुआ तो वह देश अल्पकाल ही में अपने धर्म को छोड़ राजा का मतावलम्बी हो गया। परन्तु यह भारतवर्ष समय के बड़े भारी उलट फेर अथवा सहस्रों साल से अन्य मत वालों के अन्याय को झेलता हुआ भी प्रायः वैसा ही बना है। परन्तु आश्चर्य ही क्या है क्योंकि जिस दुर्ग की नींव पक्की तह पर होती है वह महा समुद्र की लहरों और झकोरों के गिराये से भी नहीं गिरता।

हमारे पितृवर्ग वा महर्षि कृतज्ञ थे कृतघ्न नहीं थे, वे कृतघ्नता को महापाप समझते थे वे भली भांति जानते थे कि सांसारिक विषय में गाय की मनुष्य मात्र के लिये ऐसी ही आवश्यकता है जैसी कि प्राणरक्षा के लिये जल वायु अथवा अग्नि की रहती है। अतएव पारलौकिक धर्म के अतिरिक्त एक यह भी कारण था कि जिस से उन्हों ने बड़ी २ कठोर आज्ञाएं गोमाता की रक्षा के निमित्त लिखी हैं।

ईश्वर ने वेदों में भी गोरक्षा के निमित्त ऋचाओं के द्वारा कठोर आज्ञायें दी हैं जिन को हम कम प्रचलित होने एवं ग्रन्थ के विस्तार के भय से नहीं लिखते हैं केवल थोड़े से मन्त्रों का पता देने पर ही सन्तुष्ट होते हैं

जैसे कि यजुर्वेद में अध्याय १३ का मंत्र ४९—व अध्याय १६ का मंत्र १६-४०-४४ व अध्याय ३० का मंत्र १४

और ऋग्वेद अष्टक २ का अध्याय २ वर्ग १४ मंत्र तीन व अष्टक २ अध्याय १ वर्ग १४ का मंत्र ५

अथर्ववेद में कांड १० प्रपाठक १ अनुवाक १ का मन्त्र २९

सामवेद में प्रपाठक ११ का मंत्र ८ आदिक

बराबर गोरक्षा व गोसेवा की आज्ञा दे रहे हैं—हे प्रिय वर बन्धुगणो ! यह वही प्रातःस्मरणीय या स्वर्गीय जीव है कि जिस के कारण परशुराम जी महाराज ने सहस्रार्जुन के भुजच्छेदन किये ।

और यह वही जगत् माता है कि जिस के कष्ट निवारणार्थ वीरशिरोमणि अर्जुन ने बारह वर्ष के वनवास की कुछ परवाह न की एवम् यह वही आदरणीय व पूजनीय कामधेनु है कि जिस के श्राप व क्रोध से महाराज दिलीप जैसे धर्मात्मा निःसंतान रहे और फिर उसी की सेवा व कृपा से रघु जैसा प्रतापशाली पुत्र पाया। फिर यह वही बैकुंठ नसेनी अमूल्य रत्न-देनी गौ माता है कि जिस के चारे से हटाने की इच्छा करने से ही राजर्षि महाराजा जनक जैसे ब्रह्मज्ञानी को मुहूर्त्त भर नरक के द्वार पर ठहरना पड़ा ।

जिन की कथा संक्षेप से इस प्रकार है कि कुछ दुष्ट रात्रि को एक ब्राह्मण की गाय को चुरा कर लिये जाते थे। महाबली अर्जुन ने ख़बर पाते ही चाहा कि उन अधर्मियों को दण्ड देवे परन्तु जो कि धनुष बाण महल में रक्खे हुए थे और आपस की प्रतिज्ञानुसार उस समय महल में जाना १२ वर्ष के बनवास का हेतु था, इस से अर्जुन बड़े धर्म-संकट में पड़ा कि यदि वह धनुष बाण महल में जा कर लाता है तो बारह वर्ष बन में रहना होता है और जो धनुष बाण ला कर गौ को नहीं छुड़ाता है तो क्षत्रिय धर्म्म जाता है, और शास्त्रों की

आज्ञा का उल्लंघन हो पापभागी होता है। अंत को अर्जुन ने धर्म्म के सामने वनवास को तुच्छ समझ कर तत्काल महल से धनुष बाण ले कर गौ को छुड़ा वनवास को चल दिया। ऐसे ही द्वितीय वार जब पाण्डव अज्ञात वनवास को गये थे अर्थात् कौरवों से प्रतिज्ञा कर चुके थे कि यदि बारहवें साल तुम हमारा पता पा जाओ तो हम उस दिन से फिर १२ वर्ष के लिये बन को चले जावेंगे अतः बारहवें वर्ष पता लगाने को कौरव महाराजा विराट की गौओं को बलपूर्वक हर ले गये, उस समय पाण्डवों ने जो भेष बदले हुए वहां रहते थे जबयह सुना तो उस प्रतिज्ञा की कुछ परवाह न कर प्रगट हो गौओं को उन के हाथ से छुड़ाया।

ऐसे ही रघुवंश में लिखा है कि एक दफै महाराजा दिलीप स्वर्ग से अपनी राजधानी को लौटते थे, रास्ते में कल्प-वृक्ष के नीचे कामधेनु गौ बैठी थी उस समय महाराजा दलीप ने शीघ्रता के कारण कामधेनु की प्रदक्षिणा कर के उन को दण्डवत् नहीं किया। राजा की इस भूल को कामधेनु ने अभि-मान समझ कर श्राप दिया कि राजन्! तुम जिस कामना के वास्ते जाते हो उस में सफलमनोरथ नहीं हो सकोगे। इसी श्राप के कारण महाराजा दलीप उत्तराधिकारी न होने के सोच में व्याकुल हो अपनी महाराणी सहित संतान की इच्छा से अपने गुरु वशिष्ठ जी के दर्शन को गये, और अपना उप-स्थित दुःख निवेदन किया। यह सुन वशिष्ठ जी महाराज ने दिव्य दृष्टि से पूर्व श्राप का हाल जान राजा से कहा कि तुम हमारी गौ नंदिनी की जो कामधेनु की पुत्री है सेवा करो तुम्हारे अवश्य संतान होगी। अतएव गुरु जी की आज्ञानु-सार महाराजा दिलीप जैसा चक्रवर्ती राजा नित्यः प्रति नंगे

पांव नंदिनी को बन में चराने को ले जाता। जब नंदिनी चलती तब आप चलते, जब वह बैठती तब बैठते, यहां तक कि जब वह पानी पी चुकती तब आप पानी पीते। इसी प्रकार देवभाव से सेवा करते हुए कुछ दिन व्यतीत हुए थे कि एक दिन बन में एक सिंह ने नंदिनी को घेर लिया, महाराजा दिलीप ने जब यह देखा तो तत्काल धनुष बाण ले चाहा कि सिंह को मारें, परन्तु जो कि वह मायावी सिंह नंदिनी की इच्छानुसार राजा की परीक्षा के अर्थ प्रगट हुआ था। (नहीं तो सिंह की क्या सामर्थ्य थी कि जो ऋषिजी की गौ को छू भी सके) इस कारण महाराजा दिलीप का हाथ रुक गया अर्थात् बाण छोड़ने में असमर्थ हो हिल जुल भी न सके जब महाराजा दिलीप लाचार हो घबराये तो उस सिंह ने कहा कि यदि तुम इस गौ के बदले अपना मांस खाने को दो तो मैं नंदिनी को छोड़ सकता हूं? महाराजा ने प्रसन्नता पूर्वक इस को स्वीकार किया और तत्काल ही सिंह के सन्मुख गिर गये किन्तु वह तो परीक्षार्थ मायावी सिंह था, राजा को सेवा में दृढ़ पाकर लोप हो गया, और नंदिनी ने प्रसन्न हो पुत्र का वरदान दिया। इसी सेवा के प्रताप से परमेश्वर ने महा प्रतापी रघु को महाराजा दलीप के यहां उत्पन्न किया। अस्तु।

तीसरी कथा इस प्रकार से रामाश्वमेध के ३० वें अध्याय में वर्णित है कि अंत समय जब राजर्षि महाराजा जनक को वैकुंठ में ले जाने को विमान आया तो चलते २ वह विमान नरक के द्वार पर ठहर गया। जिस से महाराजा जनक के शरीर से स्पर्श हुई वायु के लगने से नरक वासियों को अत्यंत सुख मिला और आनन्दित हो आशीर्वाद दिया। महाराज ने

अकस्मात् यह कोलाहल सुन धर्मराज से इसका कारण पूछा। धर्मराज ने उत्तर दिया कि आप के पुण्यात्मा शरीर की वायुमात्र के लगने से ये जीव आनन्दित हो रहे हैं। राजा ने यह सुन आवेदन किया कि जो इन के आनन्द का मेरा यह तुच्छ शरीर ही कारण है तो मैं सदैव इसी स्थान पर रहूंगा। यह सुन धर्म्मराज ने कहा कि हे धर्म्मज्ञ राजर्षि यह स्थान केवल पापात्माओं के लिये है। आप सरीखे ब्रह्मज्ञानियों के लिये तो ब्रह्मलोक निर्मित है। इस कारण आप इस से अधिक यहां नहीं ठहर सकते। यह सुन महाराज जनक ने धर्म्मराज से प्रश्न किया कि

रामाश्वमेधे अध्याय ३०

राजोवाच—धर्म्मराज त्वयाप्रोक्ता यत्पातक कारानराः
आयांतितव संस्थानं नचधर्म कथारताः
मदागमनमत्राभूत् केन पापेन धर्म्मकः
तद्वै कथयसर्वं मे पाप कार्य्यं यथातयम्
धर्मराजोवाच—एकदातुचरंतींगां कथयामाससेधयः
तेनपाप विपाकेन निरय द्वारदर्शनम्
गवांयोमनसा दुष्टं वांछत्यधमसत्कृतः
सयाति निरयस्थानं यावदिंद्राश्चतुर्द्दशः

अर्थात् हे धर्मराज! आपने जो यह कहा कि केवल पापी मनुष्य ही इस स्थान पर आते हैं तो कृपा पूर्वक सूचित कीजिये कि इस नरक द्वार पर मेरे आने का क्या कारण है? क्योंकि मैंने अपने विचार में आज तक कोई पाप कर्म नहीं किया है। यह सुन कर धर्मराज ने कहा कि सत्य है। आप बड़े धर्मात्मा और ब्रह्मज्ञानी हैं परन्तु एक समय आप के अस्तबल में एक गौ चरती हुई चली आई। आपने यह सोच

कर कि ऐसा न हो कि यह घोड़ों की घास को चर जावे। इस से आपने उस के हटा देने की मन में इच्छा की। अतः हे राजन्! उस गाय को चरने से हटाने की इच्छा करना ही आप के इस नरक द्वार पर आने का कारण हुआ। हे राजा! जो मनुष्य गौ माता को कष्ट पहुँचाने की इच्छा करता है या उस को सताता है वह जब तक कि चौदह इन्द्रों का राज्य रहे घोर नरक में पड़ा कष्ट उठाता है।

अतः हे सज्जनो व हे बन्धुवर्गो! शास्त्रों में ऐसे २ असंख्यात् दृष्टान्त मौजूद हैं कि जिन से गो-सेवा की अपार महिमा और माहात्म्य प्रकट होता है। देख लीजिये कि जब २ पृथ्वी पर महा अधर्म्म हुआ है तब २ ही देवता लोग गौ को आगे कर विष्णु महाराज के यहां फर्यादी गये हैं। बिना ऐसे किये कभी अवतार धारण नहीं किया गया है। सज्जनो पूर्ण कलावतार श्री कृष्ण जी महाराज ने हम लोगों के उपदेश के अर्थ ही गो सेवा कर अपना नाम गोपाल रखाया है। हे मान्यवर भाइयो! यह सब कुछ है किन्तु हमारी अज्ञानता ने इस को बिलकुल बदल दिया है। हमारी अविद्या ने गोसेवा को और ही रूप में परिणत कर दिया है कि इस को गौमाता कहते हुए और देव तुल्य समझते हुए भी जब घर में गाय ने दूध देना बन्द किया तो तत्काल उस का दाना और खल की सानी बल्कि दूसरे वक्त चारा तक देना भी भारी प्रतीत होने लगता है। या बड़ी दया की तो उस को देहातों में किसी आसामी के यहां पहुँचा दिया जाता है। अन्य मनुष्य बिना पूरी चराई लिये क्यों अपने पास से खिलाने लगा है? अंत को वह गौ दुबली होते २ मरने पर पहुँच जाती है। यह तो उन लोगों के

आचरण हैं कि जो अपने को धर्म्मात्मा समझते हैं। नहीं तो साधारण मनुष्यों के यहां तो यह दशा है कि जब गौ दूध से छूटी या जब बैल बुढ़ापे के कारण हल या गाड़ी खेंचने में असमर्थ हुआ तो उस को तत्काल बाज़ार या पैंठ या मेले में ले गये वहां सिवाय क़साइयों या उन के दलालों के दूसरे ग्राहक ऐसी बे दूध की गाय या बूढ़े बैल के क्यों लेने लगे हैं। अतः खड़े २ दस पांच रुपये में उस को बेच दिया।

हाय वह गाय कि जिस को गौ माता कह कर पुकारते थे या वह बैल कि जिस ने अपने बल से हल या गाड़ी खैंच हमारे घर को धन धान्य से पूर्ण किया था दो चार दिन में बधिकों की छुरी से यमलोक को पहुँच गया। कहिये क्या यह काररवाई मुसलमानों की क़ुरबानी से जिस के लिये हम जान देने को तय्यार हो जाते हैं और बहुत सा धन मुक़द्मेबाज़ी में नष्ट कर देते हैं कुछ कम है?

सज्जनो! महाशोक का स्थान है कि दूसरे को ऐसा करते हुए देख या सुन कर कि जिस पाप का वह आप उत्तरदाता है हम इकट्ठे हो कर अपनी जान खोवें। और सरकार के निकट उपद्रवी कहला जेलखानों में भरे जावें। परन्तु अपनी इस काररवाई पर कि जान बूझ कर बधिकों को बेच उन के प्राण खोवें तनिक भी नहीं शरमाते या अपने आप को धिक्कार नहीं करते। हे भाइयो! विचार कर के देखा जाय तो संसार में दो प्रकार के दुकानदार पाये जावेंगे। एक थोक-फ़रोश कोठी वाले कि जो वलायत से आई हुई पूरी गांठ से कम बेचना अपनी मान हानि समझते हैं। दूसरे छोटे दुकानदार कि जो पूरा थान या गज़ दो गज़ तक बेचते हैं और बजाज़ कहलाते हैं। अतएव जो मनुष्य गाय को बधिक

या उस के दलाल के हाथ बेचता है वह उस कोठी वाले की भांति बड़ा क़साई है कि जो परमेश्वर के यहां से आई हुई पूरी गाय को बेचते हैं और ये बूचड़ मामूली बजाजों की तरह छोटे क़साई हैं कि जो उस के टुकड़े कर बेचते हैं। हाय शोक महान् शोक है कि ये बड़े क़साई हमारी जात व हमारी बिरादरी कहलाते हैं। और उन के कर्मों को देखते हुए भी हम उन से अपना सम्बन्ध दूर नहीं करते।

देखिये कि यदि भूल कर धोखे से किसी हिन्दू के हाथ से गौ मर जाती है तो वह हत्यारा कहला तीर्थयात्रा कर और बहुतसा रुपया ख़र्च करने के पश्चात् बिरादरी में मिलने के योग्य होता है। जब तक इतना नहीं कर लेता तब तक कोई उस के हाथ का छूआ जल तक ग्रहण नहीं करता है और न कोई उस से स्पर्श करता है। परन्तु इन मनुष्यों को जो जान बूझ कर क़साइयों को गाय बैल देते हैं या जो इन पशुओं की चोरी का पेशा कर उस का पता गुम करने को खड़े २ दस पांच रुपये के पलटे में क़साइयों के यहां कटवा देते हैं उन को न कोई बुरा कहता है न बिरादरी से अलग कर उस से सम्बन्ध तोड़ता है।

वास्तव में देखा जाय तो उस मनुष्य से कि जिस के हाथ से धोखे में गाय बैल मर गया और जिस के बदले में उस को इतना बड़ा दंड बिरादरी से मिला यह बेचनेवाले मनुष्य अधिक अपराधी हैं। जिन से कोई कुछ नहीं कहता और न उन को कोई बिरादरी से अलग करता है। किन्तु शास्त्रों की आज्ञानुसार ऐसा मनुष्य किसी प्रकार से भी शुद्ध नहीं हो सकता जैसा कि पद्मपुराण में कहा है किः—

ब्रह्मघ्नस्य कृतघ्नस्य सुरापश्च महामते।
प्रायश्चित्ता निवर्तंते सर्वपाप हराणि च ॥ १ ॥

द्वयोश्च निष्कृति नास्ति पापपुंग कृतोऽस्तयोः ।
मत्वा गोबध कर्तुश्च नारायण विनिंदितुः ॥ २ ॥

अर्थात् ब्रह्मघाती व उपकार न मानने वाले और मदिरा पीने वालों का तो पापों के दूर करने का प्रायश्चित्त हो सकता है परन्तु गोबध करने वाले और परमेश्वर की निंदा करने वाले के पाप दूर होने का कोई उपाय अथवा प्रायश्चित्त नहीं है। इस से हे प्यारे भाइयो! अपने २ यहां सभाएं कर ऐसे दुष्टों से सम्बन्ध छोड़ो और गौरक्षा को परम धर्म जान कर यदि और कुछ न हो सके तो प्रत्येक गृहस्थ अपनी २ श्रद्धा के अनुसार एक दो गौ अपने यहां अवश्य रक्खा करें। और दूध से छुटने पर उन को घर से जुदा न किया करें। वरन वैसी ही सेवा करें जैसी कि वृद्ध माता पिता की सत्पात्र सन्तान करती हैं। ऐसा करने से पैंठ और मेलों में बेकार गाय बैल कम जावेंगे। यदि जावेंगे भी तो कमी के कारण मँहगे बिकेंगे कि जिन को अधिक लोग मँहगी के कारण मोल न ले सकेंगे।

इस प्रकार गोबध कम होने से गोवंश की वृद्धि हो पहले की तरह खेती के काम को बैल सस्ते मिलने लगेंगे। और घी और दूध भी जो मनुष्य मात्र के जीवन और बल का मुख्य साधन है सस्ता हो जायगा। हम को ऐसा करता देख सरकार भी हमारे निवेदन पर ध्यान दे गोरक्षा को आवश्यकीय कार्य्य समझ हमारी सहायक हो जायगी।

ईद के दिन भी कि जो हमारे देश भाई मुसलमानों का एक त्यौहार है यदि हम भ्रातृभाव से उन के त्यौहार में बाधा न डालेंगे तो वह आप ही आप हमारी हृदय वेदना को जान गौ के बलिदान को बंद कर हमारी खातिर से

दूसरे जीवों दुम्बे और बकरे आदि का बलि प्रदान करने लगेंगे। क्योंकि यह गौ के बलिदान की वृद्धि पहले हमारे अज्ञान हिन्दू भाइयों की रोक टोक से ही ज़िद कर के अज्ञान मुसलमानों ने आरम्भ कर दी थी। अब जब से हिन्दुओं ने रोक टोक बंद की और बरेली, लखनऊ, दिल्ली आदि शहरों में सभाएँ कर दोनों जातियों ने परस्पर प्रेम बढ़ाने की प्रतिज्ञाएँ कीं तो अब ईद के दिन गोबध का होना बहुत ही कम हो गया, क्योंकि गोबध मुसलमानों का मत सम्बन्धी कार्य्य नहीं है। क्या जिस देश के मुसलमान या जो मुसलमान गाय की क़ुरबानी नहीं करते या जो इस को नहीं खाते वे मुसलमान नहीं कहलाते हैं? तात्पर्य यह है कि जो बात मेल मिलाप से प्राप्त हो सकती है वह लड़ाई झगड़े से हासिल नहीं हो सकती अतः जब हम अपने मुसलमान भाइयों के हर तरह से सहायक और हर काम में शुभचिन्तक रहेंगे तो सम्भव है कि वे भी हमारा दिल न दुखा कर हर प्रकार से हमारी प्रसन्नता और प्रीति पर दृष्टि रक्खेंगे इस से हम को उचित है कि आपस में प्रीति बढ़ा कर तन मन धन से गोरक्षा जैसे शुभकार्य्य और परोपकार में कोशिश करें कि जिस से संसार में घी और दूध जैसे अमूल्य रत्न हम को अधिकता से प्राप्त हों, और परलोक में गोसेवा के प्रताप से गोलोक अथवा वैकुंठ में पहुँच कर सब सुख भोगें। राजा महाराजाओं, रईस ज़मीन्दारों और सेठ साहूकारों को उचित है कि अपनी २ शक्ति के अनुसार द्रव्य से गोशालाओं और उपदेशकों की दिल खोल कर प्रसन्न चित्त से सहायता करें। गाड़ कर रखने में पत्थर और अशरफ़ी बराबर हैं। यदि कहो कि हमारा खर्च ज़ियादह है। हम से अपना ही निर्वाह कठिनता से

होता है तो इस का उत्तर यह है कि राजा से ले कर रंक तक का गुज़ारा आज कल चार रुपये माहवार में भली प्रकार से हो सकता है। हाथी घोड़े, बग्गी, टमटम नौकर चाकर फ़ौज लश्कर आदि में जो खर्च करते हो वह तुम्हारे जीवन निर्वाह का खर्च नहीं है क्योंकि शरीर पोषण को तो चार ही रुपये बहुत हैं। यह जो बाक़ी खर्च है यह सब उस प्रतिष्ठा के स्थिर रखने को है जो तुम को ईश्वर ने पिछले जन्मों के दान पुण्य के प्रताप से प्रदान की है अतः जहां दिल खोल कर इन सांसारिक सुखों हाथी घोड़े महल मन्दिर आदि में खर्च करना अपनी प्रतिष्ठा समझते हो वहां इस प्रतिष्ठा के साधन रूप दान धर्म में भी उस से अधिक ख़र्च करो कि जिस से इस लोक और परलोक में तुम्हारी यश कीर्त्ति और प्रतिष्ठा बढ़े और फिर जन्मान्तर में अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो। इसी दान पुण्य का प्रभाव है कि जो धार्मिक मनुष्य प्रातःकाल यह वचन कहा करते हैं कि प्रात लीजे पांच नाम हरि, बलि, कर्ण, युधिष्ठिर, परशुराम। क्यों साहिब इन में क्या अधिकता थी कि जो प्रातःकाल उठ कर इन का नाम लिया जाता है। क्या इन के पास सेना, रथ, घोड़े, नौकर, सेवक अधिक थे? नहीं नहीं बरन इन्हों ने इस सांसारिक प्रतिष्ठा को तुच्छ जान दान धर्म आदि में उदारता कर यह यश प्राप्त किया था। देख लीजिये कि राजा हरिश्चन्द्र ने अपना सर्वस्व दान दे अति नीच स्वपच की सेवा में अपनी प्रशंसा समझी। राजा बलि ने अपना सर्वस्व ही नहीं बरन शरीर तक दे दिया था। कर्ण की दानशूरता जगत् में प्रसिद्ध ही है, रहे युधिष्ठिर और परशुराम सो राजा युधिष्ठिर के सिंहासनारूढ़ के समय के दान का तो कहना ही क्या है बरंच वे वनवासी होने की दशा में

भी सहस्त्रों अतिथियों को भोजन करा चुकने के पश्चात् आप भोजन करते थे। दीनों की रक्षार्थ अपने प्राण देने में भी नहीं हिचकते थे। परशुराम महाराज जी को भी देख लीजिये कि उन्हों ने इक्कीस बेर सम्पूर्ण पृथ्वी के राजाओं को परास्त कर जय लाभ किया, और सब को को दान दे अपने पास एक ग्राम की जमींदारी भी निर्वाह के लिये न रख केवल कोपीन और कमण्डल ही पर संतोष किया। दानियों का तो संक्षेप से यह वृत्तान्त फल सहित आप ने सुन लिया परन्तु ऐश्वर्य्य शाली शरीर-सुखभोगी कृपणों में से तो हम एक का भी नाम उदाहरण के तौर पर आप को नहीं बतला सकते। क्योंकि इतिहास पुराणादिक में उन की जीवनी तो अलग रही बरन उन का नाम तक लिखना भी अधर्म समझा गया। हां फारसी वालों ने एक अति कृपण क़ारून का नाम लिखा है कि जो बड़े २ चालीस ख़ज़ाने द्रव्य के रखता था। इतना धनी होने पर भी महा कृपण था कि जिस के कारण मुसलमान लोग उन के नाम पर लानत अथवा धिक्कार भेजते हैं और महादानी हातिमताई का नाम प्रशंसा के साथ लेते हैं। अस्तु। जो मनुष्य गोशालाओं को द्रव्य की सहायता देने में असमर्थ है वे तन मन से सहायता करें अर्थात् चल फिर कर अपने देश-भाइयों को उपदेश दें। गोरक्षा पर कटिबद्ध हो कर अधर्मियों गो-घातकों अथवा गो-विक्रेताओं को जाति-दण्ड दिला सत्पथ पर लावें। और मुसलमानों को इस के लाभ जतला और मनुष्य मात्र के लिये इस की आवश्यकता दिखला गोरक्षा में अपना सहायक बनावें।

अतएव जब हरएक मनुष्य गौ की रक्षा को अपनी और अपने देश की रक्षा समझने लगेगा तो स्वयम् यह देश

अपनी पूर्वावस्था प्राप्त कर उन्नति के शिखर पर पहुँच जावेगा। और यह नाना प्रकार के प्राणनाशक संक्रामक रोग जो आज कल देशव्यापी हो रहे हैं। समुद्रपार अर्थात् जहां से आये हैं वही चले जावेंगे, और फिर पूर्ववत भृगु, वशिष्ठ, नारद और पाणिनी जैसे विद्वान् और व्यास, पराशर सूत जैसे धर्म्म वक्ता और अर्जुन भीम व भीष्म, द्रोणाचार्य्य सरीके धर्म योद्धा इस देश में जन्म लेने लगेंगे। यदि आप शास्त्रों के गूढ़ मर्म को ध्यान पूर्वक देखेंगे तो स्पष्ट विदित हो जायगा कि जिस प्रकार से स्त्री को केवल पतिसेवा व पतिव्रत धर्म ही सब धर्म्मों से श्रेष्ठ होकर वैकुंठ से भी उत्तम लोक दे सकता है, इसी प्रकार मनुष्य को केवल गोसेवा ही सब देवताओं की प्रसन्नता और गोलोक में स्थान मिलने का कारण है। देखिये पद्म पुराण में लिखा है:—

पृष्ठे ब्रह्मा गले विष्णुः मुखेरुद्रः प्रतिष्ठितः
मध्ये देवगणा सर्वे रोम कूपे महर्षयः ॥ १ ॥
नागा पुच्छे खुराग्रेषु येचाष्टौकुलपर्वताः
मूत्रेगंगादयोनद्यो नेत्रयो शशि भास्करौ ॥ २ ॥
एते यस्यास्तनो देवा साधेनुर्वरदास्तुमे
वर्णितं धेनु महात्म्यं व्यासेन श्रीमतात्विदम्ः ॥ ३ ॥

अर्थात् व्यास जी महाराज ने कहा है कि गौ माता के पीठ में ब्रह्मा गले में विष्णु और मुख में महादेव जी विराजते हैं और मध्य भाग में सब देवता और रोम २ में ऋषि-मुनि और पूंछ में नाग देव और खुरों में श्रेष्ठ पर्वतों और मूत्र में श्री गंगाजी और आंखों में सूर्य्य और चन्द्रमा का वास है अतएव जब किसी बीमारी से अच्छा होने या किसी मनोरथ के पूर्ण होने की इच्छा से कोई दान पुण्य करना

हो तो ख़ाली श्रद्धानुसार गो माता के दाने और चारे आदि से तृप्त कर देने से वह मनोरथ सिद्ध हो सकता है क्योंकि सब देवता और ग्रह गोमाता के अंग प्रत्यंग में निवास करते हैं और गंगादिक तीर्थ चरणों में वास करते हैं। अब मैं संक्षेप से शास्त्रों और पुराणों से गो-सेवा व गो-महिमा के कुछ प्रमाण लिखता हूं। आप लोग ध्यान पूर्वक सुनें और विचारें कि गौ की सेवा और उस के दान का कैसा अपूर्व माहात्म्य लिखा है।

आदित्य पुराणे—

गांददामीह इत्येव वाचापूयेतसर्वशः।
मातृकं पैतृकं चैव यच्चान्यद्दुष्कृतं भवेत्॥१॥
पापंच तस्यतत्सर्वं दहत्याग्निरिवेंधनम्।
वर्ष कोटि सहस्त्रंतु पुमांसः दिविमोदतेः॥२॥

कूर्म्म पुराणे—

दत्वासा विप्र मुख्याय स्वर्गमोक्षः फलप्रदा।
सप्तजन्म कृतान्पापात् मुच्यते दश संयुतात्॥१॥
यान्यान् प्रार्थते कामान् स्तान्स्तान् प्राप्नोतिमानवः।
अंते स्वर्गापवर्गौच फलं प्राप्नोत्य संशयः॥ २॥

अर्थात् आदित्य पुराण में लिखा है कि गोदान करने के पुण्य का तो कहना ही क्या है परन्तु यदि कोई मनुष्य सत्य-भावना से यह इच्छा कर के कि मैं गोदान करूंगा तो केवल उस की यह सत्यभावना ही उस के किये हुए पापों को ऐसे नष्ट कर देती है कि जैसे अग्नि ईंधन को भस्म कर देवे, और उस के प्रभाव से करोड़ों वर्ष तक वह मनुष्य वैकुंठ में वास करता है। ऐसे ही कूर्म्म पुराण में आया है कि जो मनुष्य धार्मिक श्रेष्ठ ब्राह्मण को गोदान देता है तो उस के प्रताप से

दान देने वाले के १७ जन्म के किये हुये पाप दूर होजाते हैं, और जो जो मनोरथ वह करता है वह सब उस के सिद्ध होते हैं और फिर स्वर्गादिक सुख भोगता हुआ मुक्ति पद को प्राप्त होता है।

प्रियवर महाशयो! पुराणों में सैकड़ों श्लोक गोदान और गोसेवा की महिमा के लिखे हुये हैं, परन्तु ग्रन्थ विस्तार के भय से यहां दो एक श्लोक नमूने के तौर पर लिख दिये हैं।

परन्तु हर स्थान पर श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण को देने का फल लिखा है मूर्ख व क्रोधी लालची को देना उलटा फल करता है। किंतु यह फल अच्छी और बहुत दूध देने वाली गौ के दान देने का है। न कि जब घर पर रखने में खर्च देखा और बूढ़ी हो गई तो दान कर दिया। या किसी निर्धन ब्राह्मण जिस को उस के रखने की सामर्थ्य न हो बिना उस की चराई का पूरा बन्दोबस्त किये दान कर दिया। ऐसी दशा में शनैः शनैः वह क़साई के घर तक पहुंच जाती है कि जिस के पाप से गौ दान देने और लेने वाला करोड़ों साल तक नरक में पड़ा दुःख भोगेगा। जो कि आज कल की दशा को देखते हुए गौ दान करना निहायत कठिन हो गया है। क्योंकि न तो गौ दान देने वाला ही गौ माता के जीवन भर का खाने का प्रबन्ध कर के गौ दान दे सकता है। न दान लेने वाले ब्राह्मण ही हर स्थान पर श्रेष्ठ व धार्मिक मिल सकते हैं। यदि ऐसे धार्मिक वेदपाठी ब्राह्मण मिल भी जावें तो इस से केवल राजा महाराजा और सेठ साहूकार ही लाभ उठा सकते हैं। निर्धन और साधारण मनुष्य इस गौ दान के अखण्ड पुण्य को कैसे पा सकता है। परन्तु ऐसे मनुष्यों के लिये भी शास्त्रों में इस जगत् के उद्धार के लिये

बहुत सी जगह उपाय लिख दिये हैं जैसा कि भविष्य पुराण का कथन है कि ।

॥ भविष्य पुराण ॥

तीर्थस्नानेतुयत्पुण्यं यत्पुण्यं विप्र भोजने
यत्पुण्यं च महादाने यत्पुण्यं हरिसेवने—१
सर्वव्रतोपवासेषु सर्वेस्वेव तपः शुभः
भूविपर्य्यटनेयत्तु सत्य वाक्येषुयद्भवेत्—२
यत्पुण्यं सर्व यज्ञेषु तत्पुण्यं धेनुपालने
सर्वे देवा गवांसंगे तीर्थानि तत्पदेशुचः—३
पादाक्रांत मृदायोही तिलकं कुरुते नरः
तीर्थस्नायी भवेत्सद्यो भयं नश्यति पदेपदे—४
गावस्तिष्ठंति यत्रैव तत्तीर्थं परिकीर्तितम्
प्राणान् त्यक्त वां तत्र सद्योमुक्तो भवेद् ध्रुवम्—५

अर्थात् जो पुण्य तीर्थस्नान व ब्राह्मण भोजन और महादान अर्थात् सोना चांदी व पृथ्वी आदि के दान से और जो फल हरिसेवा व कठिन व्रतों व तप या सत्यभाषण और यज्ञों के करने से प्राप्त होता है वह केवल गौसेवा सेही प्राप्त हो सकता है, क्योंकि सम्पूर्ण देवता गौ के शरीर में और सब तीर्थ गौ के चरणों में वास करते हैं, और जो मनुष्य गौमाता के चरणों की रज का तिलक करता है उस को तीर्थ स्नान का फल मिलता है, और यमदण्ड से अभय रहता है कारण कि जहां गायें बैठती हैं वही तीर्थ-स्थान है ।

अतः गायों के रहने और बंधने के स्थान या गोशाला में जिन का प्राणांत होता है उन को निःसन्देह मुक्ति होती है ।

अब संक्षेप सा माहात्म्य आप को गो-सेवा का दूसरे पुराणों से भी दिखलाते हैं।

शोक का स्थल है कि ऐसे सहज उपायों के होते हुए भी गौ सेवा से मुंह मोड़ा जाता है। या गायों के संकटों को देख कर भी उस के उपायों पर ध्यान नहीं दिया जाता यह इसी का प्रतिफल है कि ईश्वरीय क्रोधाग्नि से नित्यःप्रति जवान मौतें और हरसाल अनावृष्टि के कारण अकाल पड़ते और भयंकर भूकंप होते रहते हैं। और प्लेग व कालरा आदिक महामारियों के भय से किसी साल भी छुटकारा नहीं पाते हैं। अब थोड़ी सी पुराणोक्त आज्ञाओं पर ध्यान दीजिये।

ब्रह्मपुराणे।

अनाथानांगवांयत्ना रक्षार्यस्तु शिशिरेमघः
पुण्यार्थं यत्रदीयंते तृणतोयेन्धनानिचः १
एवं कृतेमहीपूर्णा रत्नैर्दत्वाफलं लभेत्
गोप्रदाने नयत्पुण्यं गवां संरक्षणाद्भवेत् २
कृत्वा गवार्थं शरणं शीतवात हरं महत्
आसप्तमं तारयति कुलं भरतसत्तम ३

महाभारते

आसां चैवात्मनंकार्यं भयार्तास्तासमुद्धरेत्
आत्मानमपि संत्यज्य गोव्रतं तत्प्रकीर्तयेत्

मनुस्मृतिः।

ब्राह्मणार्थं गवार्थं वा सद्यप्राणान् परित्यजेत्
ब्रह्महामुच्यते पापै र्गोप्तागो ब्राह्मणस्य चः

विष्णु धर्मोत्तरे—

गामुद्धृत्यनरः स्वर्गे कल्पभोगान् प्राश्नुते
गोबधेन नरोयाति नरकानेक विंशतिम् ॥

शिवधर्म संहिता ।

येताडयंतिगाः क्रूराः शपं तेषमुहुर्मुहुः
दुर्बलायेनपुष्णाति शततंयेत्यजंतिचः
यांतिते निलयं घोरं तेन पापेन नित्यशः

विष्णु पुराणे ।

गावो विलम्बतेयस्यां गावः सर्वाघ सूनुना
गवांकंडू वनंचैव सर्वं कल्मष नाशनम्

पद्मपुराणे ।

गवां ग्रासः प्रदानेन स्वर्गलोक महीयते
सदागावः प्रणम्यास्तु मंत्रेणानेन पार्थिवः

आदित्य पुराणे ।

लवणंतु यथाशक्त्या गवांयोवैददातिच
तेषांपुण्य कृतांलोका गवांलोकं व्रजंतिते

भविष्यपुराणे ।

दत्वापरगवेग्रासं पुण्यंसमहदश्नुते
सिंहव्याघ्रभयत्रस्तां पंकलग्नां जलेगताम्

रामाश्वमेधे ।

योवैनित्यं पूजयति गांगेहेयवसादिभिः
तस्यदेवाश्च पितरो नित्यं भृत्या वहंतिहि
योवैगवान्हि कंदद्या न्नियमेन शुभव्रतः
तेनसत्येन तस्यस्युः सर्वेपूर्णा मनोरथाः
तृषिता गौर्गृहे बद्धा गेहेकन्या रजस्वला
देवाश्च सर्वे निर्माल्या हंति पुण्यं पुराकृतम्
योवैगां प्रणिषिद्धेत चरंतीगांतृणां नरः
तस्यपूर्वे च पितरः कंपंतेपतनोन्मुखाः
योवैयष्ट्या ताडयति धेनुंमूढो विमूढधीः

धम्मराजस्य नगरं सयातिकरवर्जितः
योवै दंशाग्निवार्येत तस्यपूर्वेस्त्वधोगताः
नृत्यं तिनत्सुतोस्त्वस्मान् तारयिष्यति भाग्यवान्

अर्थात् ब्रह्मपुराण में आज्ञा है कि जो मनुष्य अनाथ गायों के लिये वर्षा और शीत के बचाव को मकान अथवा गौशाला बनवा देते हैं अथवा उन को धूनी तपाते अथवा चारे और जल की सुधि लेते हैं और उन को हरएक ऋतु में कष्ट से बचाते हैं वे रत्नों से भरी हुई पृथ्वी के दान करने के समान फल पाते हैं और अपनी सात पीढ़ियों को तारते और नेक नाम करते हैं और गोदान का फल उन को गोसेवा से ही मिल जाता है। ऐसे ही महाभारत में लिखा है अपनी आत्मा की रक्षा करना हर मनुष्य का कर्त्तव्य है परन्तु अपनी आत्मा की रक्षा की परवाह न कर के गौओं का कष्ट दूर करना परम कर्त्तव्य है। ऐसे ही विष्णु धर्मोत्तरपुराण में लिखा है कि गाय की जान बचाने से मनुष्य को कल्प भर तक स्वर्गवास प्राप्त होता है और इसी प्रकार से उस का मारने वाला अथवा मारने को देने वाला २१ प्रकार के नरकों में कल्प भर तक पड़ा हुआ नाना प्रकार के कष्ट भोगता है। ऐसे ही मनुस्मृति में मनु जी महाराज आज्ञा देते हैं कि सत्पात्र ब्राह्मण और गौ की रक्षा में यदि अपने प्राण भी चले जावें तो कुछ डर नहीं है। ब्रह्मघातक का पाप तो प्रायश्चित्त आदि के करने से दूर भी हो जाता है किन्तु गोघातक का पाप किसी प्रकार से भी नष्ट नहीं हो सकता। इसी प्रकार विष्णु पुराण व पद्मपुराण व शिवधर्म संहिता, आदित्यपुराण एवम् भविष्य पुराण और रामाश्वमेध में लिखा है कि जो मनुष्य गाय के गले को खुजलाता है या उस के चारे पानी

का प्रबन्ध नियमित समय पर रखता है, या नमक खिलाता है अथवा दूसरों की गाय को एक ग्रास तक भी देता है या गौओं की सिंह व भेड़िये आदि हिंसक जीवों से रक्षा करता है अथवा कीचड़ में फँसी हुई या जल में डूबती हुई गौ को बचाता है वह इस लोक में अपनी मनोकामना एवं यश को प्राप्त करता हुआ मृत्यु पश्चात् लाखों वर्ष गोलोक अथवा स्वर्ग में सुख भोगता है, और उस के पितामहादि पितृगण प्रसन्न होते हैं कि हमारा ऐसा गोसेवक और सत्पात्र पुत्र हम को अवश्य स्वर्ग में स्थान दिलावेगा क्योंकि गौओं की सेवा महान् पापों तक का नाश कर देती है।

शास्त्रों में भोजन करने से पूर्व गोग्रास निकालने की आज्ञा इस बात को जतलाती है कि मनुष्य को पहले गौओं के खान पान की सुधि लेनी चाहिये पीछे आप भोजन करना चाहिये।

इसी प्रकार पूर्वोक्त शास्त्रों में लिखा है कि जो मनुष्य इस के विरुद्ध करता है अर्थात् गौओं को मारता है दुःख देता अथवा खोटे वचन कहता और गाली देता है या दुबली गायों की दाने चारे और पानी आदि की खबर नहीं लेता, प्यासी रखता है या चरती हुई गाय को चारे पर से हटा देता है वह अंत समय घोर नरक में पड़ता है, और जो गौओं के लाठी मारता है उस के धर्म-राज के यहां हाथ काटे जाते हैं, और नरक में डाला जाता है गाय को शास्त्रों में अमूल्य लिखा है। जैसे कि महाभारत में वर्णन है कि त्रिवेणी जी के संगम पर जल के भीतर च्यवन ऋषि तप करते थे वहां एक धीवर ने जाल डाला। जब जाल जल से निकाला तो उस में मछलियों के साथ वे ऋषि जी भी जाल में फँस कर बाहर आये। धीवर ऋषि जी को देख भय-

भीत हुआ, परन्तु ऋषि जी ने आज्ञा दी कि भय मत करो किन्तु मुझ को महाराजाधिराज नहुष जी के यहां लेजा कर बेच दो, अर्थात् मेरे पलटे में द्रव्य प्राप्त करो अतएव धीवर ने राजा जी के यहां ऋषिजी को लेजा कर उन की न्यौछावर चाही इस पर राजा जी ने डरते २ एक लक्ष मुद्रा ऋषि जी के पलटे में देना अङ्गीकार किया। इस पर ऋषि जी ने आज्ञा दी कि राजा यह द्रव्य बहुत कम है अन्त को बढ़ते २ राजा साहब ने अपना सम्पूर्ण राज्य ऋषि जी के पलटे में उस धीवर को देना स्वीकार किया परन्तु उसको भी ऋषिजी ने कम बतलाया। यह सुन महाराज अति दुःखित हुए। सोचने लगे कि अब क्या करूं क्योंकि इधर तो ऋषि जी के शाप का भय, उधर राज्य से अधिक और क्या देवें। यही सोचते २ गुरु जी के पास जा इस धर्म्म संकट की कथा सुना कर उपाय पूछा दूरदर्शी गुरु महाराज ने आज्ञा दी कि राजा घबराने की बात नहीं आप ऋषि जी के न्यौछावर में एक गौ दे देवें अतः गुरु जी महाराज की आज्ञानुसार राजा जी ने ऋषि जी से निवेदन किया, कि महाराज आप की न्यौछावर में एक गौ इस धीवर को आज्ञा हो तो देदी जाय। इस पर प्रसन्नचित्त हो ऋषि जी ने कहा कि हां यह गौ मेरे पलटे में ठीक है। इस से सिद्ध हुआ कि गाय का मूल्य जगत् के राज्य से भी अधिक है। यह कहावत कि गाय के पेट में सवामन सोना होता है यथार्थ है। यदि शास्त्रों की आज्ञा का यथावत् लेख या गो-सेवा का माहात्म्य पूरा लिखा जावे तो इस के वास्ते एक दफ़्तर चाहिये क्योंकि मुझ को इतने पढ़ने व सुनने वाले भी बहुत कम मालूम होते हैं। बड़े २ सज्जन गोमाहात्म्य सुनना व्यर्थ समझते हैं और किस्से कहानी हों तो घर का सब काम

काग छोड़ आदि से अंत तक पढ़े बिना कभी चैन न पड़े परन्तु गोचर्चा के पढ़ने में यही कहेंगे कि यह व्यर्थ बकवाद है या कहेंगे कि क्या करें गृहस्थी के कार्यों से अवकाश ही नहीं मिलता।

देखिये जिस गौ के दूध को बिला छाने पीना इस कारण से महापाप कहा गया है कि कोई बाल उस का पेट के भीतर न चला जावे, किन्तु अब बाल का तो जिकर ही क्या है पूरी परमपूज्या गोमाता अंग भंग हो हमारे शरीर में विराज रही है। लीजिये चित्त दे सुनियेः— चमड़ा उस का वलायत यात्रा कर के लौटा हुआ मनीबेग के रूप में किसी नई रोशनी वाले के गले में बतौर जनेऊ, हड्डी उस की वलायती कंद या लीवरपोल के समुद्री नमक में पड़ या पीला २ फास-फार्स बन दिया सलाई के सिरों पर लग हमारे चौके एवं नित्य के भोजन में, रुधिर उस का मोरिस या आरमन के कंद में मिल हमारे ब्रह्मभोज व मंदिरों के भोग के द्वारा हमारे पेट में, उस के सींग के बटन बन कोट में लग हमारी छाती पर, अंतड़ियां उस की सरेश बन दीयासलाई के बकस पर लग स्याह मसाले की सूरत में हमारी रसोई के अन्दर, चरबी उस की घी में मिश्रित हो हलवाइयों की मिठाई के द्वारा हमारे देव-कार्यों व नित्य के भोजन की बदौलत हमारे उदर में विराज रही है। हाय अफसोस! हा शोक! मर कर भी उस की प्रीति हम से न छूटी अर्थात् मनीबेग व बटन बन हमारे गले का हार हो गई। शक्कर व घी व लवण में पड़ हमारी जठराग्नि को प्रदीप्त किया और फासफोर्स व सरेस बन हमारे अंधेरे घर व मन्दिरों का उजियाला हुई। क्या इतना जानकार हो कर भी उन का छोड़ देना कठिन है? ऐसे हमारे हिंदूपन पर शतशः धिक्कार

है। हाय! जो जाति धर्म्म के सामने प्राणों को तृण समान भी न समझती थी आज वही धर्मवीर जाति कलियुग की कृपा से धर्मभ्रष्टता को उन्नति का शिखर समझती है और घी में चर्बी या कंद में हड्डी व गोरक्त मिश्रित सुन उसे छोड़ नहीं सकती।

हे प्रियवर बन्धु वर्गो! क्या सांसारिक लाभ के कारण और क्या पारलौकिक दृष्टि से हर दो प्रकार से गो-सेवा मनुष्य मात्र के लिये लाभ का हेतु है। अतएव हे धर्म्म को प्राण से प्यारे ख़याल करने वाले भाइयो! और हे परोपकार पर न्यौछावर हो जाने वाले बन्धु वर्गो! और हे निष्काम जप तप कर स्वर्ग तक की इच्छा न करने वाले ऋषि सन्तानों! व हे हरिश्चन्द्र व मोरध्वज जैसे दानी राजाओं के आदर्श बनने वाले हिंदू आर्यो! यदि तुम में अपने पितामहादि भारद्वाज व वशिष्ठ विश्वामित्र व वत्स व गर्ग व चित्रगुप्तादि ऋषियों व राठौर, चौहान व सोलंखी व गुरु गोविन्द सिंह जी एवं शिवा जी महाराज आदि धर्म्मवीरों का तनिक भी अंश अवशेष है तो उठो, एक प्राण हो आपस के द्वेषभाव को तिलांजलि दे गोरक्षा के वास्ते, जिस के सांसारिक व पारलौकिक लाभ तुम को भली भांति से दिखला दिये गये हैं, कटिबद्ध हो जाओ। क्योंकि दो प्राण एक हो कर पर्वत को भी तृण समान तोड़ डालते हैं किन्तु तुम्हारा तो बड़ा भारी दल है। वह कौन कार्य्य है कि जिस को तुम करना चाहो और न हो। वह कौन वस्तु है कि जिस की तुम कामना करो और प्राप्त न हो। फूट राक्षसी के के न होने की दशा में वह कौन समर अथवा संग्राम है कि जिस में तुम जय की इच्छा मात्र करो और कृतकार्य्य न हो।

प्रियवर सज्जनो ! याद रखो कि ऐसा सुराज्य कि जिस में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अथवा अपनी जाति वा अपने देश के सांसारिक अथवा धर्म सम्बन्धी उन्नति के उपाय में हर प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त है बड़े भाग्य से प्राप्त हुआ है। यदि इस समय ऐसी न्यायशीला गवर्नमैंट के राज्य में अचेत रहे तो पछताओगे। ऐसा सुअवसर फिर न पाओगे। मर जाने पर ख़ाली हाथ जाओगे। अंत समय तुम अपरिचित परलोक में सिवाय धर्म्म व परोपकार के किसी को सहायक न पाओगे। जैसा कि शास्त्रों का वचन है—

द्रव्याणि भूमौ पशवश्च गोष्ठे भार्या गृहद्वार जनः श्मशाने
देहश्चिता यां परलोक मार्गे कर्म्मानुगोगच्छति जीवएकः
मनुस्मृति—मृतंशरीर मृत्सृज्यः काष्ट लोष्टमसंक्षितौ
विमुखा बांधवा यांति धर्मस्त मनुगच्छति
नामुत्रहि सहायार्थं पिता माता च तिष्ठतः
न पुत्रदाराऩ्न ज्ञाति धर्म्मस्तिष्ठति केवलः

अर्थात् जो द्रव्य तुम ने एकत्रित किया है वह पृथ्वी पर ही या बड़े २ संदूकों में पड़ा रहेगा। सवारी के हाथी घोड़े व गाड़ी आदि भी अस्तबल व फ़ीलख़ानों में बँधे रहेंगे। तुम्हारी प्राणप्यारी अर्द्धाङ्गिनी स्त्री केवल महल के द्वार तक ही तुम्हारी लाश के संग जावेगी। और बिरादरी व भाई बन्धु या मुहल्ले के मनुष्य श्मशान तक साथ जा कर काष्ट व मिट्टी की भांति तुम को फैंक अथवा गाड़ या जला कर वापिस चले आवेंगे। केवल एक धर्म्म अरु परोपकार जो तुम ने किया होगा वह परलोक में संग जा कर मित्रवत् तुम्हारा सहायक रहेगा। मा बाप व इष्ट बन्धु पुत्र व स्त्री व जाति बिरादरी वाले अथवा परम मित्र वकील व मुख़तार

बेरिस्टर आदि कोई भी वहां सहायक न हो सकेंगे किन्तु सब के सब जीवात्मा के बिदा होते ही तुम से सम्बन्ध तोड़ देवेंगे। समय आने पर केवल नाम मात्र को तुम्हारे सद्गुणों व परोपकार की प्रशंसा अथवा तुम्हारे अवगुण व नीच कर्मों की निन्दा अवश्य करते रहेंगे।

इस से हे प्रिय बन्धु महाशयो! याद रक्खो अरु सत्य जानो कि मृत्यु का कोई समय नियत नहीं है इस से शुभ कार्य्य करने में विलंब न करना चाहिये। यह नहीं कि घर में जा कर सलाह कर लेवें तब करेंगे। आज नहीं, अमुक दिन से इस धर्मकार्य्य का अनुष्ठान करेंगे क्योंकि नीतिशास्त्र का वचन इस प्रकार है:—

अजरामरवत्प्राज्ञो विद्यामर्थंच चिंतयेत्

गृहीत इवकेशेषु मृत्युना धर्म्ममाचरेत्

इस का आशय यह है कि मनुष्यों को उचित है कि जब कोई व्योपार, व्यवहार अथवा विद्या प्राप्त करनी हो तो यह मान लेवें कि मैं अजर अमर हूं कभी नहीं मरूंगा परन्तु जिस समय कोई धर्म सम्बन्धी काम करने की इच्छा हो तो यह दृढ़ निश्चय कर लेवें कि यमराज के दूत मेरी चोटी को पकड़े हुए हैं। न मालूम किस समय झटका देवें और प्राण निकाल लेवें। इसी से इस शरीर को क्षणभंगुर कहा है— क्योंकि पलक मारने में देरी होती है परन्तु मृत्यु को आते विलम्ब नहीं लगता। उस को न राजा महाराजा का भय है, न हकीम व डाक्टर का लिहाज़, उस के निकट न ग़रीब व अमीर में कुछ फर्क है, न ब्राह्मण व चांडाल से तर्क वितर्क, जैसा ब्राह्मण वैसा भंगी, अथवा जैसा हिन्दी वैसा फिरंगी।

सज्जनो ! काल महाबली है। वह न बच्चे व जवान को देखता है, न बूढ़े व पहलवान पर दया करता है, न बीमार अथवा तन्दुरुस्त को अभय दान देता है। एक क़दम उठाकर रक्खा है, भरोसा नहीं कि दूसरा भी रक्खा जावेगा या नहीं।

इस से हे प्रियवर बांधवो ! प्रत्येक समय मृत्यु को अटल व सन्मुख खड़ी जान कर गोरक्षा को जो सब धर्मों का सार अथवा परोपकार का मूल है परम कर्त्तव्य जान तन मन धन की परवाह न कर गोरक्षा पर कटिबद्ध हो जाओ। क्योंकि आज कल भारतवर्ष में इस की अत्यन्त आवश्यकता है। अधर्म फैलने और धर्म नाश होने के अतिरिक्त गोवध से गौओं की न्यूनता होने के कारण देश के असंख्य धन का क्षय हो रहा है। जिस का हाल आप मेरे पहले निवेदन किये हुए अन्न की मँहगी के प्रमाण पृष्ठ व मुसलमानों से निवेदन पृष्ठ में देख चुके होंगे। किन्तु यहां भी थोड़ासा दूसरे ढंग पर नुक़सान का हाल दिखाता हूं। पहले समय को जाने दीजिये देखिये ग़दर १८५७ ई० के समय में एक रुपये का पांच सेर घी का भाव था परन्तु अब गायों की कमी से एक सेर से भी कम है जो कि भारतवर्ष में तीस करोड़ मनुष्य बसते हैं। यदि हम मान लेवें कि देश की दरिद्रता के कारण चौबीस करोड़ मनुष्यों को बिलकुल घी दूध की आवश्यकता नहीं है और केवल छः करोड़ मनुष्य ही घी दूध के खाने वाले हैं। अतः यदि हम कम से कम केवल घी व दूध का प्रति मनुष्य एक एक पैसे रोज़ का खर्च कल्पना कर लेवें कि जो बहुत ही कम है। फिर शादियों में और हलवाइयों के यहां जहां घी दूध का बड़ा भारी खर्च है उस को भी एक एक पैसे के अन्दर मान लेवें तो दो पैसे नित्य प्रति मनुष्य घी दूध के मोल लेने में

तीन करोड़ आने अथवा १८७५०००) रुपये नित्य का खर्च हुआ कि जो हम को ग़दर के दिनों में कि जब आज से पांच गुना घी का भाव था, तीन लाख पचहत्तर हज़ार रुपयों में मिल सकता था। इस से स्पष्ट विदित होता है कि इस समय हम को पन्द्रह लाख रुपये नित्य घी दूध में अधिक खर्च करना पड़ता है। इसी प्रकार तीस करोड़ आदमियों के लिये आध सेर प्रति मनुष्य अन्न का खर्च रक्खा जावे तो पन्द्रह करोड़ सेर नित्य अन्न की आवश्यकता होती है कि जो बीस सेर के भाव से भी पचहत्तर लाख रुपये नित्य कीमत में होता है परन्तु जो कि ग़दर के दिनों में अब से तिगुना अन्न का भाव था। अर्थात् उस समय पच्चीस लाख रुपये में ही इतना अन्न आ सकता था। तात्पर्य्य यह है कि केवल पेट के भरने में हम को अन्न में पचास लाख रुपया नित्य पहले से अधिक खर्च करना पड़ता है। दूसरी तरह पर कह सकते हैं कि इस अगणित गोहत्या के कारण हम को केवल मामूली आवश्यकता की घी दूध और अन्न के प्राप्त करने में इस समय पैंसठ लाख रुपिया नित्यप्रति या दो अरब चौंतीस करोड़ रुपिया सालाना का नुक़सान उठाना पड़ता है कि जिस के स्मरण मात्र से आंखों के सामने अंधेरा छा जाता है दिल थर्राने लगता है इस के अतिरिक्त और जो जो नुक़सान जान व माल के हो रहे हैं उन की तो गिनती ही नहीं। यदि देशवासियों का ध्यान फिर गोरक्षा व गो सेवा की ओर हो जावे तो सहज ही में इस क़दर रुपये की बचत हो सकती है।

ख़ैर यह नुक़सान तो हमारा और अन्न जातियों का शामलात का ही है परन्तु गोहत्या से जो आघात हमारे

धर्म्म पर हो रहा है वह धन दौलत क्या बरन प्राण-हानि से भी बहुमूल्य कहा जा सकता है। जैसे कि महाभारत का वचन है कि:—

यस्मिन्देशे भवेद्‌हिंसा गवानां यत्र सूदनः
तस्मात् वैयोजनादूर्द्धं देवागच्छति सत्वरम्

इस का आशय यह है कि जिस स्थान पर गोहत्या व गोबध होता है वहां से देवता गण एक योजन अर्थात चार कोस अलग चले जाते हैं, अर्थात् वहां की भूमि को छोड़ देते हैं। अब कहिये कि जब देवता उन स्थानों से बिदा हो गये तो हमारे देव-मन्दिर ऐसे स्थानों पर कैसे हम को वांछित फल दे सकते हैं? कायदे की बात है कि जब कोई अपने स्थान को छोड़ता है तो उस का कारण अप्रसन्नता होती है। अतः जब देवता व ईश्वर अप्रसन्न व कोपवश हुए तो प्रति वर्ष अकाल व ओलों का पड़ना व टिड्डी अरु भूकम्प का आना और नाना प्रकार के रोगों हैज़ा प्लेग व निमूनिया और सरसाम आदि से जवान मौतों का होना कौन आश्चर्य की बात है? देवकोप के होते हम को जो जो कष्ट अथवा हानि पहुँचे वे सब न्यायसंगत हैं। इस से हे प्यारे बांधवो! शीघ्र उस जगत-पिता जगदीश्वर के प्रसन्न करने का उपाय करो और वह सर्वोत्तम उपाय केवल गोरक्षा व गो सेवा ही है कि जो श्रीकृष्ण जी महाराज को परमप्रिय है। इसी से संसार में मनुष्यों को अर्थ धर्म्म काम मोक्ष सब कुछ प्राप्त हो सकता है।

प्रियवर सज्जनो! इतने ही लेख को मैं अधिक समझ अपनी हार्दिक उमंग की जो धारा प्रवाह उमड़ती चली आती है रोक कर आपकी असह्य कर्णवेदना को कम करता हूं क्योंकि विद्वानों को तो इशारा ही काफी है। ॐ शान्तिः ३

आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा में विशेषतः निवेदन ।

महान् शोक के साथ निवेदन किया जाता है कि आर्य-समाज के साहसी एवम् कर्त्तव्य परायण दल ने गोरक्षा से अपनी कृपादृष्टि बिलकुल उठाली । जो कि यह प्राचीन वृक्ष श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती महाराज की अमृतमय कृपा दृष्टि से सिंचित होकर हराभरा हुआ था, और सब से प्रथम गोशालाओं की नींव भी उक्त स्वामी जी महाराज के उपदेश से आर्यसमाज ने ही स्थापित की थी परन्तु परमेश्वर जाने किस पालिसी से आर्य्यप्रतिनिधि सभा युक्तप्रदेश ने इस के विरुद्ध एक रिज़ोल्यूशन पास किया कि जिस की नकल आर्य्यसमाचार पत्र मेरठ के पौष सम्वत् १९५० के ३०६ पृष्ठ में दर्ज हुई थी, जिस में लिखा था कि आर्य्यसमाज को गोशा-लाओं से सम्बन्ध तोड़ कर प्रथम मनुष्यों को सुधारने अर्थात् वैदिक मत फैलाने की ओर ध्यान देना चाहिये । जिस समय वैदिकमत देशव्यापी हो जायगा उस समय स्वयं ही गोरक्षा हो जायगी । इस समय इस पशुरक्षा से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता ।

हमारी बुद्धि में नहीं आता कि आर्य्यसमाज ने वेदा-नुकूल स्वामी जी के उपदेश के विरुद्ध यह स्पष्ट भूल कैसे की क्योंकि जब तक आर्य्यसमाज मनुष्यों को सुधार कर वैदिक मत फैला हुआ देखने की आशा करेगा तबतक गौएं इस पृथ्वी पर न रह कर गोलोक को सिधार जावेंगी । उस समय केवल हाथ मल पश्चात्ताप कर रह जाना पड़ेगा । उस समय कोशिश करना ऐसा है कि जैसे तृणसमूह में आग लग जाने पर उस के बुझाने को कूआ खोदना । उस समय क्या उस कूए का जल उस भस्मीभूत तृणों पर छिड़कने से क्या वह भस्म

तृणरूप में परिणत हो सकती है ? नहीं, कदापि नहीं । यह तो स्पष्ट विदित है कि हवनादिक कोई भी वैदिककार्य बिना गाय के सम्पन्न नहीं हो सकता, न बिना गाय के श्रेष्ठ मनुष्य जीवित रह सकते हैं, जब घी दूध बिल्कुल न रहेगा या कम हो जायगा, तो किस पदार्थ से हवन होवेंगे ? वायु शुद्ध कैसे होगी ? जब अमृतोपम घृत, दुग्ध, भोजन को न मिलेगा तो कैसे शरीर पुष्ट होगा । गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की बुद्धि कैसे निर्मल हो कर स्मरणशक्ति बढ़ेगी या कैसे संतान बलवान् हो कर विद्वान् होंगी ? और कैसे वेदों का प्रचार देशव्यापी होगा ?

क्या आपने शास्त्र का यह वचन नहीं सुना है ।

श्लोक—नोचेद्गवां यदि पयः पृथिवीतलेस्मिन् ।
संवर्द्धनं न च भवेद्बुधिसंततीनाम् ॥
यो जायते विधिवशा नतुभोऽपिरुद्धः ।
निर्वीर्य्य शक्ति रहितोऽतिकृशः कुरूपः ॥

अर्थात यदि पृथ्वी पर घी दूध न होवे तो यह ब्रह्मा की सृष्टि कदापि नहीं बढ़ सकती । यदि प्राकृतिक नियमानुसार उत्पन्न भी होवे तो बल वीर्य्य रहित अथवा शक्ति व साहसहीन और दुबली अथवा कुरूप होवेगी । इस वचन के अधिक प्रमाण की आवश्यकता नहीं है । इस से जब इस अमृत के पैदा करने वाली गौवें ही नहीं रहेंगीं तो ऐसी सृष्टि को आप वैदिक मत पर कैसे ला सकेंगे ? अतः आर्य्य-प्रतिनिधि सभा के उस रिज़ोल्यूशन व वर्त्तमानकाल में आर्यों का गो रक्षा पर दत्तचित्त न होने से न मालूम स्वामी जी महाराज की आत्मा को स्वर्ग में कैसा कष्ट होता होगा । आर्य्यसमाज को गोरक्षा का मूलोद्धारक मान कर सनातन

धर्मावलम्बियों ने भी इस ओर से बेपरवाही कर रक्खी है। इस समय जो थोड़ी सी गोशाला मौजूद हैं उन के प्रबन्धकर्त्ताओं को न आर्य्य समाज ही से कुछ मतलब है न सनातन धर्म्म सभाओं से कोई सम्बन्ध है। वह पुराने फैशन के सीधे साधे हिन्दू कहलाने वाले हैं। इसी कारण से मुख्य लाभ जो देश को गोरक्षा से होना चाहिये नहीं होता। इस से हे प्यारे आर्य्य समाजियो! आप को उचित है कि देशोद्धार को ध्यान में रखते हुए वेदों की आज्ञानुसार वैदिक मत फैलाने साथ साथ गोरक्षा को उस से अत्यावश्यक जान कर लोगों के चित्त को इस ओर आकर्षित कीजिये और जो मुख्य लाभ गोरक्षा से दिखलाये जाते हैं उन को कार्य्य में परिणत कर के सर्व साधारण के सामने नमूने के तौर पर पेश कीजिये।

गोरक्षा के मुरझाये हुये वृक्ष को आर्य्य समाज ने ही फिर हरा भरा किया था। अतः उस से समाज का मुँह फेरना या उस की आवश्यकता पर ध्यान न देना अति शोचनीय व निन्दनीय होते हुए नीति विरुद्ध भी है जैसे कहा है:—

दोहा—जल काठै बोरत नहीं कहो कौन यह नीति।
अपना सींचा जान कर पहली पालत प्रीति॥

अतएव इस ओर यदि शीघ्र ध्यान न दिया गया तो आर्य्य व हिंदू धर्म्म अवश्यमेव रसातल को पहुँच जावेगा। यदि कुछ शेष रह गये तो वह ईसाई अथवा ब्रह्मसमाज के रूप में होंगे, और मेरे पूर्वोक्त सप्रमाण कथनानुसार इस बीसवीं सदी के मध्य में ही एक रुपये का तीन तोले घी हो जायगा और शायद ही किसी राजा महाराजाओं के यहां गाय व बैल के प्रयाग के अक्षयवट की नाईं दर्शन हुआ करेंगे।

यदि मेरा यह उचित निवेदन आर्यसमाज को स्वीकृत न हुआ तो समझ लिया जायगा कि:—

विनाशकाले विपरीतबुद्धिः

अर्थात् जब दिन खोटे आते हैं तो बुद्धि विकार से विपरीत कोशिश होती है। आपलोग स्वयं बुद्धिमान हैं हिताहित विचार कर इस पर ध्यान दीजिये। ओं शांतिः शांतिः शांतिः

उपदेशक महाशयों से निवेदन।

गिरी हुई दशा को सुधारना अथवा देश को अवनति से उन्नति पर पहुँचाना या किसी मामले पर सर्व साधारण का ध्यान दिलाने का मुख्य कारण उपदेश ही है। जहां सत्य संकल्प से देश के शुभचिन्तक नेता अथवा धार्म्मिक उपदेशक या साहसी रिफार्मर होंगे वहां देश की उन्नतिकी ओर सर्व साधारण का ध्यान हो जाना कोई कठिन कार्य्य नहीं है। वर्त्तमान में बंग देश का स्वदेशी प्रचार इस का नमूना है।

अतएव यदि इसी भांति गोरक्षा उपदेशक भी सत्य संकल्प वा दृढ़ता से हिम्मत बांध कर बाधाओं और कठिनाइयों को झेलते हुए अपने कर्त्तव्य कर्म्म से न हटेंगे वा निराश न होवेंगे तो शनैः शनैः हरएक मनुष्य गोरक्षा के लाभ से अभिज्ञ होकर इस को देशोद्धार और जात्युन्नति का मूल कारण मानने लगेगा परन्तु शोक है कि मैं ने बहुधा गोरक्षा के उपदेशकों को देखा है कि वे उपदेश करते समय आदि से अंत तक अपनी सम्पूर्ण भाषण शक्ति बधिकों से गौओं के बचाने और मुसलमानों की निन्दा में समाप्त करते रहते हैं और जोश दिलाते हैं कि हे निर्वीर्य्य हिन्दू सन्तानों व भारत के सपूत पुत्रो ! तुम को धिक्कार है कि तुम्हारी परम पूज्य गौ मातायें कसाइयों की तीक्ष्ण छुरी के नीचे नित्यः

प्रति आती हैं और तुम अन्धे व बधिर समान खड़े २ उन की अकाल मृत्यु को देखते व सुनते रहते हो। क्या तुम में ऐसे दुष्टों के हाथ से छुड़ाने का साहस नहीं? क्या तुम में अपने धर्म्मपरायण वीर पुरुषाओं का अंश नहीं रहा? क्या तुम ने धर्म्म ग्रन्थों में गोमाता के बचाने को प्राण तक दे देना लिखा हुआ नहीं देखा है? इत्यादि .... ऐसे ही ऐसे उत्तेजक वाक्य चिल्ला २ कर कहते हुए देखा गया है।

मेरी तुच्छ बुद्धि में ऐसे उपदेशक लाभ के बदले अति हानिकारक हैं। अर्थात् मुसलमानों से मेल जोल बढ़ाने के स्थान में उलटा उन का चित्त बिगाड़ शत्रुता को बढ़ाते हैं इस के अतिरिक्त सरकारी क़ानून के अनुसार भी ऐसे उपदेश उत्तेजक और विद्रोहपूर्ण होने के कारण अपराध गिने जाते हैं जैसे कि सन् १८९३ ईसवी में ज़िले आज़मगढ़ में भयंकर उपद्रव हुआ। उस समय यही हुआ था कि गोरक्षक उपदेशकों ने बधिकों व बूचड़ों से गायों के बचाने के लिये स्थान २ में उपदेश देने आरम्भ किये। इस पर हठी मुसलमानों ने उस को मतविरुद्ध समझ ईद के दिन गायों के बलिदान की तय्यारियां कर दीं। जिस का फल यह हुआ कि सहस्रों निरपराधिनी गौएं बध हुईं। सैकड़ों मनुष्य उभय पक्ष के मरे। अनगिनत बंदीगृहों में ठूंसे गये। बहुत सी गोशालाएं बंद हुईं। और बिना अपराध गवर्नमैंट तक गोरक्षा में सहायता देने वालों की शत्रु बन गई। यदि परिणाम सोच दूरदर्शिता से गोरक्षा के लाभालाभ मुसलमानों को बतला इस की वंश वृद्धि की ओर ध्यान दिलाया जाता और हिंदूओं को सच्ची गो सेवा की राह बतला कर आपस में मेल जोल को बढ़ाते हुए इस की रक्षा व वंशवृद्धि के उपाय बतलाये जाते—

जैसे कि मैं ने अपनी अल्पबुद्धि के अनुसार इस पुस्तक के पहले दूसरे और तीसरे अध्याय में निवेदन किया है तो इन सहस्रों गायों के प्राण बचते और गवर्नमेंट भी इस को राज्यहित व देश की उन्नति का कारण जान इस शुभ कार्य्य में समयानुसार सहायता करती ।

इस से हे प्यारे गोरक्षा उपदेशको ! आप को कोई ऐसे उत्तेजक वाक्य मुख से न निकालने चाहियें कि जो किसी मत अथवा किसी सम्प्रदाय के हृदय-विदारक हों । इस समय न तो गवर्नमेंट की सहायता का समय है न मुसल्मानों से शिकायत की आवश्यकता बरन इस समय आप को सब से प्रथम अपने हिन्दू भाइयों को समझाना चाहिये कि जब वे गाय बैलों के द्वारा हर प्रकार से कृषिकर्म्म और व्यापार आदिक में लाभ उठाते हैं और शास्त्रानुसार इस को तरनतारनी और बैकुंठसेनी समझ माता की पदवी देते हैं, तो इस को वृद्धावस्था व अंगभंग या बेकार हो जाने की दशा में घर से जुदा न करें और इस को पूज्य जान वैसा ही बर्ताव करें जो माता के साथ किया जाता है । साथ ही अपने मुसलमान भाइयों को भी इस के लाभ दिखलाने और देश को जो इस की न्यूनता से हानि हो रही है सविस्तर समझानी चाहिये किन्तु वाद विवाद कदापि न करना चाहिये । इससे जब दोनों जातियें इस की रक्षा को देश रक्षा समझने लगेंगी तो गवर्नमेंट भी इस की सहायक बन जायगी क्योंकि इस में विशेष लाभ राजा का है । राज्य का सम्पूर्ण भार खेती पर है और खेती का दार मदार भारतवर्ष में गाय बैलों पर है । गवर्नमेंट भी इस को खूब जानती है परन्तु हिन्दू मुसलमानों के वैमनस्य के कारण इस पशु की मृत्यु-संख्या कम

करने की ओर ध्यान नहीं देती। जिस दिन इन दोनों जातियों का द्वेषभाव दूर होगा गो-हत्या स्वयं दूर होजायगी। इसी से हमारा कहना है कि गोरक्षा का उपदेश देते समय इस निवेदन पर पूर्ण ध्यान रखना चाहिये।

(२) जहां तक हम उपदेशकों को देखते हैं, वे निष्प्रयोजन भ्रमण कर उपदेश नहीं करते बरन लोभ वश रेल द्वारा दौड़े २ फिरते हैं। जिस किसी नये स्थान से निमंत्रण आता है तो उस को लिख भेजते हैं कि हमारा दो मनुष्यों का सेकंड अथवा इन्टर क्लास का आने जाने का भाड़ा पहले भेज दो या देना होगा और हमारी दक्षिणा अर्थात बिदाई कम से कम २५) पच्चीस रुपये है।

ध्यान करने का स्थान है कि जहां इस कलि काल में धर्म्म की वार्त्ता को कोई दक्षिणा लेकर भी बड़ी कठिनता से सुनने आता है वहां दक्षिणा देकर कौन सुनने लगा है। फिर लोभी और लंपट मनुष्य की शिक्षा का असर जैसा सुनने वालों पर होता है वह तो स्पष्ट विदित ही है। यह रोग हमने आर्य्य समाज के उपदेशकों में बहुत कम देखा है। इसी से वे सफलमनोरथ होते हैं।

सनातन धर्म्म के बहुत थोड़े सज्जन इस रोग से बचे हैं, इसी कारण से उन का कथन श्रोताओं के हृदय में प्रवेश नहीं करता। यह हम भी खूब जानते हैं कि गृहस्थ उपदेशकों को कुटुम्ब के निर्वाहार्थ द्रव्य की आवश्यकता होती है, इस के लिये उन को या तो किसी सभा की ओर से वेतन ले कर उपदेश करना चाहिये या जो कोई प्रसन्नता से स्वयं देवे उस पर संतोष करना चाहिये या यदि पुत्र पौत्रादिक कुटुम्ब का पालन कर सकते हों तो धर्मार्थ उपदेश देना चाहिये क्योंकि

उपदेशक लोग अधिकांश ब्राह्मण ही हैं और ब्राह्मणों का जन्म केवल देशहित के लिये है। संतोष ही उन का धन है, क्या सेकेंड क्लास के बैठने वाले महामहोपदेशक इंटर में या इंटर क्लास का महत्त्व रखने वाले महोपदेशक व उपदेशक गण थर्डक्लास द्वारा धर्महित भ्रमण कर सभा के भार को हलका नहीं कर सकते ? क्या अपने निज के काम में भी वे सेकेण्ड अथवा इन्टर में बैठ कर यात्रा करते हैं ? फिर आर्य्यसमाज और धर्म्मसमाज यह तो अवश्य मानते हैं कि गोरक्षा हमारे धर्म्म का मुख्य अंग है। परन्तु हमने इन दोनों सम्प्रदायों के अधिवेशनों में कभी भी गोरक्षा का व्याख्यान होते नहीं सुना। भारतधर्म महामण्डल जो अपने को सनातनधर्म का रक्षक मानता है उस के भी किसी उपदेशक के मुख से बिना किसी विशेष आग्रह के आजतक गोरक्षा का उपदेश नहीं सुना गया। भारतधर्म महामण्डल का बड़ा भारी डेप्यूटेशन जो सन् १९०९ ईसवी के आरम्भ में बम्बई गया था और वहां एक मास तक बड़े २ धुरंधर महोपदेशकों ने धुआंधार व्याख्यान फटकारे थे परन्तु क्या मजाल कि जो गोरक्षा का नाम भी उस में आजावे।

जब उपदेशकों की इस घोर निद्रा के कारण गोवंश गोलोक को पहुँच जायगा तो आर्य्यसमाज जो विशेष कर हवन हवन करना कह चिल्ला रही है जब उन के उपदेश से वैदिक धर्म्म फैल हवन की सब को आवश्यकता होगी तो अग्नि में घृत के स्थान में क्या कुत्ते की चरबी की आहुतियें देवेंगे और जब घृत दुग्ध के अभाव से गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को सात्विक भोजन न मिलेगा तो कैसे उन की स्मरण शक्ति बढ़ेगी और कैसे वेदों में पारंगत होवेंगे ? सनातन धर्म्म के उपदेशक जो भक्ति श्राद्ध और तीर्थ अवतार मण्डन करते फिरते हैं वे

जब श्रोताओं के चित्तों में श्राद्धादिक का महत्व बिठला देवेंगे तो देवताओं की आरती व भोग को घृत व मिष्टान्न के स्थान की पूर्त्ति किस वस्तु से करेंगे ? और घृत दुग्ध के अभाव से श्राद्ध कर्म्म में ब्राह्मणों को सन्तुष्ट किस वस्तु से करेंगे ? अथवा वैतरणी उतरते समय गौमाता के अभाव में क्या शूकरी से सहायता लेंगे ? मैं उपदेशक महाशयों से जो विद्या बुद्धि व धर्म्म में मुझ से कहीं अधिक हैं अपने इन कटुवाक्यों की क्षमा प्रार्थना करता हूं। देश काल को देख स्वतः लेखनी द्वारा यह भविष्यत होनहार निकल गई। अतः हमारे विद्वान् उपदेशक यदि रेल को छोड़ इधर उधर छोटे बड़े ग्रामों अथवा क़सबों को भी अपने चरणारविंद से मान प्रतिष्ठा त्याग उनके खंडहरों को पवित्र कर धर्म्मोपदेश देवें तो इस प्रशंसित कार्य्य से देश व जाति का बड़ा भारी लाभ होगा क्योंकि उपदेश के मुख्याधिकारी ग्रामवासी ही हैं। देश की उन्नति और अवनति यदि सच्ची देखी जावे तो वह ग्रामवासियों के ही आचरण व अचित्य होने पर है नगर-निवासियों पर नहीं।

फिर दोनों दल यदि अपने को गोहितैषी मानते हैं तो जहां कहीं वे व्याख्यान देवें वहां मंगलाचरण के स्थान में अपना व्याख्यान गोरक्षा पर देवें, और जिस ग्राम में जावें वहां के निवासियों से पंचायत द्वारा प्रतिज्ञा पत्र लिखावें कि हम पशुओं के मेलों अथवा मंडियों में गौ बिलकुल न ले जावेंगे, और बैल को भी जो वृद्ध होगा कदापि न ले जावेंगे, न घर पर गोघातकों अथवा उन के दलालों के हाथ बेचेंगे। यदि ऐसा कुत्सित कर्म्म करें तो पंचायत उन को जाति-दण्ड देवे। ऐसा आप लोगों के करने से सच्ची गोरक्षा होगी क्योंकि गोशालाओं के स्थापित होने से केवल लूली लंगड़ी ही गोमाताओं

की जिन को कोई आप ही आकर वहां पहुँचा जावे रक्षा हो सकती है परन्तु यह नित्य की दारुण गोहत्या कदापि बिना ऐसे किये कम नहीं हो सकती। इसी से इस को मुख्य गोरक्षा कहा गया है। आजकल इस कार्य्य को श्रीमान् बाबा भगवान दास जी उदासीन साधु स्थान बिधौची कलां रियासत पटियाला सब काम छोड़ सत्य संकल्प से बड़ी उत्तमता के साथ कर रहे हैं, न्यूनता केवल धन व सलाहकारों की है। यदि इसी प्रकार सम्पूर्ण गोशालायें अथवा गोहितकारिणी सभाएँ कार्य्य करें तो बहुत शीघ्र गोरक्षा देशव्यापी हो सकती है।

उपसंहार में मैं आप सज्जनों से इतना और निवेदन करना उचित समझता हूं कि कार्य्य को आरम्भ कर के छोड़ न बैठिये क्योंकि नीतिशास्त्र का वचन है:—

प्रारभ्यते न खलु विघ्न भयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्न विहिता विरमंतिमध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारभ्य चोत्तम जनाः न परित्यजंति॥

अर्थात् जो कमहिम्मत अल्पसाहसी अथवा नीच श्रेणी के मनुष्य होते हैं वे किसी उत्तम कार्य्य को उस में विघ्न वा भय जान आरम्भ नहीं करते, और मध्य श्रेणी के जो मनुष्य हैं वे विघ्नों को जानते हुए कार्य्य का आरम्भ तो कर देते हैं किन्तु उस में किसी प्रकार की रुकावट अथवा भय देख तत्काल ही वे उस को त्याग देते हैं परन्तु जो उत्तम श्रेणी के मनुष्य होते हैं वे कार्य्य को प्रारम्भ करके और उस में सफल-मनोरथ न होने अथवा बाधा पड़ती देख और नाना प्रकार के कष्ट झेलते हुए भी उस से निरुत्साहित न हो उसे कदापि नहीं त्यागते। वरन् समाप्त करके ही छोड़ते हैं।

इस से आप भी यदि बृटिश गवर्नमेण्ट के क़ानून को दृष्टिगोचर रखते हुए और अपने देश भाई मुसलमानों से मेल जोल को बढ़ाते हुए इस जगत् हितैषी पशु की भारतोन्नति के ध्यान से रक्षा का उपदेश देवेंगे तो क्या यह असम्भव है कि पूर्णतया गोरक्षा न हो जावे और वह दिन दूर नहीं कि यह देश फिर वैसा ही हरा भरा और उन्नतिशील न हो जावे । और सम्भव है कि हमारे जैसे भीरु और साहसहीन मनुष्यों के स्थान में फिर पूर्ववत् सूत व शौनिक व नारद व वशिष्ठ तुल्य धर्म्मोपदेशक और अर्जुन व भीम व द्रोण व कर्ण सरीखे धर्म्मवीर योद्धा और महर्षि गोतम कणाद व पतंजलि व व्यासवत् विद्वान् सर्वशास्त्रपारंगत इस भारतवर्ष में जन्म धारण कर देशोन्नति व देशाभिमान का कारण होवें । ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

श्रीमान् सम्राट् पंचम जार्ज अथवा भारत गवर्नमेण्ट की सेवा में सविनय निवेदन ।

जोकि हमारी न्यायशीला व कर्त्तव्यपरायण गवर्नमैण्ट अपनी प्रजा की भलाई व सुख के साधन के हेतु हर समय ढूंढ़ती और नाना प्रकार के उपायों से अपने शासनाधीन प्रजा के सुख सम्पादन और लक्ष्मीपात्र बनाने में दत्तचित्त रहती है किन्तु राजा के अन्य धर्म्मावलम्बी होने और एक देश के वासी न होने के अतिरिक्त हमारे राज्याधिकारी लोग एक बहुदूरदेशवासी एवम् अति धनाढ्य और लक्ष्मीसम्पन्न द्वीप के रहने वाले हैं कि जिन को वे कारण कि जो हमारे धनहीन व दुःख से मनमलीन होने के हेतु हो रहे हैं अति तुच्छ दृष्टिगोचर होते हैं न उन हमारे दुःखों को वे दुःख समझते हैं न हमारे संकटों को संकट जान उन के मूलोच्छेदन का उपाय

करते हैं बरन हमारी प्रार्थनाओं को व्यर्थ या निर्मूल जान हम को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अतः इसी कारण से आज हम को अपनी न्यायपरायण व प्रजावत्सल गवर्नमैण्ट की सेवा में सविनय निवेदन करने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

श्रीमान् पर प्रगट होवे कि भारतखण्ड एक कृषिप्रधान देश है इस देश वासियों का निर्वाह केवल घी दूध और अन्न पर ही है और अन्न की पैदावार भूमि की अच्छी प्रकार जोताई से हो सकती है कि जो यहां बैलों से की जाती है, और बैलों की उत्पत्ति व वृद्धि गायों से होती है। इसी प्रकार घृत व दूध भी विशेष कर गायों से ही प्राप्त होता है किन्तु वर्त्तमान काल में अपरिमित गोबध के कारण गाय व बैल न्यून अथवा बहुमूल्य होते चले जा रहे हैं कि जो बड़ा भारी कारण यहां के देशवासियों के दरिद्र हो जाने और भूखा मरने का है क्योंकि यहां के निवासी न तो इतने लक्ष्मीपात्र अथवा सामर्थ्यवान् हैं कि जो यूरोप और अमेरिका देशवासियों की भांति कृषिकर्म्म इंजिन अथवा कलों से कर सकें न देशरीति व धर्माज्ञा के कारण गौओं के अभाव में घृत के स्थान में चर्बी से अपना निर्वाह कर सकें। अन्य देशवासी मांसाहारी होने की दशा में भी बिना अन्न के केवल मांस पर निर्वाह नहीं कर सकते अतएव यदि गोवंश की रक्षा की जावेगी तो इस पुस्तक के दूसरे अध्याय के निवेदन के अनुसार इस देश में इस क़दर अन्न की पैदावारी की अधिकता होगी कि भारतवासियों की आवश्यकता पूर्ण करने के अतिरिक्त करोड़ों मन अन्न यूरोपदेशवासियों के निर्वाहार्थ भेजा जा सकेगा जोकि सर विलियम डिगबी सी० आई० ई० सेक्रेटरी इंडियन पोलीटीकल एजेन्सी लन्दन के लेखानुसार

औसत आमदनी इस देश के रहने वालों की प्रति मनुष्य २७) रुपये और इंगलैण्ड निवासियों की प्रति मनुष्य ६३०) रुपये वार्षिक है और इसी प्रकार देश के कृषकों की औसत आमदनी सालाना मिस्टर सर ई० बेरिंग साहब के मतानुसार १८) रुपये प्रति मनुष्य है। विचारने का स्थल है कि इतनी थोड़ी आमदनी में किस प्रकार से यहां के निवासी अपनी क्षुधा की ज्वाला को बुझा सकते हैं। यदि रईसों और सौदागरों की संख्या इन में से निकाल डाली जावे कि जिन की आमदनी ने इस औसत को बहुत कुछ बढ़ा दिया है तो स्पष्ट विदित हो जावेगा कि आबादी का दो तिहाई भाग आधा पेट भी अन्न नहीं पाता।

जोकि हमारे वर्त्तमान सम्राट् श्रीमान् राजराजेश्वर जार्ज पंचम थोड़े ही दिन हुये कि प्रिन्स औफ वेल्स की दशा में भारत में पधारे थे उन के साथ जो मिस्टर सी० आई० रुसल साहब बहादुर भी पधारे थे। उन्हों ने यहां की दशा के निरीक्षण के पश्चात एक लेख विलायती मासिक मेगज़ीन एवरी बौडीज़ (Every Bodies) नामक में प्रकाशित किया था, उस के पढ़ने से वह कौन बज्र हृदय होगा कि जिस का कलेजा विदीर्ण न हो जावे या वह कौन राज्याधिकारी होगा कि जो उसे देख कर उन कष्टों व संकटों के नष्ट करने में कटिबद्ध न हो जावे। उन्हों ने बहुत ही कम हिसाब लगा कर लिखा है कि सन् १८९१ ईसवी से सन् १९०१ ई० तक दस साल की मुद्दत में आठ करोड़ मनुष्य केवल भूख के कारण मृत्यु को प्राप्त हुये हैं। वे यह भी लिखते हैं कि इस बीसवीं शताब्दि के समय में सभ्यताभिमानी व दयापूर्ण कृश्चियन गवर्नमेण्ट की आश्रित प्रजा का अस्सी लाख सालाना क्षुधातुर हो कर

मरना बड़ी लज्जा की बात है। फिर यह भी लिखते हैं कि हिन्दुस्तान में एक साल के अन्दर जितने मनुष्य केवल पेट भर अन्न न मिलने से मरते हैं उतने सम्पूर्ण पृथ्वी की कई शताब्दियों के घोर संग्राम में भी नहीं मरे हैं। देखिये जब कभी कौन्सटौन का बंद टूटता है या जब मौंटपीली या बिसोबियस नामी ज्वालामुखी पर्वत ज्वाला व राल उगलते हैं या जब भूकम्प से इटली आदि देश के कुछेक मनुष्य स्थान-भ्रष्ट वा मृत्यु को प्राप्त होते हैं तो संसार भर के ईसाई राज्यों में कोहराम मच दया का समुद्र लहराने लगता है और तत्काल ही उन की सहायता के अर्थ प्रत्येक देश के नगरों में चंदा जमा करने का आर्डर पहुँच जाता है। यदि न्याय पूर्वक देखा जावे तो यह मृत्यु संख्या जो यूरोपियन देशों में दैवी-घटनाओं से होती है भारतखण्ड की क्षुधा से मृत्यु को प्राप्त हुए मनुष्यों की केवल एक साल की संख्या का शतांश भी नहीं होता है परन्तु इस अभागे भारत की प्रति वर्ष की ऐसी मौतों को देखते और सुनते हुए भी सब चुपचाप रहते हैं। कोई चूं तक नहीं करता। यदि कौन्सिल या पारलीमैण्ट में कोई प्रश्न भी उठाया जाता है तो उस का उत्तर टालमटोल का दे शान्त कर दिया जाता है जिस से सिद्ध होता है कि भारतवासियों में मनुष्यत्व ही नहीं है किन्तु हे हमारे प्राण-रक्षक महाराजाधिराज! आप तो निष्पक्ष भाव से ईश्वर की ओर से जीवमात्र के स्वामी तथा रक्षक बनाये गये हैं। अत-एव आप दया कर हमारे संकटों के दूर करने का शीघ्र उपाय कीजिये और इस पुस्तक के दूसरे अध्याय में सप्रमाण आवे-दन को न्यायदृष्टि से अवलोकन कीजियेगा तो स्पष्ट विदित हो जायगा कि इन संकटों का मुख्य कारण गौओं की न्यूनता

व गोवध ही है । बिना गोवंश की वृद्धि किये कदापि यह कृषिप्रधान देश इन आपदाओं से मुक्त नहीं होवेगा । हमारा कष्ट कमीशन के विद्वानों अथवा विज्ञानपूर्ण डाकूरों की आलोचनाओं से कभी दूर नहीं हो सकेगा वे तो अन्न की मंहगी को यहां के मूर्ख किसानों में कृषि विद्या का अभाव बतला कृषि स्कूल खोलने का मन्तव्य पेश करेंगे या प्लेग व ज्वरादिक रोगों के देश से निकाल देने में चूहों और मच्छरों पर फौजकशी करना और उन को ढूंढ़ २ कर मारना बतलावेंगे कि जो कठिन ही नहीं वरन असम्भव है । हम को अशिक्षित व मतांध जान कर हमारे आवेदन को वे अतीव तुच्छ ख्याल करेंगे । इस वर्ष नये सुधार की कौन्सिल में जो औनरेबिल लाला रामानुजदयाल व शेख़ असग़रअली साहब खान बहादुर ने बैलों की कमी से उन के मूल्य बढ़ जाने और किसानों को उन के खरीदने में असमर्थ होने और मुल्क ब्रह्मा में गौओं के सूखे मांस भेजने की तिजारत से भारत के कष्ट दूर करने पर जो गवर्नमेंट का ध्यान आकर्षित किया था तो उस आवश्यकीय और भारत लाभकारी प्रश्न को उचित जानबूझ कर भी राजकर्म्मचारियों ने कैसी बुद्धिमानी से टाल दिया है । हा शोक !

शोक व आश्चर्य का स्थल है कि जहां हमारे दूरदर्शी विज्ञानवेत्ता इंगलिश विद्वान् सूर्य तक की आयु का लेखा लगा लेते हैं जैसे कि युक्तप्रदेशीय लार्ड कालविन साहब बहादुर ने सूर्य की आयु दस करोड़ वर्ष सिद्ध कर दो करोड़ वर्ष में उस की ज्योति नष्ट हो जाने का समय नियत कर दिया था, तो क्या हमारे राज्य-कर्म्मचारी गण समय २ की पशु गणना से हिसाब लगा इस भारत लाभकारी पशु के विषय में

यह नहीं निर्णय कर सकते कि इस असंख्य गोवध व निर्दयता के बर्ताव से गाय बैल इस देश से कितने समय में लोप हो जावेंगे, और उस समय देश के कष्टों को कैसे दूर किया जावेगा। खैर हम ही अपने स्वार्थ को सरकारी नकशों से कुछ उद्धृत करते हैं आशा है कि इस पर और दूसरी पशु-गणना को देख कर अवश्य इस के भयानक फल पर ध्यान दिया जावेगा।

देखिये मिस्टर फिलचर साहब बहादुर सर्वे सुपरिन्टेंडेंट जिला बिलग्राम अहाता बम्बई लिखते हैं कि पहले बंदोबस्त ज़िला बिलग्राम में इन पशुओं की संख्या बीस हज़ार आठसौ थी, और फिर दूसरे बंदोबस्त में जो २६ वर्ष के पश्चात् हुआ उन की संख्या ३२ फी सैकड़े के हिसाब से कम हो कर चौदह हज़ार एकसौ रह गई। अतः इस हिसाब से ५६ वर्ष के भीतर जिला बिलग्राम के सम्पूर्ण पशु समाप्त होजाने चाहियें, फिर खेड़ा गजट की दूसरी जिल्द में लिखा है कि २६ साल में ज़िला खेड़ा के अन्दर पशुओं की संख्या साढ़े चौबीस फीसदी कम हो गई, कि जिस के अनुसार ७६ साल में जिला खेड़ा में गाय बैलों का बिल्कुल नाम निशान न रहना चाहिये।

फिर पंजाब की जब सन् १८७४ ईसवी में पशु गणना की गई तो ५ साल के अन्दर साढ़े तीन फीसदी की कमी पाई गई। इस से स्पष्ट विदित है कि यदि यही दशा रही तो सन् २०१७ ई० में पंजाब देश भी इन पशुओं से खाली हो जाना चाहिये।

इसी भांति सन् १८९० व ९१ ई० में अहाते मदरास के अन्दर १४९७०८१३ पशु थे, फिर दो साल पश्चात् गणना की गई तो १३८२२५९२ पाये गये अर्थात् दो वर्ष में ११३८२२१ पशुओं की कमी हो गई, या यह कहिये कि दो साल में तेरहवां भाग पशुओं का कम हो गया।

इसी भांति इन्हीं दो सालों में कि जो कुछ अकाल के साल भी नहीं थे मुल्क अवध में ८३३५९२ और पंजाब प्रदेश में २८५८३१० पशुओं की कमी हुई, किन्तु इस के विरुद्ध मैसूर राज्य में पशुओं की संख्या में अधिकता पाई गई।

अब इस कमी की पुष्टता हम दूसरे प्रकार से दिखलाते हैं, देखिये मिस्टर ह्यूम साहब बहादुर सालाना नुकसान पशुओं का अपनी रिपोर्ट में इस भांति दर्शाते हैं:—

रोगों से मृत्यु संख्या—१०००००० करोड़

भूख से मृत्यु संख्या— ५३००००० लाख

बध होने की संख्या— ३५००००० लाख

———

मीजान १८८००००० करोड़

अर्थात् उन के लिखने के समय एक करोड़ अट्ठासी लाख पशुओं की प्रति वर्ष कमी होती थी कि जिसकी संख्या अब अढ़ाई करोड़ सालाना से भी बढ़ गई है।

फिर दूसरा प्रमाण वलायत को चमड़े की रवानगी का देते हैं जो पशु-बध की अधिकता का कारण है। देखिये मिस्टर जे० ई० ओकोनर साहब बहादुर असिस्टैंट सेक्रेटरी इंडिया ऑफिस रवानगी चमड़े का हिसाब इस भांति लिखते हैं:-

सन्	१८६५ व	१८६६	में	६०९८७३
,,	१८७० व	१८७१	में	२०२०८३७
,,	१८७५ व	१८७६	में	२९४४९३४
,,	१८८० व	१८८१	में	३७३५६४०
,,	१८८५ व	१८८६	में	५३३६२३९
,,	१९०३ व	१९०४	में	१२५०००००
,,	१९०६ व	१९०७	में	१२९१७२२७

अर्थात् ४१ वर्ष में रवानगी चमड़े की संख्या वलायत जाने वाली छः लाख से एक करोड़ उनतीस लाख तक पहुँच गई है और प्रतिदिन अधिक ही होती चली जाती है, जैसे कि श्री वेंकटेश्वर समाचार पत्र १४ जनवरी सन् १९१० से मालूम हुआ कि छः महीने में केवल कलकत्ता बंदर से छप्पन लाख गौओं की खालें विदेश को गईं इन के अतिरिक्त मद्रास, करांची, बम्बई आदि से जो भेजी गई हों वे अलग रहीं, कि जो पशुओं के प्रतिवर्ष अधिकता के साथ मारे जाने का पुष्ट प्रमाण है, और यदि यही दशा रही तो निस्संदेह वह दिन आना कोई दूर नहीं कि जो भारतवर्ष में गाय बैल आदि के दर्शन भी न होवेंगे।

हां विलायती चीनी से बच जाने पर दो एक अस्थि-पिंजर उन के अजायबखानों में भले ही देखने को रह जावें तो आश्चर्य नहीं।

इस के अतिरिक्त हम सरकारी समुद्रीय तिजारत के नक्शों से भी दिखलाते हैं कि इस देश में कि जो पहले घृत दुग्ध का समुद्र कहलाता था और जहां करनल टाड साहब के लेखानुसार सड़कों पर दूध की प्याहुएं बैठी रहती थीं विदेश से कितना घृत दुग्ध आ कर खपता है:—

	सन् ११८५-८६	१८८६-८७	१८८७-८८	१८८८-८९
आमदनी विदेशसे घी की	६८१७३२	७०३४३२	६८६५५८	१०१३४६२
,, ,, मक्खनकी	१६५३३५	२४४०५१	३०७४७२	३००६८६
,, ,, पनीरकी	३९५३५१	३९३७७३	४६१७०२	४८३७३३
मीज़ान रुपयों में	१२४२४१८	१३४१२५६	१४५५७३२	१७९७८८१

फिर वेंकटेश्वर समाचार २४ सितम्बर सन् १९०९ से मालूम हुआ कि केवल इंगलैण्ड में से बंगाल में निम्न लिखित रुपयों का जमा हुआ दूध आया।

सन्	१९०५	१९०६	१९०७
रुपये	४५३४६	१९८९००	४५५०२८

यह हिसाब केवल इंगलैण्ड से आये हुए केवल बंगाल प्रान्त का है। इंगलैण्ड से पंजाब बम्बई आदि प्रान्तों में आया या आस्ट्रेलिया आदि द्वीपों से आया वह अलग रहा।

शोक का स्थान है कि जिस भारतवर्ष से विदेशों को पहले लाखों मन घी जाता था या जिस देश का दूध सड़कों पर मुफ़्त पिलाया जाता था वहां के निवासियों के लिये विदेश से इतना दूध आने लग गया कि जिसे पढ़ शरीर रोमाञ्चित हो जाता है। क्या यह गोवंश की न्यूनता और गोवध की अधिकता का फल नहीं है? अवश्य है, निस्सन्देह है। अतएव यदि देशहितकारी लीडरों या गवर्नमैण्ट ने शीघ्र ही गोवंश की वृद्धि और गोवध की रोक न की तो वह दिन दूर नहीं कि ये गाय बैल ही इस देश से लोप न हो जायँगे वरन यहां के निवासी भी कि जिन का घी दूध और अन्न ही आहार है बिलकुल न रहेंगे। उस समय गवर्नमैण्ट चाहे देश देशान्तरों से मनुष्यों को लाकर बसावे और उस को यूरोपियन बस्ती बना दे। तथापि ऐसे कृषिप्रधान देश में बिना गाय बैल के उन का भी निर्वाह कठिन होगा।

महान् शोक का विषय है कि जब गवर्नमैण्ट छोटे २ पक्षियों और जीवों की रक्षा में दत्त चित्त है अर्थात् जो लैसंस हथियारों का दिया जाता है उस में लिखा होता है कि १५ मार्च से १५ सितम्बर तक यदि कोई शिकारी बटेर, मुरग़ाबी

आदि पक्षी अथवा खरगोश हिरन आदि जीवों का शिकार करेगा तो उस को क़ानून के अनुसार दण्ड दिया जायगा। कारण इस का यही है कि इन महीनों में ये गर्भवती होती हैं और बच्चा देती हैं। यदि इन का शिकार इन महीनों में भी जारी रहता तो जल्दी ही ये लोप हो जाते कि जिस से राज्य कर्म्मचारियों के आनन्द में विघ्न पड़ता।

इसी भांति ऐक्ट नम्बर ६ सन् १८७९ ई० ब्रह्मा, आसाम व मध्यप्रदेश में हाथियों की रक्षा के निमित्त जारी किया गया है तो जिस दशा में शिकारियों के आनन्द के लिये छोटे छोटे पक्षी और जीवों की रक्षा की और हाथियों की राज-ठाठ के कारण रक्षा होना उचित माना गया है तो फिर गाय भैंस की रक्षा के निमित्त कि जिस को मनुष्य मात्र को ऐसी आवश्यकता है जैसी कि प्राण-रक्षा को जल वायु की होती है और जो इन खरगोश व पक्षियों की भांति न तो एक साथ दो चार बच्चे देती हैं न साल में इन की भांति दो चार दफ़े गर्भवती होती हैं क्यों नहीं क़ानून बनाया जाता? दैवात् यदि वे पशु पक्षी अथवा हस्ती पृथ्वी पर से लोप भी हो जावें तो उस से संसारी मनुष्यों को कुछ ऐसी हानि नहीं हो सकती है जैसी कि गाय बैल भैंस आदि के लोप होजाने से होगी, और इस हानि का प्रभाव कुछ प्रजावर्ग पर ही नहीं पड़ेगा। वरन भारत सरकार को भी इस का निकृष्ट परिणाम भुगतना पड़ेगा।

इस से हे हमारे न्यायपरायण राजराजेश्वर महाप्रभु व हे भारत सरकार व अन्य उच्च राज्यकर्मचारियो! इस हमारे उपरोक्त कष्ट के निवारणार्थ हमारे निम्नलिखित आवेदनों पर कि जो केवल प्रजावर्ग के हित राज्य के चिरस्थायी व दृढ़ता

के निमित्त लिखे गये हैं ध्यान देकर भविष्य के लिये समयोचित प्रबन्ध कीजिये और संसार में यश लाभ कर परलोक में ईश्वर के कृपापात्र बनने का प्रयत्न कीजिये ।

(१) इस में सन्देह नहीं कि हमारी दयालु व प्रजावत्सल सरकार ने प्रजा के हितार्थ नहरें, रेल, तार, औषधालय, स्कूल, कालिज आदि बहुत से लाभदायक काम स्थान२ में जारी कर रक्खे हैं । इतने पर भी यह आप की मन्दभाग्य भारतनिवासिनी प्रजा का बड़ा भारी भाग भूख और बीमारी के कष्ट से जान दे रहा है । अतएव अधिक नहीं तो केवल बीस वर्ष ही भारत से गोबध को परीक्षार्थ बंद कर के देखा जावे कि इस से भारत की दशा सुधरती है या नहीं। दृढ़ता पूर्वक निवेदन किया जाता है कि यदि इस पुस्तक के दूसरे अध्याय के कथनानुसार गोबध को इस देश से बंद कर दिया जायगा तो गोवंश की वृद्धि होने से बैल सस्ते हो खेत अच्छी तरह से जोते जाने व खाद के प्रयोग से अन्न अधिकता के साथ पैदा होगा कि जिस से सब मनुष्यों को भरपेट अन्न मिलने लगेगा । न विदेश को अन्न का जाना भारतनिवासियों को असह्य होगा । घी दूध के अधिकता के साथ मिलने से सब मनुष्य बलवान हो कर बीमारियों के क़ाबू के न रहेंगे और बाल्यावस्था एवं युवावस्था की मृत्यु संख्या कम हो जायगी । सरकारी कोष भी पैदावार व व्यौपार की अधिकता से भरपूर रहेगा ।

इस में केवल यही प्रश्न उपस्थित होगा कि गोरा फ़ौज को भी इस आज्ञा के अनुसार गोमांस से वंचित रहना पड़ेगा । सो प्रथम तो गोराफ़ौज इस देश की रक्षा के निमित्त है । शत्रुओं से रक्षा करने के अतिरिक्त, जब दूसरी ओर उन का

भारी शत्रु अन्न की मंहगी और प्लेग आदि उन की रक्षित प्रजा को मार रहे हैं तो क्या इस शत्रु से गोरा फ़ौज उन को नहीं बचा सकती है ? अवश्य बचा सकती है क्योंकि यदि ये गोमांस के बदले शूकर, भेड़ आदि के मांस का व्यवहार करना आरम्भ कर देवेंगे तो राजपूत गज़ट १६ सितम्बर सन् १९०९ के लेखानुसार अच्छी नसल की एक लाख ४९ हज़ार गायें और ३१ हज़ार बैल हर साल बध होने से बच कर देश के अकाल और प्लेग आदि शत्रुओं को अवश्य ही भगा देवेंगे। गोरा फ़ौज को ऐसी प्रजा की रक्षा के निमित्त कि जिस के पैदा किये हुए धन से वेतन पा वह अपनी प्राण रक्षा करती है थोड़ा कष्ट सह लेना कुछ कठिन न होगा। दूसरे इस उष्ण-प्रधान देश में गोमांस का छोड़ना स्वयं उन को भी बहुत से रोगों से बचावेगा क्योंकि आंतों की सूजन और ऐन्टरिक-फ़ीवर जो केवल गोरों को ही सताता है वह केवल इस गर्म देश में गोमांस के नित्य प्रति के सेवन से पैदा होता है। देखिये डाक्टर टोम इंगलैंडी और डाक्टर टाल न्यूयार्क निवासी व डाक्टर कोरिंग सुपरिन्टेन्डेन्ट स्लाटर हौस बिलगेरिया आदि इस के मांस को अत्यन्त हानिकारक बतलाते हैं। डाक्टर मौसयू एडिडयूनानी जो २२ साल तक बरलिन में इन पशुओं के बध स्थानों के अफसर रहे हैं वे लिखते हैं मैं ने साठ हज़ार गाय बैल पूरी परीक्षा के पश्चात् मारने के अर्थ भेजे परन्तु मारने के पश्चात् फिर उन की परीक्षा की गई तो पांच फी सदी बीमारी से बचे हुए मिले। उन ९५ की बीमारी का हाल मारने से पहले किसी तरह से भी मालूम नहीं हो सका था। ख़ैर इस बहस से कुछ प्रयोजन नहीं। यदि गोमांस

गोरा फौज को लाभदायक भी हो तो देश के कल्याण पर ध्यान दे इस थोड़े से कष्ट को सह लेना भी उचित है।

(२) चरागाहों की विशेष रूप से रक्षा की जावे। बन व बंजर जिस को काश्तकार लोग तोड़ कर खेत बना लेते हैं उन को तोड़ने से रोका जावे और जहां जहां ऐसा करने से चरागाहें कम हो गई हैं उन को आवश्यकतानुसार पूरा कर दिया जावे क्योंकि इन चरागाहों की कमी से ही इन लाभकारी पशुओं का पालना कठिन हो गया है।

(३) अकाल के समय में जब कि चारे की न्यूनता होती है उस समय सरकारी बन व जंगलात को कि जो सरकारी अधिकार में हैं उन को काश्तकारोंके पशु चराने के अर्थ माफ़ फ़रमा दिया जावे, कि जिस से ऐसे कुसमय में काश्तकार लोग अपने पशुओं को चरा मरने से बचा सकें। ऐसे ही रेलवे कर्म्मचारियों से भी अकाल के समय चारे के महसूल में कमी करने को सिफारिश फ़रमाई जावे ताकि जहां चारे की अधिकता होवे वहां से चारा लाकर ज़िमीन्दार लोग अपने पशुओं के प्राण बचा सकें।

(४) जो कि आज कल पशु रोगों की अधिकता के कारण बहुत मरते हैं, जिस कारण गांव के गांव पशुओं से खाली हो गये हैं उन रोगों के इलाज को सरकार की तरफ से कम से कम फी तहसील दो तीन वेटनरी डाकृर नियत किये जावें और आज्ञा दी जावे कि गांव २ घूम कर वहां के ज़मीन्दारों से अपने दौरे के दस्तखत करा लिया करें और नकशा कारगुज़ारी इलाज का जिलाधीश के पास भेजा करें। आज कल जो एक २ वेटनरी डाकृर जिले में रहता है उस से प्रजा को कुछ भी लाभ नहीं है। उस का दौरा प्रायः क़सबों में या

दोस्तों से मिलने को होता है। काश्तकारों को यह मालूम तक नहीं कि पशुओं के रोग निवारणार्थ भी सरकार ने डाक्टर नियत कर रक्खे हैं या नहीं।

(५) जैसे कि सरकार ने बाबूगढ़ जिला मेरठ में एक हौर्स ब्रीडिंग फार्म घोड़ों की नसल बढ़ाने के लिये फौजी आवश्यकता के अर्थ नियत कर रक्खा है ऐसे ही बैलों की उमदह नसल बढ़ाने को कस्बों और देहातों में सरकारी आंकल यानी सांड रखे जावें और जब तक यह काम जारी न किया जावे तब तक देहाती सांडों के लिये आज्ञा की जावे कि उन के साथ निर्दयता का व्यवहार न किया जावे। क्योंकि बहुधा निर्बुद्धि काश्तकार फसल के दिनों में बांध कर चारा पानी की सुध न लें उन को मृतक तुल्य कर देते हैं या कांजीहौस में दाखिल करा देते हैं कि जो पन्द्रह बीस दिन में नीलाम हो बहुधा कसाइयों के पंजे में पड़ जाता है कि जिस से हिन्दू धर्म के अपमान के अतिरिक्त काश्तकारों को गायों से बच्चा लेने में बड़ी भारी कठिनता पड़ जाती है।

(६) सेठ साहूकारों और जमीन्दारों का ध्यान दूध घी के कारखानों अर्थात् डेरीफार्म स्थापित करने की ओर आकर्षित फरमाया जावे और उन को भूमि आदि की प्राप्ति में जैसे कि रेलवे कम्पनियों की सहायता की जाती है सुभीता कराया जावे। फिर जब गवर्नमेंण्ट की सहायता से उन को इस काम में लाभ दिखलाई पड़ेगा तो वे स्वयम् बिना सहायता सरकार के इस काम को करने लगेंगे क्योंकि इस में हानि की तो आशंका ही नहीं है। यदि सोचा जावे तो संसार की सब मशीनों से यह मशीन लाभदायक है क्योंकि खांड की मशीन में जब तक ऊख का गन्ना या गुड़ न डाला जावे तब

तक खांड नहीं बन सकती। ऐसे ही कपड़े की कल में रुई न डाली आवेगी तो कपड़ा कदापि तय्यार न होगा परन्तु इस ईश्वरीय मशीन में कि जिस का नाम गाय है केवल घास फूस और चारा आदि डालने से अमूल्य रत्न घी दूध आदि प्राप्त होते हैं और अपने पुराने होने पर अपने जैसी कई मशीनें छोड़ जाती है इस से सरकार की ओर से इस काम में सहायता मिलने और साहस दिलाने से गोवंश की बहुत कुछ वृद्धि हो सकती है।

(७) जिस प्रकार से सरकार कूआं बनवाने अथवा बैल खरीदने या बीज मोल लेने को लाखों रुपया काश्तकारों को तकावी में देती है यदि इसी प्रकार कुछ धन खजाने से अलग कर उस से उन स्थानों के गाय बैल आदि मोल ले लिये जावें (कि जहां वर्षा न होने से अकाल पड़ने व चारे के अभाव से गांव वाले अपने प्राणप्यारे पचास सौ रुपये के पशु को चार पांच रुपये में बधिकों के हाथ बेच देते हैं) और फिर उन को समीप की नदियों के बेले अथवा पहाड़ी तराइयों में कि जहां अकाल के समय में भी जंगल तृण से हरा भरा रहता है पहुँचा कर उनकी चराई का उत्तम प्रबंध रक्खा जावे तो दृढ़ आशा है कि अकाल दूर होने पर फिर ऐसे इन सरकारी पिंजरापोलों के पशुओं को काश्तकारों के हाथ बेच देने से जो धन प्राप्त होगा वह अवश्य कुल खर्च के दुगने तिगने से भी कहीं अधिक होगा। ऐसा करते २ जब सरकार उचित समझे अपने उस तकावी के धन को ब्याज सहित वापिस लेलेवे और बचे हुए धन का पशुसहायक फण्ड नाम रख कर अकालग्रसित ज़िलों में इसी प्रकार व्यवहार करती रहे और उचित समझे तो जैसे अकाल निवारणार्थ राजा

महाराजाओं और सेठ साहूकारों से मदद ली जाती है सहायता ली जावे। इस कार्रवाई से बहुत कुछ लाभ होगा। प्रथम तो अगणित पशुओं के प्राण-रक्षा से सरकार धर्म्मलाभ कर उस जगत्पिता की कृपापात्र बनेगी। दूसरे अकाल के कारण जो देश से पशु नष्ट होते जाते थे वे नष्ट न हो कर वृद्धि को प्राप्त होंगे। तीसरे इन की वृद्धि से घी दूध भी सस्ता हो मनुष्यों के आरोग्य रहने का कारण होगा और बैलों की वृद्धि से बैल सस्ते हो अन्न की अधिक उपज का कारण होंगे। सरकार को तक़ावी देने का कष्ट न उठाना पड़ा करेगा। आशा है कि सरकार दो एक साल इस मेरे निवेदन के अनुसार प्रबन्ध कर इस के लाभालाभ को मालूम कर सकती है।

(८) गोबध के बंद करने में सम्पूर्ण लाभों को देखते हुये भी कदाचित् सरकार इस पसोपेश में पड़े कि यह मुसलमानों का मत सम्बन्धी मामला है सरकार को इस में हस्ताक्षेप न करना चाहिये, सो इस पुस्तक के मुसलमानों से निवेदन में स्पष्ट सिद्ध कर दिया है कि गाय की कुरबानी मुसलमानी धर्म्म में फर्ज नहीं है। गोबध न करने वाला मुसलमानी धर्म से ख़ारिज नहीं गिना जाता है। विद्वान् मुसलमान लोग गोबध को बुरा जानते हैं वे इस घृणित प्रथा से देश का सर्वनाश जान इस की रक्षा की चेष्टा में लगे हैं। जो लाभ इस की रक्षा से हिन्दुओं को होंगे वेही लाभ मुसलमान और ईसाइयों को भी होंगे। खाने के लिये दूध और घी की और खेती के लिये बैलों की सब को बराबर आवश्यकता है। इन्हीं लाभों को जान महाराजाधिराज अकबर ने गोबध बंद कर दिया था। गोहत्यारे को कठिन दण्ड दिया जाता था। इस आज्ञापत्र पर कि जो अभी मौजूद है शाही क़ाज़ी व बड़े बड़े

मौलवियों के हस्ताक्षर हैं। ऐसे ही २२ सितम्बर सन् १८५२ ई० को एक रूबकार दरबार बहादुरशाह से श्रीमान् सरफिलस कटकलफ् साहब बेरोंट बहादुर की सेवा में गोबध बंद करने के सम्बन्ध में जारी हुआ। हाल में जब हिज़ मैजेस्टी अमीर हबीब उल्ला खां साहब भारत-भ्रमण को पधारे थे तब श्रीमान् ने अपनी सरहिंद व देहली की स्पीच में मुसलमानों को सम्बोधित कर कहा था कि गोबध देश की असंख्य हानियों का कारण एवम् हिन्दुओं की असह्य वेदना का हेतु और इस्लाम से कुछ सम्बन्ध नहीं रखता है कदापि न करो। अतएव जिस दशा में गाय के स्थान में दुम्बे आदि की कुर्बानी श्रेष्ठ है तो देशहितार्थ गोबध को शीघ्र बंद कीजिये। मुसलमानों का यह कहना कि ग़रीब लोग सस्तेपन के कारण इसे खाते हैं इस से गोबध बंद न होना चाहिये व्यर्थ है। यदि अन्य पशु के मांस खाने की शक्ति नहीं है तो हिन्दुओं की भांति अन्न क्यों नहीं खाते? वृथा देश का सर्वनाश क्यों करते हैं?

हम नहीं जानते कि जब छोटे २ देशी राजा महाराजा नव्वाब आदि बेधड़क गोबध के बंद करने की आज्ञा दे देते हैं और मुसलमान प्रजा खुशी से उस आज्ञा को शिरोधार्य्य कर उस का प्रतिवाद तक नहीं करती, जैसे कि समस्त हिन्दू राज्यों में गोबध बंद है और नव्वाब जूनागढ़, नव्वाब राधनपुर, नव्वाब पटौधी ने भी अपने २ राज्यों में गोबध न होने की कठिन आज्ञा दे रक्खी है, तो फिर बृटिश गवर्नमैंट देश के लाभार्थ क्यों गोबध के बंद करने की आज्ञा देते हिचकती है। आजतक न तो किसी हिन्दू राज्यों न मुसलमानी रियासतों में ईद के दिन झगड़े की वार्त्ता सुनी गई किन्तु

प्रतापशाली बृटिश भारत में कोई वर्ष इस उपद्रव से ख़ाली नहीं जाता, अतः इस के कारण पर ध्यान दे, इस झगड़े और भारत के नाश के हेतु इस गोबध को जितना शीघ्र सम्भव हो बंद कर अपने कर्त्तव्य को पूर्ण कीजिये।

पंचम अध्याय।

इस अध्याय में उन आक्षेपों का उत्तर दिया गया है कि जो बहुधा विपक्षीगण गोरक्षा विषय पर किया करते हैं या करने का इरादा रखते हैं यदि किसी महाशय को कोई और शंका हो या इन उत्तरों से उन का मन तृप्त न हो तो कृपाकर अपनी शंका को इस गोसेवक पर सविस्तर प्रगट करें तो शीघ्र उस शंका का समाधान किया जायगा। या यदि कोई गोप्रेमी इन उत्तरों को ठीक अथवा काफ़ी न समझें तो अपनी ओर से उचित उत्तर लिख भेजें ताकि अगली बार मुद्रित कराती दफै उस को बढ़ा या बदल दिया जावे। यह भी प्रगट होवे कि तीन चार शंकाओं का समाधान वर्णित विषय के साथ २ ही इस पुस्तक के दूसरे अध्याय में कर दिया गया है।

१ प्रथम आक्षेप।

आप ने गौओं से मनुष्यों के हित के लिये जितने लाभ दर्शाये हैं वे केवल दूध देने वाली गायों अथवा जवान बैलों से ही प्राप्त हो सकते हैं। बिना दूध की गाय अथवा बूढ़े पशु से उलटा चारे भूसे आदि की हानि है सो यदि ऐसे बेकार गाय बैलों को बूचड़ों के हाथ बेच दिया जाये तो आप के बतलाये हुये लाभों में कुछ भी हर्ज न होगा। उलटा पशु के स्वामी को आठ दस रुपया मिल जावेगा, और जो व्यर्थ चारा भूसा खाती या सेवा कराती उस की बचत का लाभ अलग

रहा कि जो अपने यहां खूंटे पर मरने से किसी प्रकार भी नहीं हो सकता था।

(उत्तर) हा शोक महानुशोक कि जिन गौओं ने सैकड़ों मन दूध व घी दे आप के कुटुम्ब को हृष्ट पुष्ट अथवा बलवान् किया या जिस के दूध व घी के प्रताप से बने हुये नाना प्रकार के पकवान अथवा स्वादिष्ट मिठाइयों से अपनी अथवा अपने सम्बन्धियों की क्षुधातुर जठराग्नि को शान्त किया, या जिस गाय ने दस बारह बच्चे दे आप की दरिद्रता को दूर किया, या बलवान बैल पैदा कर आप के खेतों को जोत जो आप के झोंपड़ों को हज़ारों मन अन्न से भर आप को लक्ष्मीपात्र बना दिया, या जिन बैलों ने हज़ारों मन अन्न एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँचा इधर तो आप को इस व्यौपार की बदौलत सैकड़ों रुपये का लाभ कराया दूसरे वहां के क्षुधापीड़ित मनुष्यों के प्राण बचाये, या जिन को रथ व मझोली में जोत सवार हो एक स्थान से दूसरे स्थान को बिना परिश्रम पहुँच आप सेठ साहूकार या नव्वाबज़ादे कहलाये उन के ऐसे २ अनगिनत अहसानों का यही बदला है कि जो बूढ़ा या बेकार हो जाने पर थोड़ी सी जिंदगी को उन को भूसा और चारे का देना आप को नगवार गुज़रने लगा, और एक वक्त पानी पिलाने को भी सेवा ख्याल करने लगे।

यदि इन बड़े २ अहसानों का यही बदला है तो बहतर है कि अपने २ माता पिता अथवा पितामहादिकों को वृद्धावस्था में कि जिस समय वे तुम्हारा कोई काम नहीं कर सकते हैं बल्कि व्यर्थ सेर आधसेर अन्न बरबाद करते और वृथा चारपाई तोड़ते हैं तो यदि आप हिन्दू धर्मावलम्बी हैं तो उन को गंगाजी में ढकेल दीजिये या दुर्गाष्टमी के दिन उन को

कल यदि आप ध्यान कर के देखेंगे तो हलों में फी सदी दो हल और गाड़ियों में कठिनता से फी सदी दो गाड़ी भैंसों की पावेंगे।

फिर जब बैलों के अभाव में आप समस्त काम हल और गाड़ी का भैंसों से लेवेंगे तो बतलाइये कि बैलों की जगह पूरी करने को आप भैंसे कहां से लावेंगे ? क्या आप की रथ व मंझोली में भैंसे ही काम देवेंगे और इस अपरिमित भारत भूमि को भैंसे ही जोत बो देवेंगे ? सच तो यह है कि कोई भी विद्वान् आप के इस कथन की पुष्टि नहीं करेगा।

भैंसे गर्मी में शीघ्र हांपने लग जाते हैं और बरसात में पानी देख कर बैठ जाते हैं किन्तु बैलों में ये दोष कदापि नहीं होते बरन बैल हर मौसम में भली भांति काम दे सकता है। फिर अच्छे बलवान भैंसों का मोल आज कल चालीस रुपये से अधिक नहीं है परन्तु मामूली काम देने वाले बैल सौ डेढ़ सौ से कम में नहीं मिल सकेंगे। उपरोक्त बातों से सिद्ध हुआ कि गायों के अभाव में भैंस किसी दशा में भी उस नुकसान को पूरा नहीं कर सकती है जो गायों के न होने से हम को होंगे।

तृतीय आक्षेप।

यदि भैंसे खेती और बोझा ढोने का काम पूरी तरह से नहीं दे सकते हैं तो ऊंट इन कामों को भली भांति कर सकेगा जैसे कि अरब देश में करता है।

(उत्तर) जो कि अरब रेगिस्तान देश है इसलिये वहां ऊंट से काम लिया जा सकता है यहां भी बीकानेर आदि में जहां रेतली भूमि है ऊंट से खेती की जाती है परन्तु जहां ऐसी भूमि नहीं वहां यह कदापि काम नहीं दे सकता। अगर दे सकता तो

बीकानेर के अतिरिक्त दूसरे स्थानों में भी इस से खेती का काम लिया जाता। अतः आप के आक्षेप का तो इतना ही उत्तर काफ़ी है लेकिन लेफ्टीनेंट राफ़ आकसन साहब ने जो अपनी किताब रिसाला जराअत में ऊंटों में निम्न लिखित सात गुण दिखलाते हुए उस को कृषिकर्म्म के लिये अत्यन्त लाभदायक बतलाया है उस का उत्तर देना परमावश्यक है। उस उत्तर से आप के आक्षेप की भी इतिश्री हो कर आपके चित्त की शान्ति और भ्रम का निवारण हो जायगा। वे ऊंट में सात गुण इस प्रकार दिखलाते हैं:—

(१) ऊंट उचित मूल्य में मिल सकता है।

(२) दो बैलों के स्थान में एक ऊंट भली भांति हल चला सकता है।

(३) छः सात मन बोझ अकेला ले जा सकता है।

(४) ऊंटनी से उम्दा और बलकारक दूध प्राप्त हो सकता है।

(५) ऊंट का बच्चा थोड़े खर्च और आसानी से पाला जा कर अच्छे दामों में बिक सकता है।

(६) ऊंट के खाने और चराने में बहुत ही कम खर्च होता है।

(७) ऊंट की मींगन खेत के वास्ते उमदा खाद का काम देती है।

किन्तु इन सातों लाभों को हम अपने देश के लिये लाभदायक नहीं पा सकते हैं जिस का खण्डन इस भांति है—

(१) खेती के काम के लायक ऊंट अस्सी नव्वे रुपये से कम में कदापि नहीं मिल सकता है कि जो उचित मूल्य नहीं कहलाया जा सकता है, फिर एक ऊंट के मरने से अस्सी नव्वे रुपये की हानि हो जायगी मानो खेती का पशु था ही नहीं।

भगवती के सामने बलिदान कर उन की आत्मा को स्वर्ग में पहुँचा पितृऋण से मुक्त हुजिये। यदि आप मुसलमान हैं तो हज़रत इबराहीम की सुन्नत को अदा करते हुये बक़रीद के रोज़ उन की कुरबानी कर उन की रूह को बहिश्त में पहुँचाइये, ताकि शेष आयु के भोजनादि व्यर्थ व्ययों से बचो।

दूसरे जो कि हकीमों और डाक्टरों की राय में गाय का मांस खाना बहुत सी बीमारियों के पैदा होने का कारण है कि जिन के वाक्यों का खुलासा थोड़ा सा हम इस पुस्तक के दूसरे अध्याय और गवर्नमेंट की अपील में लिख चुके हैं तो फिर बूढ़ी और रोगी गाय का मांस तो और भी बहुत से संक्रामक रोगों के पैदा होने का हेतु होगा।

तीसरे गायों के वध होने का दस्तूर कि जिसको आप ने भी देश के सर्वनाश होने का कारण मान लिया है दूर न हो सकेगा। जब मारना ही हुआ तो फिर बूढ़े और जवान का कौन सार्टीफिकेट लेने लगा है। सो दया और देशहित पर ध्यान देते हुए आप का यह कथन किसी प्रकार भी मानने योग्य नहीं है।

द्वितीय आक्षेप।

घी दूध तो भैंस अधिक देती हैं। अतएव यदि गायें नहीं भी रहेंगी तो भैंसें घी दूध की आवश्यकता को पूरी कर सकती हैं और उन के बच्चे अर्थात् भैंसे खेती व गाड़ी का काम भली प्रकार कर लेवेंगे और उन का गोबर खेतों में खाद का काम देवेगा।

(उत्तर) यह आक्षेप आप का व्यर्थ है क्योंकि गोरक्षा से हमारा तात्पर्य केवल गाय की रक्षा से ही नहीं है बल्कि

भैंस भैंसा बैल आदि सब से है। यदि आप बकरी की भी रक्षा कर सकें तो और भी उत्तम बात है। गाय को इन सब पशुओं में उत्तमता और मुख्यता केवल इसी कारण से दी गई है कि जितने लाभ गायों से मनुष्यों को मिलते हैं उतने दूसरे पशु से नहीं मिल सकते क्योंकि गायों की नसल भैंसों से बहुत अधिक है। दूसरे जितने दिनों में भैंस तीन बच्चे देती है उतने ही समय में गाय पांच बच्चे देवेगी। फिर साफ़ ज़ाहिर है कि घी दूध का भाव जब कि पहले बहुत अधिक था और अब घटते २ सेर तीन पाव तक पहुँच गया तो ऐसी दशा में भैंसों ने घी दूध के भाव को पहले जितना क्यों नहीं क़ायम रक्खा? या बैलों के दाम पहले से पँचगुने क्यों हो गये? काश्तकारों ने बैलों की जगह आप की राय के अनुसार भैंसों से खेती और रथ गाड़ी का काम क्यों नहीं लिया? इस से यही सिद्ध हुआ कि कमी नसल के कारण भैंस किसी प्रकार भी गायों की बराबरी नहीं कर सकती न भैंसा सुस्त होने के कारण फुर्तीली ज़ात बैल की बराबरी कर सकता है? फिर यह कहना भी कि गायें कम दूध देती हैं आप का ठीक नहीं है, क्योंकि यदि आप हरयाना, कोसी और दक्षिण की गायों को देखेंगे तो वहां दस पन्द्रह बीस सेर तक की दूध देने वाली गायें पाओगे। फिर भैंस का दूध निहायत बादी और गाय का बीमार आदमी तक को लाभदायक है। कोई हकीम भैंस का दूध बीमार आदमी को पिलाना नहीं बतलाते। भैंस का दूध सुस्ती और गाय का फुरती पैदा करता है इसी से अंगरेज लोग भैंस का दूध अपने बच्चों को कभी नहीं पिलाते। अब बाक़ी रह गया यह कि बैल न रहेंगे तो भैंसे खेती और गाड़ी का काम चला सकेंगे और भी निर्मूल है क्योंकि आज

(उत्तर) लीजिये हम आप के आक्षेप के उत्तर में घोड़ों और बैलों के लाभों की तुलना करते हैं और स्पष्ट सिद्ध किये देते हैं कि घोड़े किसी प्रकार भी इस देश में बैलों के स्थान में काम नहीं दे सकते। इस में संदेह नहीं कि घोड़ों में ये चार गुण हैं किन्तु भारतभूमि के वास्ते ये चारों गुण लाभ-दायक नहीं हैं। जब कि घोड़े भूड़ ज़मीन तक में ख़ाली गाड़ी तक नहीं खेंच सकते तो मटियार भूमि में कि जिस में वर्षा अथवा पलेवे या परेवट के पश्चात् हल चलाया जावेगा तो घोड़े वहां हिल भी नहीं सकते हैं जोकि अधिकांश पृथ्वी इस देश में इसी किसम की है तो पहले तीनों गुण अर्थात् चलने फिरने मुड़ने की चंचलता और सरलता से बोझा खेंचना या दिन में बहुत देर तक काम देना व्यर्थ हुये, रहा चौथा गुण कि घोड़ों के सुम को कंकरीली ज़मीन में कम नुक़सान पहुँचना सो इस प्रकार की पृथ्वी इस देश में बहुत ही कम है। अतएव ये उपरोक्त चारों गुण घोड़ों के व्यर्थ हुए।

इस के विरुद्ध बैलों में कई ऐसे गुण हैं कि जिन के कारण उन्हें घोड़ों से उत्तम कहा जा सकता है। प्रथम जितना परिश्रम करने वाला बैल पचास रुपये में आवेगा उतना काम देने वाला घोड़ा सौ रुपये में भी न आवेगा। विशेष कर उस दशा में जब कि सवारी के अतिरिक्त उन से खेती का काम ऐसे देश में लिया जायगा कि जहां करोड़ों बीघे उपजाऊ पृथ्वी है तो उस का मूल्य केवल इसी देश में न बढ़ जायगा वरन अन्य देशों में भी घोड़ों का मूल्य बढ़ जावेगा। दूसरे जब खेती का काम घोड़ों से लिया जायगा तो काश्तकारों को गायों का पालना महाकठिन हो जावेगा, और जब गायों के पालने में अरुचि हुई तो घृत दुग्ध जैसे अमूल्य रत्न इस

पवित्र भारतभूमि से बिलकुल उठ जावेंगे कि जिस से यहां के देशवासियों को महान् दुःख उपस्थित होगा। तीसरे घोड़ा बरवा अर्थात् रेतली व कछार और नदी नालों के पार गाड़ी को बिलकुल नहीं ले जा सकता कि जिस से एक स्थान से दूसरे स्थान में माल का पहुँचाना महाकठिन हो जावेगा कि जहां सरलता के साथ बैल इस काम को कर सकते हैं। चौथे घोड़े और घोड़ियों में जो सीधा खड़ा हो जाने, अथवा पुश्तंग फेंकने, कांधी लेने व अड़ जाने और काटने आदि के अवगुण होते हैं वे बैलों में कदापि नहीं होते। पांचवे घोड़ा जल्द पसीना ले आता है कि जो उस के बल व क़ीमत घटने का कारण है, किन्तु बैल दिन भर परिश्रम करने पर भी पसीना नहीं देता। छटे घोड़ियों से बच्चा लेने में उस की क़ीमत घटती जाती है और बच्चे के पालने में भी अधिक खर्च पड़ता है। इस के विरुद्ध गायों से बच्चा लेने में और उस के पालने में सुगमता होती है और जैसा ही बैल परिश्रमी होगा वैसा ही शीघ्र मोटा हो सकता है, सातवें मरने पर घोड़ों की लाश किसी काम में नहीं आती, किन्तु बैलों के मरने पर उन का चमड़ा जूता बनाने और कूओं से पानी खैंचने व अन्य बहुत से कामों में आता है। आठवें बैलों को परिश्रम करने के दिनों में भी पेट भर घास व भूसा देना काफ़ी है किन्तु घोड़ों को काम न करने के दिनों में भी यदि चारे के साथ दाना व मसाला न दिया जावेगा तो वे निर्बल हो जावेंगे। अतः सिद्ध हुआ कि घोड़ा किसी भांति भी बैलों से अच्छा नहीं है।

देखिये इंगलिस्तान की शाही काश्त विंडसर में घोड़ों की जगह, अब बैलों से काम लिया जाता है कि जो उन के और भी उत्तम होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। जब इंगलैंड जैसी

(२) यह तो ठीक है कि हल में एक ऊंट से काम चल सकता है परन्तु रेतली भूमि के सिवाय और धरती में बिलकुल काम नहीं दे सकता, क्योंकि हल मेह बरसने अथवा पलेवा करने के बाद चलाया जाता है जिस में वह नहीं चल सकता बल्कि पांव फिसल जाने से इस के गिर जाने का भय है, और गिर जाने पर इस का फिर उठना कठिन है, फिर दो बैलों की जगह एक ऊंट का काम देना भी कोई तारीफ़ की बात नहीं है, क्योंकि एक ही समय में यदि दो काम करने हों तो दो बैल अलग २ जा कर उस माल को पहुँचा सकते हैं परन्तु ऊंट एक ही जगह का काम देवेगा।

(३) आप का यह कहना कि एक ऊंट छः सात मन बोझा अकेला लेजा सकता है सत्य है परन्तु एक ऊंट के मोल में दो बैल आ सकते हैं वे दोनों मिल कर एक ऊंट के बराबर बोझा बखूबी ले जावेंगे, फिर बैल हरएक प्रकार की धरती पर हरएक मौसम में बिना किसी कठिनता के अच्छी तरह से बोझा ले जा सकते हैं, किन्तु ऊंट सिवाय रेतली धरती के तराई या झीलों अथवा खुश्क तालाबों वा कल्लार भूमि में कभी काम नहीं दे सकता बरन बरसात के मौसम में तो सड़कों पर भी चलना कठिन है।

(४) चौथे गुण के सम्बन्ध में कि ऊंटनी का दूध उम्दा और लाभदायक है निवेदन है कि प्रथम तो साधारणतः उस का काम में लाना ही कठिन है दूसरे उस से घी का निकालना और भी कठिन है। गाय का घी एक व्यापारिक वस्तु है जो हरएक स्थान के बाज़ारों में मिलता है परन्तु ऊंटनी का घी कहीं भी बाज़ारों में नहीं दिखलाई देता। जब घी का सारा ज़ोर ऊंटनी के घी पर पड़ेगा तो बतलाइये कि वे कौन

से बाज़ार व मण्डी हैं कि जहां से ऊंटनियों का घी आकर भारतवासियों की आवश्यकता को पूरा करेगा? इस से ऊंटनी घी दूध में किसी प्रकार भी गाय की समता नहीं कर सकती है।

(५) पांचवें गुण के सम्बन्ध में स्पष्ट विदित है कि चाहे ऊंटनी के बच्चे के पालने में सुगमता होवे परन्तु जितने दिनों में ऊंटनी एक बार ब्यावेगी उतने समय में गाय दो बच्चे देवेगी। फिर ऊंटनी से बच्चा लेने में बड़ी भारी कठिनता है इस से यह गुण भी इस का व्यर्थ गया। अब रहा छटा सातवां गुण कि ऊंट की खुराक में कम खर्च होता है निवेदन है कि जिस पशु की खुराक कम होगी उस से खाद भी कि जो खेती का मुख्य अंग है कम मिलेगा, और ऐसी खाद कि जिस में फासफोर्स और नौसादर कम होगा अन्न के बलहीन व कम उत्पन्न होने का कारण होगी। इन सब बातों से विदित हो गया कि भरतखण्ड के लिये गाय बैल ही लाभदायक हैं ऊंट किसी बात में भी बैल की बराबरी नहीं कर सकते हैं।

चतुर्थ आक्षेप।

यदि भैंसा व ऊंट खेती का काम नहीं दे सकते हैं तो घोड़े खेती के काम को पूरा कर देवेंगे, जैसा कि इंगलिस्तान में खेती का काम घोड़ों से ले लिया जाता है फिर मिस्टर जेम्स स्मिथ साहब घोड़ों में निम्नलिखित चार गुण बतलाते हैं कि जो बैलों में नहीं होते।

(१) अव्वल सरलता से बोझे का खेंचना, (२) चरने फिरने और मुड़ने में फुरतीलापन और चंचलता (३) दिन में बहुत देर तक काम करना, (४) सुम की दृढ़ता कि जिस से कंकरीली ज़मीनों से बहुत कम नुक़सान होता है। फिर घोड़ों की लीद की खाद भी पैदावार जिन्स को लाभदायक होगी।

कंकरीली भूमि में घोड़ों से बैल अच्छे समझे गये तो भारतखण्ड में बैलों पर घोड़े कैसे जय पा सकते हैं ?

इस के अतिरिक्त घोड़ों की लीद को यदि खाद के काम में लाया जायगा तो उस से खेतों को किसी क़दर नुक़सान पहुँचेगा क्योंकि लीद की खाद में रासायनिक परिमाणु ऐसे प्रमाण से नहीं होते जैसे कि गोबर की खाद में होते हैं कि जो खेतों को अत्यन्त लाभदायक हैं ?

इस की पुष्टि के अर्थ हम डाक्टर बुबज़ साहब जरमन निवासी का अनुभव किया हुआ नक़शा आप के विचारार्थ भेट करते हैं इस से १०० सेर लीद व गोबर के रासायनिक परिमाणुओं का प्रमाण मालूम हो जायगा।

नाम खाद	रासायनिक परिमाणु	खार	कैलिश नमक	कैलिश मैग्नी- खार	चूना	लोहे का जंग	गंधक का तेजाब	रेत का तेजाब	फास्फोरस	मीज़ान कुल
लीद		सेर ऽ९।-	छः ॥=	सेर ऽ२	सेर ऽ५≡	सेर ऽ२	सेर ऽ।२॥।=	मन १॥ऽ	सेर ऽ=	सेर १००
गोबर		सेर ।७=	ऽ६।-	ऽ४॥	ऽ७।-	ऽ३।-	ऽ३।	मन १ऽ१-	सेर ७-	सेर १००

इस नक़शे के देखने से विदित है कि लीद की अपेक्षा गोबर में सिवाय गंधक के तेज़ाब व रेत के सब रासायनिक पदार्थ अधिक हैं खेतों को इन पदार्थों से जो लाभ होता है उस का ब्यौरा इस प्रकार है। (१) प्रथम खाद कि जिस को

अंगरेजी में पोटाश कहते हैं यह तेज़ाब की तेज़ी को मारता है। यदि यह परिमाणु पौदों की खुराक में न हो तो पौदे तेज़ाब की तेज़ी से भस्म हो जावें और न बढ़ सकें और न उन में फल आवें।

(२) नमक का जौहर कि जिस को अंगरेजी में सोडा कहते हैं यह पौदों को रस पहुँचाने में सहायक होता है और यह पौदों के आत्मिक बल को बढ़ाता है कि जिस पर पौदों का बढ़ना और पुष्प व फल की अधिकता निर्भर है और यह तेज़ाब की तेज़ी को भी कम करता है।

(३) सेलखड़ी का जौहर कि जिस को अंगरेजी में मेगनेशिया कहते हैं यह परिमाणु तेज़ाब की तेजी को जो पौदों की खुराक में आता रहता है कम करता रहता है, यदि खाद में यह पदार्थ कम होगा तो पौदों में तेज़ाब की अधिकता होने से जो मनुष्य अथवा पशु उस के फल या उस पौदे को खावेंगे उन के पेट में भी तेज़ाब अधिक होगा कि जो उदर-पीड़ा व आंव की वृद्धि व दूसरे रोगों के हो जाने का कारण हो जायगा।

(४) चूना—इस से पौदों को तीन लाभ हैं प्रथम इस से पौदों की जड़ और शाखाएँ दृढ़ होती हैं। दूसरे पौदों की खुराक में इस का होना अन्न के बलकारक और अधिकता का हेतु है। तीसरे चूने से पौदों की पत्तियां नीली होती हैं और दूसरे पदार्थों से जो खाद में होने से पौदों की खुराक में आते हैं पीला रंग होता है इस कारण नीला और पीला रंग मिलने से पौदों की पत्तियों का हरा रंग हो जाता है यदि चूना पौदों का खाद्य न हो तो उन की पत्तियां पीली हो जावेंगी कि जिस से वह पौदा फलों से वंचित हो जावेगा।

(५) लोहे का जंग—यह भूमि का अंश होने के कारण पौदों का मुख्य खाद्य है कि जिस से पौदे मज़बूत होते हैं, और उन की पैदावार बढ़ती है और जो पशु उन पौदों अथवा उन के फलों को खाते हैं उन के रक्त में प्रविष्ट होकर उन के शरीर को पुष्ट और बलवान् करता है, यदि लोहा खाद में कम होगा तो जो मनुष्य अथवा पशु उस पौदे अथवा उस के फल को खावेंगे उन की जठराग्नि मन्द होगी और वे नाना प्रकार के रोगों में ग्रसित रहेंगे और अल्पायु होवेंगे।

(६) गंधक का तेज़ाब कि जिस को अंगरेज़ी में सलफर-एसिड कहते हैं। यह गंधक जो कि पानी में नहीं घुलती है इस कारण सूर्य्य की उष्णता से तेज़ाब बन कर मिट्टी में मिल पौदों की ख़ुराक होती है, किन्तु यह तेज़ाब बहुत कम पौदों की ख़ुराक होता है। इस के होने से पौदों के कीड़े मर जाते हैं जिस के कारण पौदे रोगों से बचे रहते हैं। दूसरे खाद में नमक और खार के अधिक होने से जो हानि पौदों को होवे उसे दूर करता है, और पैदावार के अधिक होने का कारण है। तीसरे समस्त रासायनिक द्रव्यों को कि जो पृथक् २ होते हैं एकत्र करता है कि जिस से सरलता के साथ वे पौदों की ख़ुराक हो जाते हैं।

(७) रेत अथवा बालू कि जिस को अंगरेज़ी भाषा में सलीका कहते हैं यह पदार्थ न तो पानी में घुलता है न तेज़ाब में किन्तु नमक के जौहर और खार के संग मिल कर रूपान्तर में नमक हो जाता है और इस दशा में गंधक अथवा नमक के तेज़ाब के साथ मिल कर वृक्षों का खाद्य होता रहता है। माना कि रेत का अंश फलों में दूसरे परिमाणुओं की अपेक्षा कम रहता है परन्तु वृक्षों अथवा पौदों की शाखा

उपशाखाओं में इस का सब से अधिक भाग होता है इसी कारण खेतों की मिट्टी में इस का होना परमावश्यक है इस कारण कि पौदों अथवा उस के फलों की बनावट में यह अधिक काम देता है इस के अतिरिक्त यह तराई को खेंचता है कि जिस के कारण व्यर्थ तराई पौदों में एकत्रित नहीं होने पाती।

(८) फास्फोर्स—अर्थात् आतशी मोम यह मोम भी गंधक की भांति पानी में नहीं घुलता है अतः प्राकृतिक-शक्ति से तेज़ाब बन पौदों के काम में आता है। इस पदार्थ की खेतों में और पदार्थों की अपेक्षा अधिक आवश्यकता है, क्योंकि पौदों को इस तेज़ाब की अधिक भूख होती है, यहां तक कि गेंहुओं में यह तेज़ाब आधे के लगभग होता है। यह तेज़ाब पौदों की जड़ और शाखाओं को दृढ़ अथवा बलवान् बनाता है और उन के आत्मिकबल को बढ़ा बीज के भारी अथवा अधिकता से उत्पन्न होने का कारण होता है, और संसारी जीवों को भी इस मोम की अत्यावश्यकता है। इस कारण कि यह मोम पाचकशक्ति और आत्मिक बल को बढ़ाता और मस्तिष्क शक्ति को दृढ़ करता है। जो मनुष्य कि मस्तिष्क से अधिक परिश्रम लेते हैं उन को यह अतीव लाभदायक है। नेत्रों की ज्योति और शरीर में बल व वीर्य्य की वृद्धि और हड्डियों की दृढ़ता इसी पर निर्भर है। अतएव वृक्षों अथवा पौदों को फास्फोर्स कम मिलेगा तो जो मनुष्य अथवा पशु उस के फल आदिक को खावेंगे उन के अंग प्रत्यंग बलहीन शरीर कृश और मस्तिष्क निर्बल हो कर आयु भी कम होगी और सदैव रोगग्रसित रहेंगे। इसी से इस का खाद में अधिकता होना परमावश्यक है। इस के अतिरिक्त गोबर में

नौसादर भी है किन्तु वह सूर्य्य की उष्णता से उड़कर वायु-मंडल में सम्मिलित हो जाता है कि जो वायु द्वारा वर्षा के जल में मिल पृथ्वी पर पड़ पौदों की खुराक होता है। गो मूत्र में नौसादर और भी अधिकता से होता है। इस नौसादर की जब तक कि फल कच्चा रहता है पौदों को अधिक आवश्यकता है क्योंकि वृक्षों की वृद्धि में यह परम सहायक है।

इतना वर्णन करने के पश्चात् आप पर विदित हो गया होगा कि गंधक के तेज़ाब और रेत के सिवाय जो बाकी छः रासायनिक द्रव्य गोबर में अधिक हैं वे पौदों के लिये अत्यन्त लाभदायक हैं। और लीद में गंधक के तेज़ाब का गोबर से अधिक होना और जौहर सेलखड़ी और नमक व खार का कम होना कि जो तेज़ाब की तेज़ी को रोकते हैं खेती के जल जाने का कारण होगा, और ऐसे ही लीद में बालू की अधिकता होने से खेत रेतीला हो कर खराब हो जावेगा। इस से सिद्ध हुआ कि गोबर की खाद लीद की खाद की अपेक्षा खेती को लाभदायक है।

यह तर्क कि जो पदार्थ विद्या से सम्बन्ध रखता है हमारे कतिपय मित्रों को रुचिकारक न होगा किन्तु जो कि यह आक्षेप साइंस-वेत्ताओं की ओर से था इस से इस के लिखने पर बाध्य होना पड़ा। क्षमा कीजिये।

अन्य मतावलम्बी जो हिन्दुओं के गोबर से चौका देने और पंचगव्य पीने पर कटाक्ष करते हैं वे उपरोक्त लेख को ध्यान पूर्वक देखें कि आर्य्य महर्षियों ने लाखों वर्ष पहले गोबर के उन रासायनिक द्रव्यों को मालूम कर लिया था कि जो आज यूरोपीय विद्वानों ने बड़े २ यन्त्रों द्वारा कठिनता से मालूम किया है। हमारा गोबर से लीपना वायु शुद्धि का

सहज उपाय है कि जो सेरों गंधक जलाने से श्रेष्ठ है। गोबर से गंधक का तेज़ाब और फास्फोर्स उड़ कर वायु शुद्ध करेगा, और यही तेज़ाब प्लेगादिक के कीटों को और लोहे का जंग विषैले परिमाणुओं को दमन करेगा और पंचगव्य मिश्रित गंधक का तेज़ाब और नमक का जौहर और नौसादर उदर की सम्पूर्ण व्याधाओं और मंदाग्नि को दूर करेंगे और फास्फोर्स और लोहे का जंग, सेलखड़ी का जौहर शरीर को पुष्ट और बल वीर्य की वृद्धि कर मस्तिष्क को दृढ़ व बलवान् कर दीर्घायु का कारण होगा। कहिये कम खर्च बालानशीन इसी का नाम है या नहीं? जो काम कई रुपयों के पेपरमेंट आइल वा इस्टिकनियां पिल्स या दरजनों सोडावाटर की बोतलों या फौलाद के कुश्ते व कांतिसार वा गंधकबटी से बड़े २ डाक्टरों और वैद्यों की चरणसेवा से प्राप्त होता वह हमारे महर्षियों के बिना दाम के पंचगव्य सेवन से प्राप्त हो सकता है। हम अब लेखनी को रोकते हैं विशेष लेख बढ़ाना नहीं चाहते क्योंकि हमारा मुख्य उद्देश्य गोरक्षा है, अतः उपरोक्त लेखों से सिद्ध हो गया कि भैंसा व ऊंट व घोड़ा किसी अंश में भी बैल की समता नहीं कर सकते। यदि उन में एक गुण है तो कई अवगुण हैं, इस से गाय बैल ही भरत-खण्ड के लिये उपकारी हैं अन्य नहीं।

पंचम आक्षेप।

जोकि आज कल कलों का प्रचार बढ़ता जारहा है अतः यदि बैलों की न्यूनता हो जायगी तो कलों के द्वारा कृषि-कर्म्म का प्रचार कर दिया जायगा।

(उत्तर) आप का कथन सत्य है। खेती का काम तो आप इंजिन से ले लेवेंगे परन्तु घृत के पलटे क्या चरबी या

बिनौलों के तेल से काम ले सकोगे ? भाई साहब इस भरत-खण्ड के किसान एक बैल के मर जाने पर दूसरा बैल कठिनता से ले सकते हैं, कलों के वास्ते कि जिस में सहस्रों रुपये व्यय होते हैं कहां से धन लावेंगे ? फिर हलों से तो आप भी खेत जोत लेते हैं या चार रुपये मासिक के कुली से काम निकाल लिया जा सकता है किन्तु इञ्जन के चलाने को तीस रुपये मासिक के ड्राइवर और कलों की देख भाल को दो तीन सौ रुपये मासिक के इंजीनियर की तनख़ाह यहां के निर्धन कृषक किस के घर से लावेंगे ? अब भी इंजीनियर कठिनता से मिलते हैं। यदि खेत का भी समस्त कार्य्य इन्हीं के आश्रित हो गया तो फिर इन का मिलना भी कठिन हो जावेगा, इस के अतिरिक्त लकड़ी और कोयला कि जिस की अभी कमी पड़ रही है फिर इतने बड़े काम को कहां से आवेगा और कलों के बलायत से आने की दशा में यहां के बढ़इयों का जो केवल हलों के बनाने का साझा था वह भी जाता रहेगा। लाचार उन को भी बाबू बन दर बदर भीख मांगनी पड़ेगी।

इस से सिद्ध हुआ कि इतने बड़े कृषि-प्रधान देश में यहां के किसानों की निर्धनावस्था में कलों से काम लेना कठिन एवं असम्भव है।

६ षष्ठ आक्षेप।

(६) दया का प्रयोग समस्त जीवमात्र पर समान होना चाहिये। गौ की रक्षा को मुख्य जान उस के लिये विशेष प्रयत्न करना न्याय के विरुद्ध है और इसी के कारण गोहित-कारिणी सभाएं पक्षपात की उपाधि से कलंकित हो सकती हैं।

(उत्तर) यह आक्षेप हम को शिरोधार्य है, इस का विस्तार सहित उत्तर आप हमारी इस पुस्तक के पृष्ठ में जहां जैन भाइयों से निवेदन किया गया है ध्यान पूर्वक देखेंगे तो आप को स्पष्ट विदित हो जायगा कि गोरक्षा किस प्रकार सर्वश्रेष्ठ है और इसी की रक्षा से समस्त जीवों पर दया का विस्तार हो सकता है।

७ सप्तम आक्षेप।

(१) पन्द्रह बीस वर्ष से गोरक्षा की धूम मची हुई है और सैकड़ों गोशालायें भी खुल गई हैं किन्तु घृत दुग्ध तो सस्ते के बदले महंगे होते चले जा रहे हैं, और रोगों की भी दिन प्रतिदिन वृद्धि ही होती चली जा रही है। ऐसी दशा में हम आप के कथन को कैसे सत्य मानें कि गोरक्षा के प्रचार से घृत दुग्ध की वृद्धि हो मनुष्य मात्र प्रथम की भांति शक्ति-शाली और धनाढ्य हो जावेंगे।

(उत्तर) भाई साहब ! इस समय आप का यह कहना कुछेक अदूरदर्शियों को भ्रम में डालेगा किन्तु तनिक सोचियेगा तो सहज ही में यह भ्रम दूर हो जावेगा। देखिये कि गेहूं, जौ, बाजरे आदि के पौदे तीन चार मास में और ऊख अरहर के पौदे १ वर्ष में अपने स्वामी की इच्छा को फल दे पूर्ण करते हैं और आम, जामन, नारंगी आदि के वृक्ष दस पन्द्रह वर्ष में सिंचाई करने और पशुओं से रक्षित रखने के पश्चात् फल देते हैं। इसी प्रकार यदि हम सब तन मन धन से इस गोरक्षा रूपी वृक्ष की रक्षा करते रहेंगे तो निस्सन्देह तीस चालीस वर्ष में इस के फल को प्राप्त कर धन धान्य से परिपूर्ण हो पूर्ववत् बल विद्या में सर्वशिरोमणि हो जावेंगे। अभी तक सिवाय दस पन्द्रह सहस्र लूली लंगड़ी एवं बुड्ढा

गायों के प्रति वर्ष अकाल मृत्यु से बचाने के गोशालायें और कुछ भी नहीं कर सकी हैं कि जो सत्तर हजार प्रतिदिन मरने के मुकाबले में कुछ भी नहीं हैं। ऐसी ही दशा में घृत दुग्ध और बैल कैसे सस्ते हो सकते हैं? इन गोशालाओं से लाभ उस समय होगा कि जब हमारे पूर्वोक्त कथनानुसार गौओं को हिन्दू मात्र गोघातकों के हाथ बेचना बंद कर देवेंगे और सामर्थ्य रखते हुए वृद्ध गाय बैल को घर से जुदा न करेंगे और जिन में सामर्थ्य न होवे वे गोशालाओं में पहुँचाते रहेंगे उस समय आप घृत दुग्ध की नदियां बहती देख लेवेंगे। इस की पुष्टि को हम एक उदाहरण आपके सन्मुख पेश करते हैं। देखिये आज से साठ सत्तर वर्ष पहले हमारी बृटिश सर्कार को जब राज्य प्रबन्ध को पढ़े लिखे मनुष्यों के मिलने में कठिनाई पड़ी तो सरकार ने दूरदर्शिता से पाठशालायें, स्कूल, कालिज स्थापित कर उन में असंख्य धन व्यय करना आरम्भ कर दिया। यह हमारा स्वयं देखा हुआ है कि हर साल छोटे २ क़सबाती व देहाती पाठशालाओं के छात्रों को ज़िले में अपने ख़र्च से बुला दोनों वक्त कई दिन तक खूब दावत की जाती थी और सायंकाल को उन छात्रों के विनोदार्थ आतिशबाज़ी और बिजली के तमाशों में सहस्रों रुपये व्यय कर अन्तिम दिवस योग्यतानुसार दस बीस पचास रुपयों की पुस्तकें अथवा वस्त्र पुरस्कार में दिये जाते थे। अब की भांति न फ़ीस पढ़ाई थी न परीक्षा में सम्मिलित होने की फ़ीस ली जाती थी अब यह उसी का प्रतिफल हमारी आंखों के सामने है कि उस समय जहां साधारण पढ़े लिखे मनुष्य को पचास सौ रुपये मासिक वेतन देना पड़ता था वहां अब बी. ए. और एफ. ए. पास वाले बीस पच्चीस रुपये मासिक

वेतन में दर्जनों मौजूद हैं। इस समय पांचसौ रुपये मासिक के इंजीनियर का काम ३०) रुपये मासिक का सब-ओवरसीयर दे रहा है। यदि उस समय सरकार आंखें बन्द कर रुपया व्यय न करती तो आज ऐसे थोड़े वेतन पर बड़े बड़े कर्म्मचारी न मिलते। इसी प्रकार यदि हम सब भी गोरक्षा में तन मन धन से लगे रहेंगे तो निस्सन्देह अपना मनवांछित फल पावेंगे। हर्ष का विषय है कि अब हमारी सरकार और बहुत से मुसलमान सज्जनों का ध्यान गोरक्षा की ओर आकर्षित हुआ है। सो यदि हम निष्पक्ष भाव से इस कार्य्य में दत्तचित्त रहेंगे तो अवश्य ही सफलमनोरथ होंगे। आज हम गौओं की रक्षा करते हैं फिर धर्म्मोरक्षति रक्षितः के वचनानुसार गायें हमारी रक्षा कर देश को धन धान्य से परिपूरित और मनुष्यों को बल वीर्य्य और आरोग्यता दे आनन्दित करती रहेंगीं और भारतवासी पूर्ववत् बल विद्या एवम् चातुर्य्य में सर्वशिरोमणि समझे जावेंगे।

अष्टम आक्षेप।

(८) हमारे दो चार मनुष्यों के करने से क्या होता है। यदि हम ने गोरक्षा में दो चार रुपये दे भी दिये तो उस से क्या लाभ होगा और कठिन परिश्रम से यदि दस पांच नगरों में गोरक्षा या गोशालाएँ हो भी गईं तो बिना समस्त देश में हुए इन नाम मात्र की गोशालाओं से कदापि मनोरथ सिद्ध नहीं हो सकता है। इस के अतिरिक्त बृटिश जाति जो गोमांसभोजी है और मुसलमान लोग भी कि जिन की संख्या पांच छः करोड़ के लगभग है गोभक्षक हैं अतः ऐसी दशा में गोरक्षा होना कैसे सम्भव हो सकता है ?

(उत्तर) मित्रवर ! आप का यह कहना कि हमारे दो चार मनुष्यों के दो चार रुपये गोरक्षार्थ देने या दो चार नगरों में गोशाला खुल जाने से लाभ की कुछ आशा नहीं हो सकती है सर्वथा निर्मूल है। पुरुषार्थी और साहसी मनुष्य ऐसे वाक्यों को सदैव घृणा की दृष्टि देखते हैं। देखिये कि एक के साथ एक मिलने से ग्यारह होते हैं। किसी फ़ारसी विद्वान् का वचन है कि "दोतन यक शवद् बिशकनद् कोहरा" अर्थात् दो मनुष्य एकत्र हो पर्वत तक को तोड़ सकते हैं।

सुनसान निर्जन वन भी एक २ मनुष्य के बसने से ग्राम कहलाने लगता है और फिर इसी भांति एक ही एक की वृद्धि होने से गांव से क़सबा और क़सबा से नगर कहलाने लगता है अस्तु जब धीरे २ प्रत्येक मनुष्य गोरक्षा को आवश्यकीय कर्म्म समझने लगेगा तो उन का एक बड़ा दल हो समस्त देश में अपना प्रभाव जमा लेवेगा। आज दो चार ग्रामों में गोशालायें खुलीं या गोरक्षा का प्रबन्ध हुआ तो बढ़ते २ उस का प्रचार कुल ज़िले में और ज़िले से सूबे में और सूबे से समस्त देश में हो जावेगा। केवल सत्य संकल्प से साहस और पुरुषार्थ की आवश्यकता है। पुरुषार्थी मनुष्य सब कुछ कर सकता है, पुरुषार्थ करना मनुष्य का कर्त्तव्य है और उस का पूरा करना ईश्वराधीन है। क्या आप ने कथा में नहीं सुना है कि एक टटीहरी के अंडे समुद्र में डूब गये थे उन के निकालने को दोनों पक्षियों ने समुद्र को सुखाने की इच्छा से एक २ चोंच जल ले बाहर फेंकना आरम्भ किया। उनको पुरुषार्थी और दृढ़प्रतिज्ञ जान ईश्वर ने अगस्त्य मुनि के रूप में दर्शन दे उन को इस असम्भव कर्म्म को छोड़ देने का बहुतेरा उपदेश किया किन्तु उन पक्षियों ने अपने प्रण को

न छोड़ा अन्त में मुनि रूपी भगवान् ने समुद्र को सुखा उनकी इच्छा को पूर्ण किया। सो यदि आप लोग भी गो-सेवा में दृढ़प्रतिज्ञ हो पुरुषार्थ किये जावेंगे तो आश्चर्य नहीं कि शक्तिमान् जगदीश्वर नेशनल कांग्रेस के नेताओं के चित्त में पैठ उन के द्वारा जहां और शाखा रूपी मन्तव्य गवर्नमेण्ट में पेश करते हैं वहां एक मन्तव्य गोरक्षा का भी कि जो वास्तव में उन सब मन्तव्यों का मूल है उपस्थित कर देवें और बृटिश उदार लिबरल दल की कृपा से रिफार्म स्कीम की भांति गोरक्षा स्कीम भी व्यवस्थापक सभा में उपस्थित हो पास हो जावे।

स्मरण रहे कि कोई कार्य्य भी एक दम नहीं होता है। वट के छोटे से बीज से प्रथम दो पत्ते निकलते हैं और फिर सेवा के प्रताप से वह बड़ा वृक्ष हो बीघों में फैल सहस्रों मनुष्यों को अपनी छाया में सुख देने योग्य हो जाता है। साहस और पुरुषार्थ के प्रताप से ही एक छोटा सा इंग्लैण्ड द्वीप बड़ा भारी साम्राज्य बन गया। पुरुषार्थ एवम् ऐक्यता और देशाभिमान के प्रभाव से जापान जैसा एशियाई तुच्छ द्वीप रूस जैसे शक्तिसम्पन्न जगद्व्यापी साम्राज्य पर विजयी हो यूरोप और अमेरिका की प्रथम श्रेणी की शक्तियों में गिना जाने लगा। अन्तिम उदाहरण यह है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान् होते हुए भी वर्षा को एक दम देशव्यापी नहीं कर देता। आज दस बीस ग्रामों में वर्षा की कल और अधिक कर शनैः शनैः समस्त देश को जलमय कर देता है। सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर का ऐसा करना केवल हमारी शिक्षा के लिये है अतः पुरुषार्थ किये जाइये ईश्वर अवश्य ही संकल्प को पूरा करने में सहायक होंगे।

रहा आप का यह कहना भी कि हमारे दो चार रुपये गोरक्षार्थ देने से क्या होता है ठीक नहीं है क्योंकि चार रुपये तो बहुत हैं। यदि सब मिल चार २ कौड़ी भी देते रहें तो इतने से ही बहुत कुछ द्रव्य एकत्रित हो सकता है। देखिये इस भरतखण्ड में बीस करोड़ हिन्दू हैं, अतः यदि प्रति मनुष्य चार २ कौड़ी मासिक देने लगें तो १ महीने में १ करोड़ पैसे या २५ लाख आने अर्थात् एक लाख छप्पन हज़ार दोसौ पचास रुपये जमा हो जावेंगे कि जिस से १ वर्ष में १८७५००० रुपये गोरक्षा फंड में एकत्रित हो जावेंगे।

ध्यान कर के देखलो कि बादलों से छोटी २ बूंदें गिरती हैं और उन्हीं तुच्छ बूंदों से नाले और नालों से नदी बन जाती है। इसी प्रकार यदि सब मिल कर थोड़ा २ श्रद्धानुसार धन देवें तो उस से बड़ा भारी कोष भर सकता है।

अब शेष रही आप की यह शंका कि अंगरेज और मुसलमान लोग गोभक्षक हैं सो यह भ्रम भी आप का व्यर्थ है, क्योंकि अंगरेज लोग न्यायपरायण हैं। यदि आप निष्पक्ष हो गोरक्षा के लाभ और गोबध की हानि उन को दर्शा देवेंगे तो वे गोबध करना तत्काल छोड़ देवेंगे कारण कि अंगरेज लोग सत्यप्रेमी हैं, हठी नहीं हैं। वे प्रजा को कष्ट देना कदापि नहीं चाहते। रहे हमारे मुसलमान भाई सो वे भी इस देश के वासी होने के कारण गोबध से अपनी हानि समझ उस के दूर करने का तन मन से प्रयत्न कर रहे हैं। केवल थोड़े से कट्टर नाममात्र के मुसलमान विरोध कर रहे हैं, सो यदि आर्य्यसमाज इन से द्वेष न करता और समय २ पर इन को न चिढ़ाता तो गोबध में इस समय बहुत कमी हो जाती और एक स्वर से सभी मुसलमान गोरक्षा के पक्ष में हो जाते। यह

आर्यसमाज के ही कर्त्तव्य का फल है कि मिस्टर महबूबे आलम एडीटर पैसा अख़बार लाहौर कि जो सन् १९०५ और १९०६ ई० में गोरक्षा पक्ष पर अपने अख़बार में आर्टिकिल लिखते थे और गोबध को बुरा कहते थे और जिन्हों ने ४ अपरैल १९०८ के पत्र में हमारी इस पुस्तक की अच्छी समालोचना की है वे ही महाशय काश्मीर-नरेश के गोबध बंद करने की आज्ञा से रुष्ट हो गोमांस को अंगरेजी मेज़ का आभूषण लिखने लगे हैं। यदि हम लोग द्वेषभाव दूर कर अपने मुसलमान भाइयों से गोरक्षा में सहायता चाहेंगे तो वे लोग गोबध को धीरे २ अवश्य बंद कर देवेंगे। सत्य पूछिये तो गोबध में अधिकांश दोष हमारे हिन्दू भाइयों का ही है, क्योंकि किसी क़साई के यहां भी बध के लिये सौ दोसौ गायें मौजूद नहीं हैं। उन के घर हमारे ही यहां से गौयें जाती हैं और हम लोग जान बूझ कर उन के हाथ गो-विक्रय कर पापभागी होते हैं। तिस पर भी अपना दोष न जान उन की निन्दा करते हैं। यदि हिन्दू लोग गोघातकों के हाथ गाय बैल बेचना बंद कर देवें तो सहज ही में बिना परिश्रम गोरक्षा हो सकती है।

नवम आक्षेप।

(९) लूली, लंगड़ी, वृद्धा अथवा असाध्य बीमार गायों को तो कि जो महाकष्ट से जीवन व्यतीत कर रही हैं हमारी बुद्धि में तत्काल मार देना ही उन को असह्य वेदना से मुक्त कर धर्म्म का भागी होना है क्योंकि जीव को कष्ट से बचाना ही सच्ची दया है। देखिये कि बुद्धि विशारद अंगरेज लोग भी जिस घोड़े आदि से प्रसन्न रहते हैं उस को वृद्धावस्था में जब कि वह घास तक अच्छी तरह नहीं खा सकता है गोली से मार तत्काल उस को शेषायु के कष्ट से मुक्त कर देते हैं।

(उत्तर) निस्संदेह बहुधा अंगरेज लोग ऐसा करते हैं, किन्तु यह कोई आवश्यक कर्म्म नहीं कि जो काम अंगरेज लोग करें वह हमारे लिये भी अनुकरणीय हो, जो कि मांसाहारियों के चित्त निर्दयता करते करते बज्रवत् कठोर हो जाते हैं अतः वे ऐसी निर्दयता को दया समझने लगते हैं। एक सहज तरकीब इस के जानने की यह है कि जब इस प्रकार की कोई कठिन समस्या आन पड़े तो उस को अपने ऊपर कल्पना कर के अपने ही अंतःकरण से उस का उत्तर मांगा जावे तो सहज ही में इस का निबटारा हो जावेगा। देखिये सृष्टि में मनुष्य सर्वोत्तम माना गया है सो ऐसी दया का प्रयोग प्रथम उन पर कर के देखा जावे, अर्थात् जब कोई अपना इष्ट मित्र अथवा सम्बन्धी किसी असाध्य रोग से पीड़ित हो या उस का अंगभंग हो जावे और जब इस में कोई संशय न रहे कि उस को अपनी शेषायु इसी कष्ट में व्यतीत करनी पड़ेगी तो क्या आप के इस दयामय सिद्धान्त के अनुसार उस को बंदूक या तीव्र शस्त्र द्वारा यमपुर को पहुँचा देना न्यायसंगत होगा ? या क्या ऐसे दयालु को सरकार इस दया के उपहार में फांसी या कालेपानी का दण्ड न देवेगी? और क्या वह अपराधी न गिना जावेगा ? प्रत्येक मनुष्य के निकट वह निष्ठुर पापात्मा किसी भांति भी क्षमापात्र न समझा जावेगा अतः यह कैसा अन्याय है कि अवाचक पशु को तो ऐसी दशा में मार डालना दया और धर्म्म माना जावे और उसी दशा में जब अपने कुटुम्बी अथवा अन्य व्यक्ति को कष्ट से छुड़ाने की दृष्टि से मार दिया जावे तो वह महा अपराधी गिना जावे। छिः छिः ऐसी दयालुता पर। अस्तु। मित्रवर ! क्षमा कीजिये। आप दया के गूढ़ मर्म्म को क्या जानें? यदि दया का

अर्थ समझना अभीष्ट हो तो सनातनधर्मावलम्बियों या जैनियों से पूछिये या मुसलमानी धर्म्म के उन अगुआओं के वाक्यों से समझ लीजिये कि जिन को हमने इसी पुस्तक के चतुर्थ भाग में उद्धृत किया है।

दशम आक्षेप।

(१०) इंगलैण्ड निवासी गोमांस भक्षक हैं किन्तु वहां के निवासी इस गोहत्या के कारण न तो निर्धन हैं न निर्बल न हमारी भांति रोगग्रसित हो अकाल मृत्यु पाते हैं, सो कृपाकर बतलाइये कि आप का कथन यहां असत्य क्यों होता है? और इंगलैण्ड में गोरक्षा की प्रधानता या आवश्यकता क्यों नहीं है?

(उत्तर) यह कहना आप का सत्य है कि अंगरेज जाति लक्ष्मीपात्र और बलशाली एवं आरोग्य है किन्तु क्या आप नहीं देखते कि इंग्लिस्तान और हिन्दुस्तान की दशा में आकाश और पाताल का अंतर है। इंगलैण्ड पहाड़ी और शीतप्रधान द्वीप है और भारत कृषिप्रधान देश है। इंगलैण्ड निवासी शिल्पकार और भारतवासी काश्तकार हैं। इंगलैण्ड में शिल्प से आजीविका करने वाले ८६ फी सैकड़ा और खेती से निर्वाह करने वाले १४ प्रति सैकड़ा हैं इस के विरुद्ध भारतवर्ष में प्रति सैकड़ा ८५ खेती से निर्वाह करने वाले मनुष्य हैं अतः ध्यान दे कर देखना चाहिये कि जब इंगलैण्ड में खेती के योग्य भूमि भारत के सहस्रांश के भी तुल्य नहीं है और जो है वह भी घोड़ों और कलों के द्वारा जोती बोई जाती है तो फिर उन को गोबध या गायों की न्यूनता क्या हानि पहुँचा सकती है? किन्तु ऐसी दशा होने पर भी वहां गोबध

बंद है, केवल बैल ही मारे जाते हैं कि जो घोड़ों से खेती करने के कारण व्यर्थ समझे गये हैं। गौओं की वहां ऐसी सेवा की जाती है और उन को ऐसा अच्छा चारा दिया जाता है कि जैसी सेवा हम लोग इस को देवतुल्य समझते हुये भी नहीं करते और वैसा चारा दाना कदाचित् ही हमारे यहां के गोभक्त राजे महाराजे या रईस लोग देते हों। वहां की गौएं २० सेर से १ मन तक दूध नित्यप्रति देती हैं और जिन का मूल्य वहां गुण-ग्राहकता से दो सहस्र रुपये के लगभग होता है। दूध का व्यापार वहां यहां की भांति निन्दनीय नहीं है। लार्ड लोग तक वहां इस काम को करते हैं और अनेकों के यहां सौ सौ दो दो सौ मन दूध नित्य-प्रति होता है। जहां हमारे देश में दूध लुप्तप्राय होता चला जा रहा है वहां इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि का दूध प्रति वर्ष तीस चालीस लाख का हमारे देश में आने लग गया है। क्या यह वहां के गोरक्षा का ही प्रताप नहीं है? क्या हमारे हिन्दू धर्मावलम्बियों के लिये यह लज्जा की बात नहीं है?

अब रहा अन्न का महँगापन सो वहां के निवासी अपने शिल्प और कला कौशल के प्रताप से इतने धनाढ्य होगये हैं कि हमारे देश से करोड़ों मन गया हुआ अन्न उनको यदि रुपये का छटाकों के भाव भी मिले तो उस का लेना उन को कुछ कठिन नहीं प्रतीत होता है। उन को संकट उसी दशा में मालूम होता कि जब उन का सम्बन्ध हमारे जैसे कृषिप्रधान और मूर्ख कलाकौशलहीन देश से न होता और वे अपने ही देश के अन्न से भारतवासियों की भांति निर्वाह करते। बलवान् होने का कारण भी स्पष्ट है कि जहां हम साधारण भारतवासियों को आज कल दूध तो दूर रहा मट्ठा व छाछ

तक के दर्शन दुर्लभ हैं वहां प्रत्येक इंगलैण्डनिवासी दिन में चार पांच बार दूधकी चाय और मनमाना मक्खन खाते हैं। यह उसी गोरक्षा के प्रताप से है जो वहां प्रचलित है और इसी कारण उन की आयु अधिक होती है और अकालमृत्यु को प्राप्त नहीं होते। शेष रहा उन में रोगों की कमी सो ऐसे बलवर्द्धक दूध घी के प्राप्त होते हुए रोगों का कम होना या न होना कौन आश्चर्य्य की बात है? दूसरे जो साफ़ और शुद्ध वायु उन को अलग २ बंगलों और कोठियों में रहने से मिलती है वह हम को कैसे मिल सक्ती है? जहां हम निर्वाहार्थ दिन भर परिश्रम करते हुए बाहर घूमने का तनिक भी अवकाश नहीं पाते वहां अंगरेज़ लोग दोनों समय सब काम त्याग दो चार मील वायुसेवन को अवश्य ही जाते हैं। हम दस पांच जोड़े कपड़ों के साल भर के लिये दरिद्रता के कारण कठिनता से बना पाते हैं, किन्तु इंग्लैण्ड-निवासी दर्जनों कपड़े हिलबा काम में लाते हैं। जहां हम १ जोड़े कपड़े को आठ दस दिन पहिन कर धोबी से धुलवाते हैं वहां अंग्रेज़ लोग नित्य प्रति कई जोड़े बदल दूसरे रोज़ धुलवा कर व्यवहार में लाते हैं। ऐसी दशा में उन का आरोग्य रहना कोई आश्चर्य्य की बात नहीं है। देखिये मिस्टर सर विलियम डिगबी साहब सर्कारी कागज़ात से औसत बचत सालाना प्रति भारतवासी की ।)॥ साढ़े चार आना कम से कम खुराक का हिसाब लगा कर लिखते हैं और इंग्लैण्ड-निवासियों की अमीराना खुराक और खर्च के पश्चात् साठ रुपये की बचत लिखते हैं। उनकी यह अमीरी कलाकौशल और बल आरोग्यता गायों के दूध और घी के प्रताप से है। वहां बैलों का बध होना कृषि योग्य भूमि के

कम होने और वह भी घोड़ों से जोते जाने के कारण कुछ हानि नहीं पहुँचा सकता । यदि इंगलैण्ड भारतवर्ष की भांति कि जो लाखों मन अन्न अन्य देशों तक को देता है केवल अपने ही देश की पैदावार पर निर्वाह करे तो थोड़े ही काल में उस को आटे दाल का हाल मालूम हो जावे ।

एकादश आक्षेप ।

—: राज्यकर्म्मचारियों की ओर से :—

(११) गोरक्षा और गोशालाओं के गवर्नमैण्ट विरुद्ध है और दिल में इस के सहायक अथवा मेम्बर राजविद्रोही मालूम होते हैं । इसी कारण सर्कार ने नवम्बर १८८८ ई० में एक सर्क्यूलर समस्त राज्यकर्मचारियों के पास भेजा था कि कोई राज्यकर्मचारी किसी राजनैतिक सभा में सम्मिलित न होवे इस से मित्रवर ! हम इस में सम्मिलित हो राज्यविद्रोही कहला सर्कार की इच्छा के विरुद्ध चलना नहीं चाहते ।

(उत्तर) यह आप की निपट कायरता है । यदि आप के नित्य प्रति के व्यवहार में घृत दुग्ध जैसे पौष्टिक पदार्थ होते तो ऐसे कातर एवम् साहसशून्य वाक्य कदापि आप के मुख से न निकलते । मित्रवर ! गोरक्षा पक्ष वाले राज्य और प्रजा के शुभचिन्तक हैं । राज्यविद्रोही कदापि नहीं कहे जा सकते हैं । देखिये कि गोरक्षा-प्रचार से जब गौओं की अधिकता और उत्तम सांडों के योग से बैल बलिष्ट और सस्ते होंगे तो कृषकों को आज कल का सौ रुपये के मूल्य वाला बैल फिर पचास रुपये से भी कम में मिलने लगेगा कि जिस के कारण खेतों की खूब जोताई होने और खेतों में बलकारक गोबर की खाद पड़ने से, जो गौओं की अधिकता की दशा में हो सकती है, देश में अन्नादि की उपज अधिक होगी ।

सर्कारी मालगुज़ारी जो अब कठिनता से वसूल होती है फिर बिना परिश्रम वसूल होती रहेगी। कृषक ऋणी न रहेंगे। सर्कार को दीवानी अभियोगों से बहुत कुछ छुटकारा मिलेगा। कानून की वह धारा भी व्यर्थ होगी कि जिस के कारण कृषकों के उपकारक यंत्र अर्थात् हल बैल आदि कुर्की से रक्षित रक्खे गये हैं कि जो उन की दरिद्रता की दशा में रखनी पड़ी थी। घृत दुग्ध की बाहुल्यता से समस्त दीन भारतवासी उस से परितृप्त हो बलिष्ठ हो रोगों के क़ाबू में न आवेंगे। एवं जो २ हानियें गो-हत्या से हम ने इस पुस्तक के प्रथम और द्वितीय अध्याय में दिखलाई हैं वे समस्त धीरे धीरे दूर हो जावेंगीं। ऐसी दशा में आप ही न्याय कीजिये कि सर्कार प्रसन्न होवेगी अथवा अप्रसन्न। आप का यह सार-शून्य कथन कि गोरक्षक सभासदों एवम् सहायकों को दिल में राजविद्रोही समझ सर्कार अप्रसन्न रहती है अत्यन्त ही आश्चर्यजनक है क्योंकि दिल में बलहीन अप्रसन्न हुआ करते हैं। हमारी बृटिश गवर्नमैण्ट प्रतापशालिनी और प्रायः चतुर्थांश भूमण्डल की स्वामिनी एवम् हर्ता कर्त्ता है यदि गोरक्षक सभासद राजविद्रोही होते तो बेधड़क १ धारा भारत दण्ड-संग्रह में बढ़ा उन को कारागृह में पहुंचा देती अथवा जैसे कि बिना अपराध बतलाये कतिपय महाराजाओं तक को राज्यच्युत कर चुकी है या जैसे कि नाटू-ब्रादरान् पूना की बिना अपराध बतलाये सम्पत्ति ज़ब्त कर उन को जेल में भेज दिया था तो क्या तुच्छ शक्तिहीन गोरक्षा-सभासदों को कालेपानी पहुंचा वर्त्तमान गोशालाओं को रसातल में नहीं पहुंचा सकती है? किन्तु जो कि हमारी सरकार न्यायशीला वा न्यायकारिणी है ऐसा बिना अपराध

देखे कदापि नहीं करती। सन् १८९३ ई० में आजमगढ़ के अन्तर्गत हिन्दू मुसलमानों के झगड़े में अदूरदर्शी भारतशत्रु भीरु ऐंग्लो-इंडियन पत्रों की पक्षपाती लेखनी के कारण कि जिन्हों ने वृक्षों पर बाल और मिट्टी के लग जाने को कि जो कुछ मसखरों ने लगादी होगी राज्यविप्लव का चिन्ह बतला गोरक्षिणी सभाओं को इस दोष में कलङ्कित कर गवर्नमेंट को गोरक्षकों से किञ्चित् असन्तुष्ट कर दिया था। किन्तु जब वे सब बातें निर्मूल पाई गईं और वलायती पत्रों तक ने गोरक्षिणी सभाओं को निर्दोष बतलाया तो सर्कार का संदेह भी दूर हो गया। निःसन्देह गोरक्षिणी सभाएं उस दशा में दोषी ठहर सकती हैं जब कि वे गोरक्षा से दूसरी जातियों का दिल दुःखा झगड़ा पैदा करें या ईद के दिन मुसलमानों को या हिन्दुओं को उत्तेजित कर फसाद बढ़ावें और सर्कार को सहायता के पलटे विद्रोह शान्त करने में कष्ट पहुंचावें कि जो अद्यावधि किसी स्थान में भी दृष्टिगोचर नहीं हुआ। कदापि कोई न्यायवान् व्यक्ति गोरक्षिणी सभाओं पर ऐसा दोषारोपण नहीं कर सकता। कारण कि गोरक्षिणी सभा के आठवें नियम से स्पष्ट विदित है, जिस में लिखा है कि जो कारखाई गवर्नमेंट और प्रजा के सम्बन्ध में विघ्न डालने वाली होगी उस से इस सभा के सभासदों को कोई सम्बन्ध न होगा। न ऐसा विद्रोही मनुष्य इस सभा का सभासद् माना जावेगा। बक़रीद के झगड़ों से इस सभा को किसी के पक्ष में सहानुभूति न होगी। सत्य पूछिये तो जो काम सर्कार ईद के दिनों में पुलिस द्वारा कठिनता से कर सक्ती है वह इस समय सभा द्वारा सहज ही में सम्पादन हो सकता है अर्थात् यह सभा हिन्दुओं

को ऐसे झगड़ों से उन की कार्य्य-सिद्धि में हानिकारक बतला उन को शान्त कर देवेगी और मुसलमानों को इस जगतहितैषी पशु के लाभ दिखला और इस की न्यूनता से जो विपद् देश पर पड़ रही है और पड़ेगी बतला उन को इस व्यर्थ और अकारण गोहत्या से भ्रातृभाव से अलग रक्खेगी। इस के अतिरिक्त यह सभा ऐसे पशुओं की चोरी दूर करने का भी प्रबन्ध करेगी क्योंकि चोरी करने वाले पता लग जाने के भय से थोड़े से मूल्य में बधिकों के यहां उन को खड़े २ कटवा डालते हैं अतः इस की रक्षा के हस्ताक्षर हो जावेंगे तो फिर कोई मनुष्य बिरादरी से अलग हो जाने के भय से जो सर्कारी जेल से कहीं अधिक है कभी पशुओं की चोरी न करेगा कि जिस के कारण सरकारी पुलिस विभाग को बहुत कुछ आराम मिलेगा।

दूसरे श्रीमती महारानी विक्टोरिया स्वर्गवासिनी ने अपने सन् १८५८ ई० के घोषणा-पत्र में (जिस को श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्ड और फिर श्रीमान् सम्राट् पंचम जार्ज ने अपने सिंहासनारूढ़ होने के समय दोहराया था) स्पष्ट आज्ञा दी है कि बृटिश गवर्नमेंट कभी किसी के मत सम्बन्धी कार्य्यों में हस्तक्षेप न करेगी। सब को समान तथा प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखेगी।

अतः गोरक्षा तो हिन्दुओं के मत का मुख्य अंग एवं कर्त्तव्य कर्म्म है कि जिस की पुष्टि की आवश्यकता नहीं है। हिंदू गौ को देवतुल्य पूजते हैं। क्या आप नहीं देखते कि पादरी लोग बाजारों तथा तीर्थों पर हिन्दू देवताओं की निन्दा करते रहते हैं किन्तु यह शान्तिप्रिय जाति कदापि उन से कुछ नहीं कहती और उन असह्य कटुवाक्यों पर ध्यान तक

नहीं देती किन्तु यदि कोई व्यक्ति इस प्रकार गौओं का अपमान करे तो वहां रक्तपात हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं सुतरां सिद्ध हो गया कि सांसारिक लाभों के अतिरिक्त गोरक्षा हिन्दूमत का मुख्य कर्त्तव्य है। ऐसी दशा में हमारी न्यायशीला निष्पक्ष भारत गवर्नमेंट कदापि हस्तक्षेप नहीं कर सकती। न अपने मत सम्बन्धी कार्य को करते हुए हिन्दुओं से अन्तःकरण से अप्रसन्न हो सकती है। शेष रहा सभाओं में राजकर्मचारियों को सम्मिलित होने से रोकना सो इस से पोलिटिकल जलसों नेशनल कांग्रेस आदि से लक्ष्य था। किंतु हमारी न्यायशीला सर्कार को वास्तव में उस से भी कोई विरोध नहीं है। देख लीजिये कि कांग्रेस के कई सभापतियों को सर्कार ने राष्ट्र का शुभचिन्तक जान हाईकोर्ट की जजी तक पर नियुक्त किया है। और वर्त्तमान सन् १९१० ई० की नेशनल कांग्रेस के मुखियाओं से श्रीमान् लार्ड हार्डिंग महोदय ने अपने दरबार में भेंट कर उन के उचित आवेदनों पर ध्यान देने का श्री मुख से वचन दिया है। राज्य का कोप-भाजन होने की दशा में वह कौन है कि जो तत्काल जड़ मूल से नष्ट न कर दिया जावे?

द्वादश आक्षेप।

(१२) गोरक्षा-सभासदों तथा गो-पूजकों को गौ का दूध भी नहीं पीना चाहिये क्योंकि गोदुग्ध गोरक्त का रूपान्तर है अतः जैसा रक्त वैसा ही दूध है फिर प्रकृति ने दूध को उन के बच्चों के निमित्त उतारा है। ऐसी दशा में दीन अवाचक शिशुओं का भाग स्वयं छीन लेना दया तथा न्याय के विरुद्ध है।

(उत्तर) जो कि हमारे कथन में गोरक्षा का सम्बन्ध किसी विशेष मत से नहीं है। प्रत्येक मनुष्य को स्वार्थ-सिद्धि के

निमित्त गोरक्षा करनी उचित है और वह स्वार्थ उन से घी दूध का प्राप्त करना है। यदि दुग्ध ही उन से न लिया गया तो फिर जो लाभ हमने गौओं से सिद्ध किये हैं वे सब व्यर्थ हो जावेंगे (मत सम्बन्धी गौ की आदर-प्रतिष्ठा केवल हिन्दुओं को ही मान्य है किन्तु इस स्थान में हमारा उपदेश मनुष्य मात्र को है) अतएव हम को अपने लाभों से प्रयोजन है, दूध की वास्तविक तथा प्राकृतिक दशा की खोज से नहीं है। इतना होने पर भी हम आप के भ्रम-निवारणार्थ उत्तर देने को प्रस्तुत होते हैं।

आप का यह कथन कि दुग्ध रक्त का रूपान्तर है किसी प्रकार भी सत्य नहीं है। इस कारण कि दुग्ध तथा घृत की अधिकता भिन्न २ खाद्य पदार्थों पर है। खल तथा चने का आटा दिया जावेगा तो दूध अधिक होगा और बिनौले खिलाये जावेंगे तो घृत की अधिकता होगी। यदि आप के विचारानुसार दुग्ध वास्तव में रक्त है तो ध्यान देने का स्थान है कि जिस गौ का आठ दस सेर दूध अर्थात् आप के कथनानुसार रक्त नित्य प्रति निकलता रहेगा तो क्या उसका जीवित रहना सम्भव है? कदापि नहीं। यदि कल्पना की जावे कि चारे आदि का नित्य प्रति रक्त बनता रहता है वही दूध बनता रहता है तो यह भी बुद्धि-विरुद्ध है कि प्रातःकाल दूध तथा आप के कथनानुसार रक्त निकाल लिया और फिर संध्या को ऐसा शीघ्र उस चारे का रक्त हो दुग्ध बन गया। देखिये वैद्यक शास्त्रानुसार अन्न से ५ दिन में रस और रस से ५ दिन में रक्त और रक्त से ५ दिन में मांस बनता है किन्तु दुग्ध उसी दिन बन जाता है। यदि आप की यह युक्ति थोड़ी देर को सत्य भी मान ली जावे तो हम पूछते हैं

कि यदि १० सेर दूध नित्य देने वाली गाय का हम २० दिन तक दुग्ध न निकालें और बराबर उस को रक्त तथा दुग्ध-वर्द्धक खल चारा आदि देते रहें तो क्या उस का दूध न निकालने से उस में ५ मन रक्त अथवा मांस बढ़ कर उस का शरीर पहले से ५५ मन भारी हो जावेगा ? किन्तु यह बात असम्भव है। हमारी बुद्धि में ऐसा करने से दुग्ध बिलकुल सूख जावेगा अर्थात् आप की विलक्षण बुद्धि के अनुसार उस में रक्त ही न रहेगा कि जिस का दूध बनता।

फिर यदि चारे दाने से ही दुग्ध या रक्त बनता है तो गर्भवती होने की दशा में रक्त का दुग्ध क्यों नहीं बन जाता ? क्या उस दशा में शरीर में रक्त रहता ही नहीं है ? हमारी बुद्धि में दुग्धवती गौ का दुग्ध न निकालना उस के कष्ट का कारण है। यदि दुग्ध रक्त का रूपान्तर होता तो उस का न निकालना उस के आनन्द का हेतु होता।

देखिये मनुष्यों के बालक कि जो अपनी माताओं का दूध पीते हैं यदि वह दूध रक्त होता तो वे मातायें शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जातीं क्योंकि खूनी बवासीर के रोग में दो चार तोले ही रक्त नित्य निकलने से रोगी का रंग पीला हो जाता है और उसी से मृत्यु के निकट पहुँच जाता है। अतः सिद्ध हुआ कि दुग्ध रक्त नहीं है और रूपान्तर में प्रथम वस्तु मुख्य मानी जावे तो वह रक्त अन्नादिक का रूपान्तर हो दुग्ध हुआ है इस से दूषित नहीं हो सकता। यदि दुग्ध को रूपान्तर रक्त का मान भी लेवें तो क्या अन्न के रूपान्तर विष्टा को आप अन्न जान ग्राह्य कर लेवेंगे या विष्टा व हड्डी आदि की खाद जो खेतों में डालने से अन्न में परिणत हो जाती है उस अन्न को आप विष्टा तथा हड्डी

का रूपान्तर जान अपवित्र समझ अखाद्य मानेंगे ? सुतराम् सिद्ध हो गया कि प्रत्येक वस्तु की वर्त्तमान दशा मानी जाती है रूपान्तर नहीं देखा जाता।

अब शेष रहा आप का यह कथन कि दूध बच्चे का हक़ है, यह सत्य है किन्तु यदि ब्याने से प्रथम अन्न न दिया जावे या दूध देने की दशा में दाना तथा खल की सानी न दी जावे तो दुग्ध कदापि नहीं बढ़ सक्ता। अतः उस बढ़े हुए दूध का कुछ भाग स्वामी भी लेलेवे तो कोई दोष नहीं है वरन ऐसी दशा में बढ़ा हुआ समस्त दुग्ध यदि बच्चा ही पीता रहे तो उस को अजीर्ण हो जावेगा और दस्त जारी हो जावेंगे। एक मास तक तीन चौथाई और फिर आधा दुग्ध यदि बच्चे को मिलता रहे तो अन्याय नहीं है। क्योंकि यदि बच्चे को समस्त दूध मिलता रहेगा तो वह चारा खाना कदापि न सीखेगा। इस से सिद्ध हो गया कि अपनी सेवा और दाने चारे से बढ़ाया हुआ दूध लेलेना कोई दोष की बात नहीं है। अतः ये दोनों आक्षेप आप के व्यर्थ हैं।

बैकुंठ का बीमा।

इस पुस्तक के अवलोकन से यह तो आप श्रीमानों पर स्पष्ट विदित ही हो गया होगा कि क्या सांसारिक और क्या पारलौकिक दोनों विचारों से मनुष्यों को गोमाता की सहायता की अत्यन्त ही आवश्यकता है और यहां तक कह देना भी कुछ अत्युक्त न होगा कि यदि गौ पृथ्वी पर न होवे तो ईश्वर की वर्त्तमान सृष्टि भी कदापि नहीं रह सकती।

अतः वर्त्तमानकाल के अंधाधुंध गोबध के बंद करने तथा गोवंश की वृद्धि की परमावश्यकता है। जितना ही इस में विलम्ब किया जावेगा उतना ही यह विषय फिर असाध्य

होता जावेगा। बिना गवर्नमैण्ट की सहायता के प्रथम हम लोगोंको अपनी शक्ति का व्यवहृत करना उचित है। जो मेरी अल्प बुद्धि में निम्नलिखित साधनों पर निर्भर है।

(१) साहसी अथवा धर्म्म प्रेमियों को अपना २ जीवन या अपनी आयु के वर्ष भर में कुछ दिवस इस धर्म्म-कार्य्य को समर्पण कर हमारे पृष्ठ के लेखानुसार पुरुषार्थ करना उचित है। अपने २ जिलों तथा सूबों में जहां उन की इच्छा हो गोरक्षा-कार्य्य तत्काल आरम्भ कर देवें विलम्ब करना उचित नहीं है क्योंकि एक २ दिवस की देरी में ७० हज़ार गाय बैल बध हो भारत से विदा हो रहे हैं। मैं इसी विचार से अपनी शेषायु गोरक्षार्थ देहली जिले में अर्पण करता हूं। अवकाश मिलने पर रोहतक आदि अन्य जिलों में भी भ्रमण करूंगा और यथाशक्ति समस्त भारत से गोबध बंद कराने का प्रयत्न करता रहूंगा। आशा है कि अन्य सज्जन भी मेरी भांति गोव्रत धारण कर अपने २ नामों से सूचित करें और लिखें कि किस जिले में वे धर्म्मार्थ गो-सेवा करना स्वीकार करते हैं ताकि उन की १ फहरिस्त बना ली जावे जिस से मालूम होता रहे कि किस २ जिले का प्रबन्ध हो गया और किस किस स्थान का शेष रहा।

(२) इन उपरोक्त अवैतनिक उपदेशकों तथा गोसेवकों की भांति दूसरे ऐसे सज्जनों की भी आवश्यकता है कि जो केवल अपने निर्वाहार्थ द्रव्य ले धर्म्म से इस गोव्रत में तत्पर हों सो ऐसे महाशयों को भी अपने २ शुभ नामों से हमें सूचित करना चाहिये तथा अपने निकट की गोशाला के आधीन हो गोरक्षार्थ भ्रमण कर मनुष्य जन्म सफल करना उचित है।

(३) प्रत्येक गोशाला के संचालक को उचित है कि नम्बर (२) कथित उपदेशकों को अपने २ यहां रख कर उन के कार्य्य का निरीक्षण करते रहें। जहां गौओं के चारे आदि में धन व्यय करते हैं वहां पन्द्रह बीस रुपये मासिक इस व्यय का भार भी अपने ऊपर लेवें क्योंकि मुख्य गोरक्षा यही है। इस के कारण गौओं का बधिकों के हाथ लगना बन्द हो कर गोजाति की उन्नति हो जावेगी और पूर्वकाल की भांति भारतवर्ष का प्रत्येक गृह गोशाला की उपाधि से विभूषित हो जावेगा।

(४) हमारे यहां के राजा महाराजाओं तथा सेठ साहूकारों को उचित है कि जहां और धर्म्म-कार्य्यों यथा मंदिर, देवालय, यूनीवर्सिटी तथा कालिज, अनाथालय या धर्म्म-शाला, अस्पताल एवम् मेमोरियल आदि में सहस्रों लक्षों रुपया देते हैं वहां गोशालाओं तथा गोहितकारिणी सभाओं को भी कि जो इन समस्त धर्म्म-कार्य्यों की शिरोमणि है याद कर लिया करें। नित्यप्रति हम लक्षों रुपये का दान उपरोक्त कार्य्यों में देना समाचार पत्रों में पढ़ते हैं किन्तु अनाथ अवाचक गोजातिओं के अर्थ दान देते हुए किसी दान-शूर का नाम नहीं सुना। मालूम होता है कि कदाचित् वे लोग राज्य का भय करते होंगे, किन्तु यह भय उन का व्यर्थ है। स्वयम् सरकार अब गोवंश की वृद्धि में दत्तचित्त हो रही है। इस से यदि आप लोग गोरक्षा में हमारे लेखानुसार सहायता करना अपना मुख्य कर्त्तव्य समझेंगे तो आप को अनाथालय तथा अस्पतालों के अधिक खोलने की आवश्यकता न होगी क्योंकि गोरक्षा के देशव्यापी होने से इस पुस्तक के द्वितीय अध्याय में वर्णित प्रमाणों के अनुसार

अन्नादि पदार्थ सस्ते हों ये नाना प्रकार के रोग लुप्तप्राय हो जावेंगे कि जिस से अकाल-मृत्यु बंद हो अनाथालयों तथा अस्पतालों की इतनी आवश्यकता न रहेगी।

अतएव यदि गोरक्षा की ओर ध्यान न दिया तो स्मरण रहे कि जब छोटी सी अवस्था में युवाओं का स्वर्गारोहण होता रहेगा तो उन यूनीवर्सिटियों तथा कालेजों को छात्र कहां से आवेंगे? या धर्म्मशालाओं में ठहरने वाले अतिथि कहां से प्राप्त होंगे? तथा गोवंश के नष्ट हो जाने से जब घृत दुग्ध का अभाव हो जावेगा तो देवालयों में देवताओं की आरती तथा भोग किन पदार्थों से करोगे?

अभी आप श्रीमानों के पास द्रव्य है आप को रुपये का आध सेर घी तथा चार सेर दूध लेते हुए कुछ कठिनता नहीं प्रतीत होती है। इसी से गौओं की न्यूनता की ओर ध्यान तक नहीं होता, किन्तु जब हमारे इस पुस्तक के सप्रमाण लेखानुसार कस्तूरी केशर के भाव घृत हो जावेगा तब कुंभकरण-वत् निद्रा भंग होगी और उस समय का सब उद्यम निष्फल होगा। यथा—संदीप्तभवनेतुकूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः अर्थात् घर में अग्नि लग जाने पर कूआ खोद अग्नि बुझाने का उद्यम करना व्यर्थ है। शोक का स्थल है कि हमारे यहां के धनाढ्य सहस्रों तथा लक्षों रुपया विवाहादि में अग्निक्रीड़ा, नृत्यादि द्वारा तथा मृतक कर्म्म में काज-नगर तथा जेवनार बखेर आदि में नष्ट कर देते हैं किन्तु गोमाता की रक्षार्थ कठिनता से दो चार रुपये देते होंगे। ऐसे ही हमारे यहां के नई रोशनी के लीडर तथा ग्रेजुएट महाशय गला फाड़ २ कर लेक्चर फटकारते और कालोनियल स्वत्व मिलने या कौन्सिलों की मेम्बरी के अर्थ तथा सोशल रिफार्म में कूद २

कर व्यर्थ बकवाद करते हैं किन्तु गौ अनाथ की ओर कि जिस के आधार पर भारत के सब सुख निर्भर हैं किंचित भी ध्यान नहीं देते । चाहे इस समय उनको राज्य सम्बन्ध तथा लक्ष्मी पात्र होने के कारण दस रुपये नित्य भोजन में देना (कि जैसा भोजन पूर्व काल में आठ आने में मिल सकता था) कुछ कठिन प्रतीत नहीं होता है, किन्तु जब गो वंश लोप हो जाने पर (कि जो प्रबन्ध न हुआ तो साठ वर्ष में अवश्य ही हो जावेगा) घृत दुग्ध के अभाव से मनुष्य बलहीन अस्थि-पिंजर मात्र रह जावेंगे तब कालोनियल स्वत्वों तथा कौन्सिल की मेम्बरी को कौन लेवेगा ? ऐसे धुआंधार धाराप्रवाह लेक्चर फटकारने वाले कहां से आवेंगे ? शरीर में शक्ति ही न रहेगी तो कांग्रेस पण्डाल में कौन बैठेगा ? हां कांग्रेस मंडप में कदाचित रिफार्मरों वा लीडरों के फोटो-ग्राफ द्वारा चित्रों के दर्शन हो सकेंगे या फोनोग्राफ द्वारा उन के चकित करने वाले लेक्चर अवश्य सुनाई पड़ सकेंगे । उस समय की आप लोगों की सन्तान कहेगी कि यह दृश्य उस समय का है कि जब रुपये का तीनपाव घृत मिलता था । हा ! वह समय भी अति विचित्र हृदय विदारक होगा । सो हम प्रथम से सचेत किये देते हैं कि सावधान हो कर भविष्य पर ध्यान दे सब कालिजों से प्रथम डेरी-फार्म, अस्पतालों से प्रथम वेटनरी अस्पताल तथा धर्मशालाओं और अनाथालयों से पहले गोशालाएं बनाओ, नहीं तो यहां संसार में दुःख के साथ जीवन व्यतीत कर मृत्यु पश्चात रौरवादि नरकों की सैर करोगे, और भावी प्रबल कह माथा पकड़ रोने से भी कुछ फल न पाओगे ।

(५) भारतवर्ष की समस्त हिन्दू जातियों को जो गो-प्रेमी हैं और जिन में आर्यसमाजी तथा सिक्ख आदि सभी

शामिल हैं उचित है कि यदि वे गौमाताओं से सच्चा प्रेम रखते होवें तो मांस मात्र को चाहे उन को अनुमति में उस का खाना शास्त्र-सम्मति ही होवे इस लेख के पढ़ते ही अपनी इन्द्रियों को कष्ट दे छोड़ देवें। इस में दो लाभ होंगे प्रथम तो जीवहिंसा महापाप से बचेंगे। दूसरे तुम्हारे मांस त्याग से मांस सस्ता होने की दशा में मुसलमान लोग गोमांस को निकृष्ट जान त्याग देवेंगे। शोक का विषय है कि विधर्मी मांसभक्षी जातियें तो मांस को हानिकारक जान त्याग करती जावें, और हिन्दू जैसी धर्मप्रेमी जाति उस के छोड़ने में हठ करे। इस से सज्जनो मांस में यदि कोई गुण तथा जिह्वा का स्वाद मात्र ही हो तो अपनी इन्द्रियों को वशवर्त्ती कर उस का गोहितार्थ परित्याग कर अक्षय धर्म के भागी हूजिये।

(६) जोकि हमने ग्राम २ घूम कर गवादि पशुओं के अपरचित मनुष्यों के हाथ बेचने तथा मेले मंडी आदि में न ले जाने के हस्ताक्षर कराने का संकल्प किया है किन्तु यह कार्य अकेले के करने से पूर्णता को प्राप्त नहीं हो सकता है। न सब मेरी भांति बिना वेतन कष्ट उठा इस कार्य्य को कर सकते हैं अतः तनख़ाहदार उपदेशक इस कार्य्य पर नियत करने की आवश्यकता होगी। जो बिना द्रव्य की सहायता के असम्भव है इस से आशा है कि श्रद्धानुसार मासिक तथा एकमुश्त द्रव्य की स्वयं सहायता कीजिये तथा अपने २ ग्रामों से चंदा कर हमारे पास मनीआर्डर द्वारा भेजते रहिये कि जिस से हम उस द्रव्य से पन्द्रह बीस रुपये मासिक के उपदेशक प्रति तहसील एक २ नियत कर इस शुभ कार्य्य को प्रारम्भ कर देवें और जो काम वे करेंगे उन की माहवार उन धन-दाताओं को सूचना देते रहेंगे कि जिस से उन को विदित

हो जावेगा कि हमारे इस द्रव्य से कितने गाय बैलों के प्राण बचे। यदि आप के पास चंदा मासिक दो एक उपदेशक के लायक हो जावे और आप स्वयं प्रबन्ध कर सकें तो हमारे पास उस द्रव्य के भेजने की आवश्यकता नहीं है। आप उस द्रव्य से उपदेशक नियत कर उचित जानो तो हम को भी उन के नाम तथा उस तहसील से कि जिस में वे काम करेंगे सूचित कीजिये कि जिस से हम उस को दर्ज रजिस्टर करलेवें और अवकाश मिलने पर उन के कार्य्य का भी निरीक्षण करते रहें या उस के सम्बन्ध में कुछ अनुमति दे सकें। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि जिस २ ज़िले में मेरे कथनानुसार सहायता मिलती रहेगी तो वहां थोड़े ही काल में समस्त गोवध नहीं तो आधे से अधिक अवश्य ही बंद हो जावेगा परन्तु श्रद्धा-वान् धनवान् सहायक होने चाहिये। आज कल के धनवान् धन का अपव्यय कर रहे हैं। आवश्यकीय धर्म्म कार्य्यों में लगाना लोक-रीति के विरुद्ध समझते हैं। ऐसे बहुत कम हैं कि जो गोरक्षा को परम धर्म्म मान इसी में अपना तन मन धन लगाना श्रेष्ठ जानते हैं। देखिये हमने अपने दौरे में एक दीनदारपुर नामी ग्राम में कि जो समस्त मुसलमानों का था गोरक्षा का उपदेश किया। हमारे व्याख्यान का उन के चित्त पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि सब ने विवाहादिक उत्सवों में १) रुपया और फसल कटने पर भारे से गौशाला की सहायता का वचन दिया और हमारे रजिस्टर पर हस्ताक्षर किये कि हम कभी अपने पशु वधिकों के हाथ न बेचेंगे। थोड़ा ही काल व्यतीत हुआ था कि एक मनुष्य ने वहां अपनी वृद्धा भैंस वधिक के हाथ ११) रु० में बेच दी। ग्राम के मुखियों ने पंचा-यत कर उस का कूये के ऊपर चढ़ना और जल भरना तथा

हुक्का आदि बन्द कर दिया। उस का प्रतिफल यह हुआ कि तीसरे दिन वह भैंस बधिकों के गृह से लौट आई। अब वहां के निवासी हमारे बड़े कृतज्ञ हैं। कहते हैं कि जिस दिन से हमने यह प्रण किया है, सुख की नींद सोते हैं। खेतों में दुगना अन्न चारा होने लग गया है।

(७) यह तो स्पष्ट विदित है कि विज्ञापनों और ट्रैक्टों के बांटने से जो लाभ हो सकते हैं वे बड़ी २ सभाओं के करने से भी नहीं प्राप्त हो सकते हैं। देख लीजिये ट्रैक्टों के प्रभाव से ही ईसाई पादरियों ने अपना धर्म करोड़ों मनुष्यों में फैला दिया अतः गोरक्षा-धर्म्म फैलाने को भी छोटे २ ट्रैक्ट मुफ़्त बांटने अत्यन्त लाभदायक होंगे, किन्तु बिना द्रव्य की सहायता के कि जो छपाई कागज़ आदि में व्यय होगा यह कार्य हो नहीं सकता। हम ने निश्चय कर लिया है कि यदि धर्मात्मा लोग हम को इस काम में सहायता देवें तो हम अंगरेजी में ऐसे युक्तिपूर्ण ट्रैक्ट छपवा लंदन नगर की गली २ और पार्लीमेंट तक में गोरक्षा का प्रश्न उपस्थित कर देवें। यदि वहां वालों के कोमल तथा न्यायपूर्ण चित्त में यह विषय जम गया तो गोवध बहुत शीघ्र बन्द हो जावेगा। जो धर्मात्मा धर्म्मभाव से इस में सहायक होंगे उन को सहस्रों गोजीव दान देने का पुण्य प्राप्त होने में सन्देह ही क्या है।

(८) शास्त्र का वचन है कि गवांग्रासः प्रदानेन स्वर्गलोके महीयते—अर्थात् गौ को ग्रासमात्र भोजन देने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है अतः चारे दाने आदि से गोशालाओं को अनाथ गौओं की सहायता कीजिये। अपनी आमदनी से प्रति सैकड़ा कुछ नियत कीजिये। ऐसी गोसेवा में सहायक होने वालों को वैकुंठ स्थान मिल ईश्वर का दर्शन लाभ होना कुछ कठिन नहीं है।

(९) जिन सेठ साहूकारों ने तीर्थ आदि पर धर्म्म-शाला बनवा यश लाभ किया है उन को उचित है कि जहां जहां गोशालाओं में गौओं को स्थान का कष्ट हो वहां २ उन के लिये स्थान बनवा देवें क्योंकि ब्रह्मपुराण का वचन है कि जो मनुष्य अनाथ गौओं के अर्थ स्थान बनवा देते हैं उन को बड़ा भारी पुण्य होता है। हमारे यहां क़सबा नजफगढ़ ज़िला देहली की गोशाला में स्थान की संकीर्णता से शीतकाल में जाड़े से और वर्षा काल में वर्षा से गोमाताओं को अत्यन्त कष्ट हो रहा है। पांच छः सहस्र की लागत से यह कष्ट दूर हो सकता है। सेठ साहूकारों के निकट यह कुछ कठिन कार्य नहीं है। आपने विश्वासपात्र गुमाश्ते को भेज स्थान दिखला लेवें फिर ठेके से या जैसे वे उचित जानें बनवा देवें या हम बनवा स्थानीय डिप्टी कमिश्नर का सार्टीफिकट भिजवा सकते हैं। या यह निवेदन किसी ऐसे दानशूर के कर्णगोचर न हो पावे तो यथाशक्ति एक २ कमरा बनवा देवें अथवा आप और अपने ग्रामवासियों से चंदा एकत्र कर भेज कर यश लीजिये, कुछ इसी स्थान में भेजने का निवेदन नहीं है। यदि आप के निकटवर्त्ती गोशाला में गौओं को कष्ट हो तो प्रथम वहां की सहायता कीजिये।

(१०) हमने अपने इन उपरोक्त निवेदनों में इतने दान दिखलाये हैं:—

(१) गोरक्षार्थ अपनी सम्पूर्ण आयु तथा आयु के कुछ दिवस समर्पण करना।

(२) तनख़ाह ले धर्म्म से गोवध के दूर करने के अर्थ भ्रमण कर उपदेश देना।

(३) उपदेशकों के निर्वाहार्थ धन से एक मुश्त तथा मासिक सहायता देना।

(४) गोशाला स्थान गोकष्ट निवारणार्थ बनवाना ।

(५) छोटी २ गोरक्षा सम्बन्धी पुस्तकों के छपवाने को धन की सहायता करना कि जिस से वे मुफ़ बांट कर गोरक्षा की आवश्यकता को देश में फैलाया जावे तथा कांग्रेस वा कोंसिल तथा पार्लिमैंसट के सभ्यों का इस ओर चित्त आकर्षित किया जावे ।

(६) गोशाला की अनाथ गौओं के लिये चारा दाना भेजना वा प्रबन्ध करना इन छः धर्म-कार्यों में जो २ सज्जन सहायता करेंगे या दूसरों को सहायतार्थ शिक्षा देंगे उन के कल्पभर वैकुंठवास होने में सन्देह ही क्या है ? विश्वास के लिये शास्त्रों के प्रमाण इसी पुस्तक में देख लीजिये, किन्तु इतना हम और कहे देते हैं कि बहुधा धूर्त्त लोग भी सुना जाता है कि गोरक्षा के नाम से धन ले पाप बटोर रहे हैं । इस से सावधान हो द्रव्य दीजिये या सीधा मनीआर्डर द्वारा जहां विश्वास होवे धन भेजिये और अपना निश्चय कर लीजिये कि जो धन भेजा गया है वह उसी कार्य्य में लगा है या नहीं ।

हमारे यहां जो द्रव्य सहायतार्थ आवेगा, उस की रसीद उसी मद्द की दी जावेगी और सालाना रिपोर्ट में उस के आय व्यय का लेखा प्रत्येक धनदाता के पास छपा हुआ भेजे जाने का नियम है ।

यहां गौओं की सच्चे प्रेम से सेवा की जाती है। उसी सेवा का प्रतिफल है कि प्लेग से यह क़सबा आज तक बचा हुआ है । बाहर से जो प्लेग-पीड़ित आये उन में से अवश्य कुछ मरे किन्तु नगर-निवासियों में कभी भी नहीं फैला ।

(११) यदि कोई बाहर के महाशय इस (भारत-पशु-वर्द्धक एवं गोकष्टनिवारक) ऐसोसिएशन के सभ्य तथा संरक्षक बनना चाहें वे कृपया अपने नामों से सूचित करें ताकि इस महान् कठिन कार्य्य में उन की अनुमति लीजा कर कार्य किया जाया करे क्योंकि यहां के सभ्यों में से किसी से वाणीमात्र की भी सहायता नहीं मिलती है।

(१२) जैसे बहुधा शिक्षित महाशय लंदन आदि वलायती नगरों में कांग्रेस तथा धर्म्मविषय का आन्दोलन करने जाते हैं। यदि कोई धर्म्मप्रेमी व्याख्यान दे गोबध की हानियों को वहां वालों के सामने पेश करें तथा भविष्यत् में इस से जो परिणाम होगा उस को दिखलावें तो पूर्ण आशा कि गोबध के बंद कराने में वहां वाले कटिबद्ध हो जावें। ऐसे श्रद्धालुओं का यश भूमण्डल में व्याप्त हो कल्पान्त तक वह वैकुंठवासी रहेगा और इस आवागमन के कष्ट से मुक्त हो ईश्वर में लीन हो जावेगा। अतः यही हमारा लेख वैकुंठ का बीमा है। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

रामरक्षपाल शर्म्मा

औनरेरी मैनेजर गोशाला नजफगढ़ ज़िला देहली
तथा सेक्रेटरी भारत पशुवर्द्धिनी व भारत गोकष्टनिवारिणी सभा
फाल्गुण कृष्णा २ संवत् १९६७ विक्रमी।

शुद्धि-पत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	१	स्त्रा	स्त्री
५	१४	प्रत्येक मल	प्रत्येक जन
८	१७	रोग	रोगी
८	१७	कभी ही	कभी भी
८	१८	पड़नी	न पड़नी
१०	६	समझते	समझतीं
१०	१२	रहा	रहा है
१६	२४	भाग	अध्याय
२२	२	वृक्षों के	वृक्षों की
२२	२३	हनि	हानि
२४	१८	बारह	बाहर
२८	२२	गायों को	गायों की
२९	१२	चाहे मन	मन
३१	१६	पूरा	पूर्ण
३२	१७	आजकल	आकलह
३२	२६	सजन	सूजन
३३	३	सिफ़ा	शिफ़ा
३४	१५	कहदेश	कहकर
३९	१०	सकता है	सकती है
४९	४	रिहत	रहित
४९	१९	की वस्त्र	का वस्त्र
४९	२०	सकेगी	सकेगा
४९	२०	करते हा	करते हो
५४	१०	देगी की	देने की

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५७	१३	भेज देवें	बेच देवें
५८	१४	भोजन को	भोजन के
६१	२६	फट	फूट
६८	२३	प्रत	प्रति
६८	२४	सहस्त्रां	सहस्त्रों
६९	११	दावरे	केदावर
७१	१८	छआ	लुआ
७३	३	भख	भूख
७८	२०	झटके	झटके के
८०	१	सा. बी.	सी. बी
८२	१३	ओ में	में जो
८२	१९	ज़ियाब	ज़ियाई
८३	७	पृष्ठ को	पृष्ठ १४८ को
८६	४	निर्भय	निर्भय हो
८७	१७	पुरुष	पुरुष
९०	२६	साध	साधु
९१	२०	स्वागर	सागर
९३	१९	भैंसे	भैंसें
९५	३	में	में १०४
९५	४	से पृष्ठ	से १२८ पृष्ठ
९८	२४	कानों में इस	इस
९९	२१	अनुसार	अनुसार है अर्थात्
१०२	१४	न ता	न तो
१०४	११	परन्तु	इस में
१०४	१४	महर्षि	महर्षि गण

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०५	७	सहस्त्रर्जुन	सहस्त्रार्जुन
१०५	१९	गहाबली	महाबली
१०६	१०	ता	तो
१०७	९	नहीं ता	नहीं तो
१०७	१७	सेवा गें	सेवा में
१०८	१६	वरंतीं	वरंतीं
११०	३	बेन	बैल
,,	६	बैल के	बैल को
११२	२६	जन	जान
११६	७	सरीके	सरीखे
११८	२६	जगत के	जगत से
११९	१	सी जगह	ही सहज
,,	१४	गहा	महा
१२०	११	पुराणो	पुराणे
,,	१२	मवः	मठः
१२१	३	पुष्णांति	पुष्णांति
१२२	१	धम्म	धर्म्म
,,	२१	ब्राह्म	ब्रह्म
१२६	२५	के न होने	न होने
१२७	१९	तब	तक
१२९	१३	पृष्ठ	पृष्ठ २०
,,	१४	पृष्ठ	पृष्ठ ८२
१३०	१७	रुपिया	रुपया
,,	१८	रुपिया	रुपया
,,	२५	अन्न	अन्य

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३४	८	फैलाने	फैलाने के
१३५	१३	काई	कोई
१३७	२	अध्याया	अध्याय
१५१	१२	भेंस	भैंस
१५४	२६	या	यार
१६०	१९	नगवार	नागवार
१६०	२१	बहतर	बेहतर
१६१	२	हुजिये	हूजिये
१६४	३	राफ	एफ़
१६६	२२	चरने	चलने
१६८	०	१८८	१६८ सफा गलत है
१६९	अंत	खाद्	खार
१७२	२५	अधिकता	अधिक
१७५	२१	षष्ठ	षष्ठम्
१७६	२	पृष्ठ	पृष्ठ ८५
१७६	२६	बद्धा	वृद्धा

(इस से आगे आवरणपत्र के पृष्ठ ३ पर देखो)